कोरोना महामारी
महा-षड़यंत्र

मानवता के इतिहास का सबसे बड़ा कांड

Corona Pandemic Scandal

The Biggest Scam in the History of Mankind

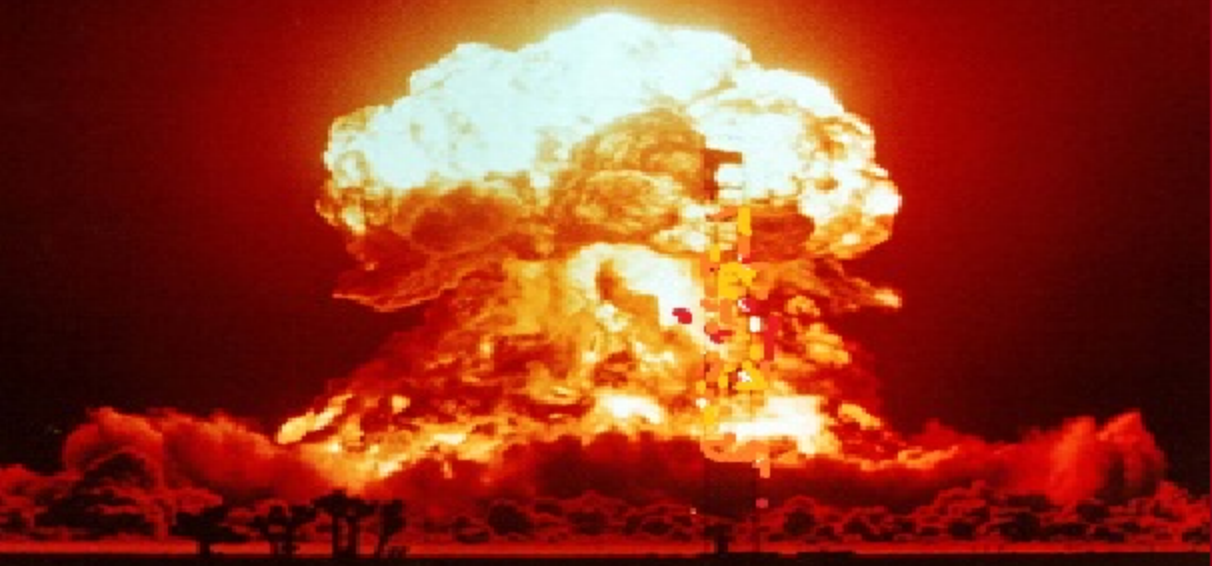

डॉ तरुण कोठारी

कोरोना महामारी

महा-षड़यंत्र

:

मानवता के इतिहास का सबसे बड़ा कांड

Corona Pandemic Scandal

:

The Biggest Scam in the History of Mankind

पुस्तक परिचय

यह पुस्तक बिल्कुल नए अंदाज में लिखी गई है। यह एक अनूठी शैली है जहां पुस्तक में कोई अध्याय नहीं है। यह चर्चा शैली में लिखा गया है। यह एक बेटे और पिता के बीच एक प्रकार की काल्पनिक चर्चा है। मैंने एक पिता और उसके अति जिज्ञासु पुत्र के बीच एक प्रश्न-उत्तर सत्र के रूप में विस्तार से समझाने की कोशिश की है जिसमें पुत्र एक-एक करके समय-समय पर और बार-बार संबंधित क्षेत्रों से प्रश्न पूछ रहा है- महामारी, महामारी के पीछे का असली कारण और अंत में षड़यंत्र में शामिल होने वालों व्यक्तिओ या संस्थानों के बारे में। पाठक इस चर्चा को डॉ. तरुण कोठारी और उनके बेटे दिव्यम कोठारी के बीच मान सकते हैं।

इस पुस्तक के लेखक डॉ. तरुण कोठारी ने वास्तविक तथ्यों, नंगी वास्तविकता और कोरोना या कॉविड-19 नामक महामारी के बारे में विस्तार से बताने की कोशिश की। जैसा कि बताया गया है कि कोरोना रोग दुनिया भर में फैल गया है और यहाँ हो गया है, वहाँ हो गया है, मौतों की बड़ी संख्या हो गई है, वगेराह-वगेराह, जिसके लिए लेखक ने क्रमिक पृष्ठों में हर संभव संदेह और सवालों का स्पष्टीकरण दिया है । पुस्तक कई शोध पत्रों और वैज्ञानिक तथ्यों को ध्यान में रखते हुए सब कुछ स्पष्ट करने की कोशिश करती

है; धीरे-धीरे इस बात को साबित करने के लिए कि कोरोना वायरस महामारी नहीं है, बल्कि एक साधारण फ्लू वायरस है जिसने सभ्यता की शुरुआत से मानव जाति को कई बार संक्रमित किया है।

वर्तमान समय में हर कोई भ्रमित है। कोरोना को लेकर हर किसी के मन में कई सवाल हैं। इन प्रश्नों का उत्तर वैज्ञानिक और तार्किक रूप से दिया जाना आवश्यक है। लेखक ने प्रत्येक प्रश्न का उचित और वैज्ञानिक स्पष्टीकरण देने का प्रयास किया।

लेखक परिचय

डॉ. तरुण कोठारी इस पुस्तक के लेखक हैं। मेरे पास एमबीबीएस और एमडी की योग्यता है। मैं रेडियोलॉजिस्ट हूं। मैंने पिछले बीस वर्षों से एक डॉक्टर के रूप में काम किया है। इसके अलावा मैं चिकित्सा-निदान क्षेत्र में विशेषज्ञ हूं। मैंने कई एमबीबीएस और स्नातकोत्तर छात्रों को रेडियो-निदान के उन्नत स्तर की शिक्षा दी है।

मुझे शुरू से ही लोगों को एक ईमानदार जीवन जीने के लिए प्रेरित करना पसंद था। मैं शारीरिक स्वास्थ्य और आध्यात्मिक स्थिति के उत्थान के लिए कई प्रकार के योग, प्राणायाम और क्रियाओं का अभ्यास करता हूं।

मैंने यह पुस्तक इसलिए लिखी ताकि इस नकली कोरोना महामारी के बारे में आम लोगों को शिक्षित किया जा सके। बहुत ही साहस और निस्संदेह स्पष्ठता के साथ मैंने फार्मा कंपनी, डब्ल्यूएचओ, सीडीसी, बैंकिंग और मीडिया के बारे में कोरोना सच्चाई को उजागर करने की कोशिश की। पुस्तक वैज्ञानिक रूप से बताती है कि क्यों वर्तमान कॉविड महामारी एक नकली महामारी है।

!!!

दिव्यम (1): - वायरस क्या है?

मैं: वायरस एक बहुत छोटा संक्रामक पार्टिकुलेट बॉडी है जो कि आरएनए या डीएनए जीनोम से बना होता है। यह डबल-स्ट्रेन्डेड या एकल-स्ट्रेन्डेड हो सकता है। यह आनुवंशिक सामग्री एक प्रोटीन आवरण में संलग्न है, जिसे सेल कहा जाता है।

वायरस अपने आप प्रजनन करने में सक्षम नहीं है। यह केवल एक सेल में प्रवेश करके और अपने सेलुलर मशीनरी और तंत्र का उपयोग करके अधिक वायरस बना सकता है।

जब एक वायरस एक मेजबान कोशिका को संक्रमित करता है, तो वह अपने प्रोटीन कवरिंग कोट को हटा देता है और मेजबान सेल में आनुवंशिक सामग्री को प्रविष्ट करा देता है। फिर यह मेजबान की कोशिका मशीनरी को निर्देश देता है कि वह अपने डीएनए या आरएनए का अनुवाद करे, विकसित करे और अपनी आनुवंशिक सामग्री का उत्पादन करे। इस तरह उन्होंने होस्ट सेल और उसके आनुवांशिक तंत्र की मशीनरी को हाईजैक कर लिया और होस्ट के सेल्युलर मशीनरी का उपयोग अपने घटकों के उत्पादन में या हजारों वायरल सामग्री के उत्पादन में किया। जब इस तरह के वायरस कणों की बड़ी मात्रा में उत्पादन किया जाता है तो यह मेजबान सेल फट सकती है और इस तरह से वायरस मेजबान सेल को मार सकता है।

फिर नए वायरस और दूसरे होस्ट सेल को संक्रमित करते हैं; एकल या एकाधिक और फिर वे और अधिक मेजबान कोशिकाओं को संक्रमित करते हैं और इस तरह से उन्हें मार सकते हैं। इस तरह वायरस मेजबान सेल में खुद को पैदा करते हैं, जबकि दूसरी ओर वे होस्ट कोशिकाओं के लिए हानिकारक होते हैं। वायरस संख्या में असंख्य हैं।

दिव्यम (2): - असंख्य! क्या हम वायरस की संख्या गिन सकते हैं?

मैं: नहीं, हम उन्हें गिन नहीं सकते। लेकिन कुछ वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया कि संख्या लगभग 10 शक्ति 31 है। यह 10^{31} कितना बड़ा है? वैज्ञानिक अनुमान लगाते हैं कि आकाश में कुल तारे 10^{21} हैं। इसलिए विषाणुओं की संख्या, सितारों की संख्या से 10,000 करोड़ गुना (100 बिलियन गुना) है।

अब मैं आपको वायरस के प्रकारों के बारे में बताऊंगा। अलग-अलग वैज्ञानिकों ने अलग-अलग आंकड़े दिए हैं। उनका अनुमान 1,00,000 प्रकार से 1 करोड़ प्रकार (100 हजारों से 10 मिलियन प्रकार) तक है। पृथ्वी पर, मनुष्यों से पहले, जानवरों से पहले, पौधों से पहले भी, पानी के जीवों से भी पहले, विषाणु पृथ्वी पर हैं। वायरस मनुष्यों की तुलना में काफी अलग संरचना है।

दिव्यम (3): - वायरस की संरचना क्या है?

मैं: वायरस विभिन्न आकारों और आकारों में आते हैं। वे अपने विशेष लक्ष्य सेल पर हमला करने में माहिर हैं। सभी वायरस के दो प्रमुख घटक वायरल आनुवंशिक सामग्री और इसके सुरक्षात्मक प्रोटीन कोट को कवर करते हैं, जिसे कैप्सिड के रूप में जाना जाता है।

वायरल जीनोम सिंगल या डबल स्ट्रैंडेड आरएनए या सिंगल या डबल स्ट्रैंडेड डीएनए से बना होता है। उनके पास एक फॉस्फोलिपिड लिफाफा होता है जो आम तौर पर पहले से संक्रमित मेजबान कोशिकाओं के झिल्ली से निकलता है। कभी-कभी उनके पास सतह प्रोटीन होते हैं। वे लगभग सभी प्रकार की कोशिकाओं को संक्रमित कर सकते हैं।

दिव्यम (4): - वायरस का संक्रमण कैसे होता है?

मैं: वायरल जीवन चक्र को निम्नलिखित पांच चरणों में विभाजित किया जा सकता है: 1. लगाव, 2. प्रविष्टि, 3. प्रतिकृति, 4. असेंबली, और 5. रिलीज़। वायरस की सतह पर मौजूद प्रोटीन, मेजबान कोशिकाओं पर विशिष्ट रिसेप्टर्स को पहचानने में मदद करता है।

कुछ वायरस मेजबान सेल रिसेप्टर्स को बांधने के लिए इन सतह प्रोटीन का उपयोग करते हैं। फिर वे आंतरिककरण (एंडोसाइटोसिस) नामक एक प्रक्रिया शुरू करते हैं। लिफाफा-लेपित

वायरस मेजबान सेल झिल्ली के साथ सीधे फ्यूज भी कर सकते हैं।

कुछ बैक्टीरियोफेज सेल में प्रवेश नहीं करते हैं। वे अपने जीनोम को मेजबान कोशिका में इंजेक्ट करते हैं। सेल के अंदर पहुंचने के बाद, वायरल जीनोम अपने जीनोम को स्थानांतरित करने और अनुवाद करने के लिए मेजबान सेल के जीनोमिक मशीनरी को नियंत्रित करता है। वे संतान बनाने के लिए वायरल जीनोम में वायरल जीनोम की नई प्रतियों को पैकेज करने के लिए होस्ट सेल पैकेजिंग विधि को निर्देशित करते हैं।

वायरल संक्रमण चक्र को या तो लिटिक (Lytic) या लाइसोजेनिक (Lysogenic) के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। लिटिक चक्र में, नए वायरस की उत्पत्ति मेजबान कोशिका से निकल जाती है और जिससे मेजबान कोशिका की मृत्यु हो जाती है। लाइसोजेनिक चक्र में, वायरल डीएनए या आरएनए को मेजबान जीनोम में शामिल किया जाता है, जहां यह निष्क्रिय रहता है और प्रत्येक बार मेजबान सेल की प्रतिकृति के साथ कॉपी किया जाता है।

दिव्यम (5): - क्या वायरस मनुष्यों के अलावा अन्य को संक्रमित कर सकता है?

मैं: हाँ, वे कर सकते हैं। वायरस किसी भी प्रकार के सेल को संक्रमित कर सकते हैं: बैक्टीरिया, पौधे और जानवर।

वायरस जो बैक्टीरिया को लक्षित करते हैं, उन्हें बैक्टीरियोफेज कहा जाता है।

वायरस 19 वीं सदी में पहली बार खोजे गए थे। तंबाकू संयंत्र आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण संयंत्र था। तंबाकू के पौधे को एक अज्ञात बीमारी से संक्रमित पाया गया था, जिसकी जांच की गई और बाद में 'तंबाकू मोज़ेक वायरस' के रूप में पहचाना और नाम दिया गया। पशु वायरस का पशु चिकित्सा अनुसंधान और चिकित्सा अनुसंधान दोनों में बहुत महत्व है।

इसके अलावा, वायरस कई मानव रोगों का कारण होते हैं, सामान्य सर्दी, चिकनपॉक्स और दाद से लेकर, पीले बुखार, हेपेटाइटिस और चेचक जैसे खतरनाक संक्रमणों तक। वे डीएनए वायरस या आरएनए वायरस हो सकते हैं।

दिव्यम (6): - कौन से वायरस डीएनए वायरस हैं?

मैं: एक डीएनए वायरस एक वायरस है जिसमें इसकी आनुवंशिक सामग्री के रूप में डीएनए होता है। डीऑक्सीराइबो न्यूक्लिक एसिड डीएनए वायरस के कुछ उदाहरण CMV, HSV, VZV, EBV और मानव पेपिलोमावायरस (HPV) हैं। हेपेटाइटिस बी एक और छोटा डीएनए वायरस है जो यकृत को संक्रमित करता है, जो हेपेटाइटिस का कारण बनता है, और यकृत कैंसर से जुड़ा होता है। एडीनोवायरस, हर्पीस वायरस और पॉक्सोवायरस डीएनए वायरस के

और उदाहरण हैं जो मनुष्यों को संक्रमित करते हैं। एडीनोवायरस मुख्य रूप से मनुष्यों में गैस्ट्रोएंटेराइटिस और सांस की बीमारी का कारण बनता है। डीएनए वायरस की तरह आपके पास आरएनए वायरस भी है।

दिव्यम (7): - कौन-कौन से वायरस आरएनए वायरस हैं?

मैं: RNA वायरस एक वायरस है, जिसकी आनुवंशिक सामग्री में RNA होता है। एक आरएनए वायरस एक वायरस है जिसमें इसकी आनुवंशिक सामग्री के रूप में आरएनए होता है। राइबोन्यूक्लिक एसिड यह न्यूक्लिक एसिड आमतौर पर सिंगल-स्ट्रेन्डेड हुए आरएनए (ssRNA) होता है, लेकिन डबल-स्ट्रेन्डेड हुए आरएनए (dRNA) हो सकता है। RNA वायरस के कारण होने वाले मानव रोगों के कुछ उदाहरणों में सामान्य सर्दी, इन्फ्लूएंजा, SARS, कोवीड19, रेबीज, पोलियो, खसरा वायरस आदि शामिल हैं।

दिव्यम (8): - मुझे वायरस के कुछ और उदाहरण दीजिए।

मैं: मैं अब आपको वायरस के कुछ और उदाहरण बताता हूँ -

- **कोरिज़ा - राइनोवायरस,**
- **कॉक्ससेकी - कॉक्ससैकी वायरस**
- **इबोला वायरस**
- **मारबर्ग वायरस**

- **डेंगू वायरस एक फ्लेविवायरस है, और यह चार प्रकारों में टाइप 1, 2, 3 और 4 के रूप में नामित है, जो डेंगू के क्लासिक और रक्तस्रावी दोनों रूपों का कारण बनता है।**
- **ईबी (EB) वायरस; एपस्टीन बर वायरस, एक हर्पीस वायरस है जो संक्रामक मोनोन्यूक्लिओसिस का कारण बनता है जो बर्किट्स लिंफोमा और नासोफेरींजल कार्सिनोमा (कैंसर) से जुड़ा होता है।**
- **आंतों का वायरस - एंटरोवायरस।**
- **हेपेटाइटिस वायरस एक वायरस है जो मुख्य रूप से यकृत को प्रभावित करता है।**

- **हेपेटाइटिस ए वायरस (HBA) यकृत संक्रमण का कारण हेपेटाइटिस-ए है।**
- **हेपेटाइटिस बी वायरस (HBV)यकृत संक्रमण का कारण हेपेटाइटिस-बी है।**
- **हेपेटाइटिस सी वायरस(HBC)यकृत संक्रमण का कारण हेपेटाइटिस-सी है।**
- **हेपेटाइटिस डी वायरस (HDV)यकृत संक्रमण का कारण हेपेटाइटिस-डी है।**
- **हेपेटाइटिस ई वायरस (HEV) यकृत संक्रमण का कारण हेपेटाइटिस-ई है।**
- **हेपेटाइटिस जी वायरस(HGV)यकृत संक्रमण का कारण हेपेटाइटिस-जी है।**

- **हरपीज वायरस 'हरपीज' का कारण बनता है।**
- **मानव इम्युनोडेफिशिएंसी वायरस (एचआईवी) एड्स से जुड़ा हुआ है।**
- **इन्फ्लुएंजा वायरस - वायरस का एक समूह है जो इन्फ्लूएंजा का कारण बनता है। वे कम से कम तीन सेरोटाइप या प्रजाति A, B, और C हैं।**
- **खसरा वायरस खसरे का कारण है।**
- **कण्ठमाला वायरस - मम्प्स (Mumps) का कारण है।**
- **पेरा-इन्फ्लुएंजा (Para-influenza) वायरस ऊपरी श्वसन पथ का कारण है**
- **इन्फ्लूएंजा वायरस जैसे रोग (ILI- Influenza Like Illness)।**
- **पोलियो-माइलाइटिस वायरस पोलियो का कारण है।**
- **रेबीज वायरस रैबीज का कारण है।**
- **रेस्पिरेटरी सीनसीसियल वायरस (आरएसवी RSV) श्वसन पथ के संक्रमण का कारण है। यह ILI का हिस्सा है - इन्फ्लुएंजा लाइक इलनेस।**
- **रूबेला वायरस रूबेला का प्रेरक एजेंट है।**
- **वेस्ट नाइल वायरस अफ्रीका में एन्सेफलाइटिस का कारण है।**

दिव्यम (9): क्या वायरस हमेशा संक्रामक होते हैं?

मैं: सभी वायरल रोग संक्रामक नहीं होते हैं। इसका मतलब है कि सभी वायरस हमेशा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में नहीं फैलते हैं। लेकिन उनमें से कई संक्रामक हैं।

संक्रामक वायरल रोगों के सामान्य उदाहरण फ्लू, सामान्य सर्दी, एचआईवी और दाद हैं। अन्य प्रकार के वायरल रोग अन्य माध्यमों से फैलते हैं जैसे कि पहले से संक्रमित कीट का काटने से। श्वसन तंत्र के वायरल रोग आमतौर पर छोटी बूंद के संक्रमण द्वारा व्यक्ति से व्यक्ति में फैलते हैं।

दिव्यम (10): - श्वसन संबंधी वायरल रोग क्या हैं?

मैं: श्वसन संबंधी वायरल रोग संक्रामक हैं और आमतौर पर आपके श्वसन पथ के ऊपरी या निचले हिस्सों को प्रभावित करते हैं। एक श्वसन वायरल बीमारी के सामान्य लक्षण हैं:

- **बहती या भरी हुई नाक**
- **खांसना या छींकना**
- **शरीर में दर्द**
- **बुखार**

दिव्यम (11): - श्वसन रोगों के सामान्य उदाहरण क्या हैं?

मैं: सामान्य उदाहरण इस प्रकार हैं:

- **फ्लू या इन्फ्लूएंजा वायरस संक्रमण**

• सामान्य जुकाम

• रेस्पिरेटरी सीनसीसियल वायरस संक्रमण

• एडीनोवायरस संक्रमण

• पैरा-इन्फ्लूएंजा वायरस संक्रमण

• गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम (SARS - Severe Acute Respiratory Syndrome)

• मध्य पूर्व श्वसन सिंड्रोम (MERS – Middle East Respiratory Syndrome)

• कोरोनावाइरस

दिव्यम (12): - ये श्वसन सम्बंधित वायरल रोग कैसे प्रसारित होते हैं?

मैं: श्वसन सम्बंधित वायरस खांसी या छींकने के माध्यम से उत्पन्न बूंदों से फैलते हैं। यदि कोई वायरल बीमारी वाला व्यक्ति, आपके आस-पास खांसता या छींकता है और आप इन बूंदों को श्वास के दौरान खींचते हैं, तो आपको यह बीमारी हो सकती है।

ये वायरस दूषित वस्तुओं के माध्यम से भी फैल सकते हैं, जैसे कि दरवाजा घुंडी, दरवाजे की घंटी, टेबल टॉप, मोबाइल, घड़ी, व्यक्तिगत आइटम आदि। यदि आप ऐसी वस्तु को छूते हैं और

फिर आप अपनी नाक या आंखों को छूते हैं तो आपको बीमारी हो सकती हैं।

दिव्यम (13): - श्वसन वायरल रोग का सामान्य उपचार क्या है?

मैं: श्वसन संबंधी वायरल बीमारियां आमतौर पर अपने आप ठीक हो जाती हैं। आम तौर पर उन्हें किसी भी उपचार की आवश्यकता नहीं होती है। केवल आपकी प्रतिरक्षा बढ़ाना ही पर्याप्त है। पर्याप्त धूप और ताजी हवा लें। शरीर में विटामिन-सी के स्तर को बढ़ाने के लिए खट्टे फल लें। विटामिन-डी के लिए सूर्य के प्रकाश में प्रतिदिन कुछ देर रहना ही पर्याप्त है।

लेकिन कुछ दवाएं आमतौर पर चिकित्सा दुकानों पर उपलब्ध होती हैं- नाक की सड़न रोकनेवाली दवाएँ, कफ सप्रेसेंट, दर्द निवारक, एंटी-पायरेटिक और एंटी-इंफ्लेमेटरी; ये लक्षणों को कम करने में मदद कर सकते हैं। कई वायरस श्वसन पथ के संक्रमण का कारण बनते हैं। कोरोना वायरस भी वायरस में से एक है जो श्वसन पथ के संक्रमण का कारण बनता है।

दिव्यम (14): - कोरोना वायरस क्या है?

मैं: कोरोना वायरस, आरएनए वायरस का एक समूह है जो स्तनधारियों और पक्षियों और कुछ मनुष्यों में बीमारियों का कारण बनता है। मनुष्यों में, ये वायरस आमतौर पर श्वसन पथ के हल्के संक्रमण का कारण बनते हैं। बहुत कम मामलो में, वे मध्यम

संक्रमण का कारण बनते हैं और शायद ही कभी गंभीर होते हैं। हल्के बीमारियों में सामान्य सर्दी के कुछ मामले शामिल हैं, जबकि गंभीर किस्मों में सार्स (SARS) और मर्स (MERS) हो सकते हैं।

कोरोना वायरस किसी भी इन्फ्लूएंजा वायरस की तरह होता है और जिस बीमारी का कारण बनता है उसे कोरोना वायरस रोग कहा जाता है। इसे आई-एल-आई (ILI) में रखा जा सकता है- आई-एल-आई यानी इन्फ्लुएंजा लाइक इलनेस ग्रुप क्योंकि यह इन्फ्लुएंजा की कई विशेषताएं साझा करता है। इसकी मृत्यु दर लगभग 0.1% है। कोरोना वायरस श्वसन पथ पर हमला करता है। सामान्य लक्षणों में बुखार, खांसी, कमजोरी, स्वाद में बदलाव और सांस की तकलीफ शामिल हैं। यह एक एकल आरएनए वायरस है। नवीनतम तथाकथित महामारी को कोरोना वायरस के एक प्रकार के कारण कहा जाता है जिसे नावेल कोरोना वायरस कहा रहा है।

दिव्यम (15): - कोरोना वायरस के संक्रमण का सामान्य स्थान क्या है?

मैं: कोरोनोवायरस एक प्रकार का सामान्य वायरस है जो आपकी नाक को संक्रमित कर सकता है और फिर साइनस या ऊपरी गले में और शायद ही कभी फेफड़े में जाता है। वे आम सर्दी की तरह कम या ज्यादा होते हैं इसलिए आम सर्दी के वायरस की तरह फैल सकते हैं। लगभग हम सभी को एक साल में कई बार एक

सामान्य सर्दी का संक्रमण हो ही जाता है। आप अपने जीवन में कम से कम एक बार कोरोनोवायरस संक्रमण प्राप्त करते ही हैं, एक छोटे बच्चे के रूप में सबसे अधिक संभावना है।

दिव्यम (16): - इन्हें क्यों कोरोना नाम दिया गया है?

मैं: उनकी यह विशेषता है कि उनकी सतह से क्लब आकार के स्पाइक्स होते हैं, जो इलेक्ट्रॉन माइक्रोग्राफ में 'सौर कोरोना' के समान एक छवि बनाते हैं, या ताज जैसा कुछ होता है, इसलिए उनका नाम कोरोना है।

दिव्यम (17): - कोरोना वायरस कितने पुराने हैं?

मैं: 1960 के दशक में मानव द्वारा कोरोनो वायरस की खोज की गई। वे यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका में दो अलग-अलग तरीकों का उपयोग करके अलग-थलग रिसर्च कर रहे थे। 1960 में जब ई. सी. केंडाल, मेलकॉम बायोन और डेविड टायरेल ब्रिटिश मेडिकल रिसर्च काउंसिल की कॉमन कोल्ड यूनिट में काम कर रहे थे।

सभी कोरोनोवायरस के सबसे सामान्य पूर्वजों के बारे में अनुमान है कि 55 मिलियन वर्ष या उससे अधिक समय से यहां इस पृथ्वी पर उपस्थित थे।

कोरोनावायरस बड़े, मोटे तौर पर गोलाकार, बल्बनुमा, सतह पे कणों वाले होते हैं। वायरस के कणों का औसत व्यास लगभग 100 एनएम है। हालिया कथित महामारी को नावेल कोरोना वायरस के कारण कहा जाता है।

दिव्यम (18): - क्या नावेल कोरोना वायरस एक खतरनाक वायरस है?

मैं: अधिकांश कोरोना वायरस खतरनाक नहीं हैं, लेकिन कुछ ऐसे हो सकते हैं । मध्य पूर्व श्वसन सिंड्रोम (मर्स - MERS) या गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम (सार्स - SARS) वाले कोरोना वायरस कुछ व्यक्तियों के लिए खतरनाक हो सकते हैं। यहां तक कि वो भी सभी संक्रमित व्यक्तिओ के लिए खतरनाक नहीं हैं।

सामान्य कोरोना वायरस या नावेल कोरोना वायरस, एक खतरनाक वायरस नहीं है। क्षय रोग, कोरोना वायरस या नावेल कोरोना वायरस की तुलना में अधिक खतरनाक बीमारी है। टीबी सालाना 15,00,000 लोगों को मारता है। हेपेटाइटिस भी 14,00,000 लोगों की सालाना मारता है।

कोरोना या नावेल कोरोना, एक बहुत ही हल्का रोग है। गंभीर नहीं है। मीडिया इस मुद्दे को नहीं उठा रहा है; संभवतः उन्हें एक मामूली बीमारी के बजाय कोरोना के मुद्दे को एक खतरनाक

बीमारी के रूप में उठाने के लिए भुगतान किया गया है। नावेल कोरोना वायरस लगभग कोरोना वायरस के समान है।

दिव्यम (19): - कोरोना वायरस और नावेल कोरोना वायरस में क्या अंतर है?

मैं: मानव कोरोना वायरस इस पृथ्वी के समान पुराने हैं। संभवतः वायरस पृथ्वी पर पहले जीव हैं। 1960 में साइंटिस्ट ने इसे पहली बार देखा। हमें यह विश्वास करने के लिए कहा गया है कि एक खतरनाक वायरस, जिसे नॉवेल कोरोनावायरस कहा जाता था, उत्परिवर्तन के माध्यम से विकसित हुआ है। यह एक घातक बीमारी का कारण होगा।

वायरस को 2019 के नावेल कोरोनावायरस के रूप में लेबल किया गया था। इसे बाद में 2019-nCoV कहा गया। 'कोवीड-19' (COVID-19) नोवेल कोरोना वायरस बीमारी का नाम है। यहाँ 'CO' का अर्थ कोरोना, 'VI' वायरस के लिए और 'D' बीमारी के लिए है ।

यह कहा जाता है कि म्यूटेशन के कारण कोवीड-19 वायरस, एक नया कोरोना वायरस है। यह वायरस के एक ही परिवार से जुड़ा हुआ है जैसे कि गंभीर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम (SARS), मिडिल ईस्ट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम (MERS) और कुछ सामान्य कॉमन कोल्ड वायरस।

दिव्यम (20): - हम कैसे जानते हैं कि कोई व्यक्ति कोवीड-19 का रोगी है?

मैं: एक परीक्षण द्वारा। आर-टी-पी-सी-आर (आर-टी-पी-सी-आर (rtPCR)) टेस्ट के रूप में जाना जाने वाला एक परीक्षण है जिसका पूरा अर्थ है - रिवर्स ट्रांसक्रिप्शन पॉलिमरेज़ चेन रिएक्शन टेस्ट । यह एक परीक्षण किट है जिसके द्वारा आप यह पता लगाते हैं कि किसी मरीज को कोवीड-19 संक्रमण है या नहीं।

हर उत्पाद के साथ आपको एक पुस्तिका या निर्देश पुस्तिका मिलेगी। जब भी कोई मशीन या गैजेट खरीदा जाता है, तो एक पुस्तिका हमेशा प्रदान की जाती है, ताकि उपयोगकर्ता इसके उपयोग को ठीक से समझ सके, ताकि उपयोगकर्ता डिवाइस की सीमाओं को जान सके। जब एक आर-टी-पी-सी-आर (rtPCR) किट खरीदी जाती है तो निर्माता का मैनुअल टेस्ट किट के साथ होता है ताकि हम इस किट का उचित और वैज्ञानिक तरीके से उपयोग कर सकें। मैनुअल नियामक स्थिति के तहत कहता है - केवल अनुसंधान के लिए उपयोग; नैदानिक प्रयोजन के लिए नहीं।

अतः अब यह स्पष्ट है कि इसका उपयोग केवल अनुसंधान के उद्देश्य से किया जाना चाहिए न कि निदान के लिए इसका उपयोग किया जाना चाहिए।

अतः अब यह स्पष्ट है कि इसका उपयोग केवल अनुसंधान के उद्देश्य से किया जाना चाहिए न कि इसका उपयोग नैदानिक उद्देश्य के लिए। इस किट के आविष्कारक, कैरी मुलिस का यह भी कहना है कि यह केवल अनुसंधान उद्देश्य के लिए है।

दिव्यम (21): - क्यों आरटी-पीसीआर का उपयोग नैदानिक उद्देश्य के लिए नहीं किया जा सकता है?

मैं: क्योंकि झूठी सकारात्मक और झूठी नकारात्मक परिणाम आने की संभावना काफी अधिक हैं। आप इस परीक्षण पर भरोसा नहीं कर सकते। इस परीक्षण के परिणाम के आधार पर आप यह नहीं कह सकते कि यह व्यक्ति एक कोरोना रोगी है क्योंकि परीक्षण सकारात्मक है। आप यह नहीं कह सकते कि यह रोगी कोरोना रोगी नहीं है क्योंकि परीक्षण नकारात्मक है। यह एक बेकार परीक्षा है। यह परीक्षण बेकार है।

व्हाइट हाउस में कोरोना वायरस के समन्वयक डॉ. बिर्क्स की राय है कि इस डायग्नोस्टिक किट में गलत परिणाम साबित होने की 50% संभावना है। इसका मतलब है कि हर दूसरा परीक्षण गलत हो सकता है। इस कारण से, 20 मार्च को फिनलैंड के स्वास्थ्य मंत्रालय ने इस परीक्षण किट को अस्वीकार कर दिया।

27 फरवरी 2020 को एक लेख प्रकाशित किया गया था। इस किट से वुहान शहर के 4 मरीजों का परीक्षण किया गया।

अस्पताल से निकलने से ठीक पहले इस परीक्षण किट द्वारा उन्हें कोरोना वायरस नकारात्मक घोषित किया गया था। उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई और घर जाने की अनुमति दी गई। लगभग 13 दिनों के बाद, उन्हें फिर से उसी किट से जांचा गया और पता चला कि उन्हें कोरोना पॉजिटिव है। इसका क्या मतलब है? इस का मतलब है कि -

1. **वे पहले नकारात्मक नहीं थे। या**
2. **वे ठीक हो गए थे लेकिन फिर से घर पहुंचने पर कोरोना वायरस से संक्रमित हो गए। या**
3. **उनका शरीर कोरोनावायरस मुक्त है और परीक्षण गलत है।**

इसलिए यह परीक्षण कोई निर्णायक जवाब नहीं दे सकता है। इसके अलावा क्रॉस-रिएक्टिविटी एक बड़ा मुद्दा है। इसे सभी परीक्षणों के लिए ध्यान में रखा जाना चाहिए।

दिव्यम (22): - क्या यह आरटी-पीसीआर (RT-PCR) परीक्षण 'कोरोना परिवार' के अन्य विषाणु के संक्रमण के साथ क्रॉस-प्रतिक्रिया कर सकता है?

मैं: हाँ, यह परीक्षण गैर-विशिष्ट परीक्षण है और अन्य गैर-कोवीड कोरोना वायरस संक्रमण, मर्स (MERS) वायरस संक्रमण या सार्स (SARS) वायरस संक्रमण के लिए भी सकारात्मक परिणाम दिखा सकता है।

दिव्यम (23): - क्या यह आरटी-पीसीआर (RT-PCR) परीक्षण कोरोना संक्रमण के अलावा अन्य के साथ क्रॉस प्रतिक्रिया कर सकता है?

मैं: 4 मार्च को, द लांसेट ने एक अध्ययन प्रकाशित किया। इस जर्नल में सिंगापुर के एक मरीज का केस स्टडी है। कोवीड के लिए एक डेंगू पॉजिटिव का परीक्षण किया गया था और इसे कोरोना पॉजिटिव पाया गया था। इस मरीज को तेज बुखार के साथ अस्पताल ले जाया गया था, जहां डेंगू के लिए उसका परीक्षण किया गया और डेंगू पॉजिटिव घोषित किया गया, जिसके लिए इलाज शुरू हुआ।

डॉक्टर ने उन्हें कोरोना वायरस के लिए भी परीक्षण करने का निर्णय लिया और परीक्षण में पाया गया कि कोरोनोवायरस टेस्ट का परिणाम भी सकारात्मक है। अब सवाल यह है कि क्या उसे डेंगू का मरीज माना जाए या कोरोनोवायरस का मरीज? क्या यह रिपोर्ट झूठी सकारात्मक थी? मरीज डेंगू से पीड़ित है या कोवीड-19 से, इसका पता नहीं चल सका है। तो यह यहाँ स्पष्ट है कि आरटी-पीसीआर (RT-PCR) परीक्षण, अन्य गैर-कोरोना वायरस संक्रमण के साथ प्रतिक्रिया कर सकता है। यहां तक कि एक ही रोगी का अलग-अलग परिणाम हो सकता है।

दिव्यम (24): - क्या आरटी-पीसीआर (RT-PCR) टेस्ट एक ही मरीज के लिए अलग-अलग परिणाम दिखा सकता है?

मैं: हां। यह दिखा सकता है। इसलिए मैं इस परीक्षा को एक कपटपूर्ण परीक्षण कह रहा हूं। 5 मार्च को, द न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन में एक दिलचस्प लेख प्रकाशित हुआ जिसमें एक ही मरीज से दो नमूने लिए गए। रोगी के नाक के स्वाब ने कोवीड-19 के लिए सकारात्मक परीक्षण किया जबकि उसके मुख स्वाब ने कोवीड-19 के लिए नकारात्मक परिणाम दिखाया। एक नमूना उसकी नाक से लिया गया था और इसका परिणाम आया कोरोना पॉजिटिव। उसके मुंह से एक और नमूना परीक्षण किया गया था और इसका परिणाम आया कोरोना नकारात्मक।

अब अंतिम परिणाम क्या है? इसलिए यहां स्पष्ट है कि एक ही रोगी अलग-अलग परिणाम दिखा सकता है। आप समझ सकते हैं कि इस परीक्षण की विश्वसनीयता शून्य है। वे इसका इस्तेमाल सिर्फ दहशत पैदा करने के लिए कर रहे हैं।

दिव्यम (25): - इस दहशत को कैसे दूर करें?

मैं: इस आरटी-पीसीआर (RT-PCR) परीक्षण की सटीकता और विश्वसनीयता संदिग्ध थी। व्हाइट हाउस के कोरोनावायरस प्रतिक्रिया के समन्वयक डॉ. देबोराह ब्रिक्स ने कहा कि परीक्षण में केवल 50% सटीकता है।

6 मार्च को ब्रिटिश मेडिकल जर्नल (बीएमजे) में एक रिपोर्ट प्रकाशित की गई थी। रिपोर्ट डॉ. पीटर सी गोट्ज़ द्वारा लिखी गई थी। उन्होंने कहा कि भय के इस वातावरण को दूर करने का एकमात्र तरीका इस परीक्षण किट को हटाना है।

विज्ञान यह साबित कर रहा है कि यह परीक्षण किट अतार्किक, अवैज्ञानिक, गैर -कानूनी और मानवता के खिलाफ अपराध है। 20 मार्च को, फिनलैंड में इस गलत परीक्षण किट को अस्वीकार कर दिया गया था। लेकिन दुख की बात है कि भारत में ऐसा नहीं किया गया।

तो आप समझ सकते हैं कि कोरोना मामलों की संख्या वास्तव में एक नकली संख्या है। कोरोना कोई गंभीर बीमारी नहीं है।

दिव्यम (26): - भारत में अलग-अलग रोगो से कितने लोगो की मृत्यु होती है?

मैं: मैं आपको कुछ महत्वपूर्ण बीमारी और उनकी मृत्यु का उल्लेख करूंगा। भारत में हर साल 15,00,000 लोग दिल की बीमारियों के कारण मर जाते हैं; श्वसन रोगों के कारण 9,50,000 लोग मरते हैं; तपेदिक के कारण 4,50,000 लोग मरते हैं; अस्थमा के कारण 2,50,000 लोग मरते हैं; श्वसन संक्रमण के कारण 5,00,000 लोग मारे जाते हैं; स्ट्रोक के कारण 7,25,000 लोगों की मौत; स्ट्रोक के कारण 7,25,000 लोगों की मौत; 7,10,000 लोग

डायरिया के कारण मर जाते हैं; मधुमेह के कारण 2,50,000 लोग मारे जाते हैं; 2,20,000 लोग किडनी की बीमारी के कारण मर जाते हैं; 4,50,000 लोग कैंसर की वजह से मरते हैं। कई बीमारियां हैं जो कोरोना की तुलना में अत्यधिक घातक हैं। कोरोना की मृत्यु दर बहुत कम है।

दिव्यम (27): - तो कोरोना घातक नहीं है?

मैं: अन्य बीमारियों की मृत्यु को देखते हुए, कोरोना एक मामूली बीमारी लगती है। कोरोना की वास्तविक मृत्यु दर लगभग 0.1% है। यहां तक कि यह इससे कम हो सकता है और बाद में मृत्यु दर 0.01% तक कम साबित हो सकती है। यह बीमारी सामान्य फ्लू या सामान्य जुकाम की तरह है। उन्होंने जानबूझकर गलत भविष्यवाणी देकर डर का माहौल बनाया।

दिव्यम (28): - वो प्रारंभिक भविष्यवाणी क्या थी?

मैं: उन्होंने एक अफवाह फैलाई कि कोरोना वायरस 5,00,000 ब्रिटिश आबादी को और अमेरिका की 22,00,000 आबादी को मार सकता है। उन्होंने अफवाह फैला दी कि कोरोना अत्यधिक खतरनाक है और विश्व की 500 से 1000 मिलियन आबादी को मार सकता है।

उन्होंने गलत दावा किया कि यह वायरस हम सभी को मारने वाला है। उन्होंने कहा कि हमें शहरों पर ताला लगाना होगा। और

दुनिया की कुछ सरकारों ने हमें यह कहते हुए हमारे घरों में बंद कर रखा है कि यह व्यवस्था इस खतरनाक वायरस से हमारी रक्षा करेगी। ब्रिटेन सरकार ने जनवरी में एक बयान जारी कर दावा किया कि अमेरिका में 22,00,000 मौतें और ब्रिटेन में 5,00,000 मौतें होंगी।

मौत से ज्यादा नहीं डरना चाहिये; क्योंकि मृत्यु एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। सभी प्रजातियों की मृत्यु होती है। किसी को भी जनता के बीच अनावश्यक भय नहीं पैदा करना चाहिए। हर व्यक्ति को काम करने का अधिकार है। पैसा कमाने का अधिकार हर किसी को है। और हमारी सरकार ने पूरे राष्ट्र को बंद करके और सभी नागरिक स्वतंत्रता को छीनकर हमारी अर्थव्यवस्था को नष्ट कर दिया। यह एक झूठी महामारी है; यहां तक कि आप इसे एक स्थानीयमारी (एंडीमिक) भी नहीं कह सकते।

दिव्यम (29): - स्थानीय बीमारी (एंडीमिक -ENDEMIC) क्या है?

मैं: एक स्थानीय (एंडीमिक) बीमारी वो होती है जो है जो किसी विशेष क्षेत्र या विशेष आबादी में स्थायी रूप से मौजूद होती है। अफ्रीका और एशिया के कुछ हिस्सों में मलेरिया एक निरंतर समस्या है, इसलिए हम मलेरिया को स्थानीय बीमारी कह सकते हैं। अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका और मध्य पूर्व में मलेरिया एक स्थानिक बीमारी है। यह एक प्रोटोजोआ परजीवी द्वारा

प्लास्मोडियम जीनस से प्रेषित होता है। वे लाल रक्त कोशिकाओं को नष्ट कर देते हैं। यह रोगियों में एनीमिया का कारण बनता है और अनुपचारित छोड़ दिए जाने पर घातक साबित हो सकता है।

हाल के शोध कहते हैं, हर साल लगभग 200 से 500 मिलियन (20 करोड़ से 50 करोड़) लोग मलेरिया से पीड़ित होते हैं, जिनमें से 1.5 से 2.7 मिलियन (15 लाख से 27 लाख) मर जाते हैं। यह कितने आश्चर्य की बात है। मलेरिया की व्यापकता और मृत्यु दर कोरोना की तुलना में अधिक है, फिर भी मलेरिया स्थानिक है और कोरोना महामारी है।

एक और उदाहरण है चागास रोग। लगभग 7.6 मिलियन (76 लाख) लोग चगास रोग से संक्रमित हैं। यह एक प्रोटोजोआ परजीवी, ट्रिपैनोसोमा क्रूज़ी के कारण होता है। यह बीमारी मेक्सिको, दक्षिण और मध्य अमेरिका के लिए स्थानिकमारी वाली है। चागास रोग को तीव्र प्रथम चरण, स्पर्शोन्मुख मध्यवर्ती चरण और पुरानी अवस्था में विभाजित किया गया है।

एक और उदाहरण अफ्रीकी स्लीपिंग सिकनेस है। यह बीमारी ट्रिपैनोसोमा जीनस की एक अलग प्रजाति से संबंधित प्रोटोजोआ परजीवी के कारण होती है।

यह बीमारी उप-सहारा अफ्रीका में प्रचलित है। यह बुखार, जोड़ों में दर्द, पसीना, अत्यधिक थकान, सूजन, लिम्फ नोड्स, मांसपेशियों

और सिर दर्द का कारण बनता है। धीरे-धीरे परजीवी केंद्रीय तंत्रिका तंत्र पर हमला करता है और नींद के चक्र में गड़बड़ी, खराब समन्वय और भ्रम का कारण बनता है। जनमारी रोग, स्थानिकमारी रोगों से अलग होते हैं।

दिव्यम (30): - जनमारी (EPIDEMIC) क्या है?

मैं: एक जनमारी एक साथ कई लोगो पे हमला करती है एवं एक साथ भारी संख्या में लोगो को मारकर एक व्यापक तबाही लाती है, साथ ही यह तेजी के साथ फैलती है। जनमारी रोग का एक 'प्रकोप' है जो एक ही समय में कई लोगों पर हमला करता है और एक या कई समुदायों में फैल जाती है। एक जनमारी एक बीमारी का उच्चतम प्रकोप है। जनमारी स्थानिक बीमारी से अलग है। एक स्थानिक बीमारी वह है जो किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र में लगातार मौजूद रहती है।

एवियन इन्फ्लूएंजा, हैजा, इबोला, प्लेग, पीला बुखार, मेनिनजाइटिस, मर्स, इन्फ्लुएंजा, जीका, रिफ्ट वैली फीवर, लासा बुखार, लेप्टोस्पायरोसिस जनमारी की बीमारी के कुछ उदाहरण बताये जाते हैं। एक महामारी स्थानिकमारी और महामारी से अलग है।

दिव्यम (31): - महामारी (PANDEMIC) क्या है?

मैं: जब एक जनमारी पूरे विश्व में फैलती है तो उसे महामारी कहा जाता है। यह एक प्रकार की महामारी है जो दुनिया भर में फैली हुई होती है जिससे कई देशों और महाद्वीप प्रभावित होते हैं। रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र (सीडीसी) एक महामारी को इस रूप में परिभाषित करता है - "जो कई देशों और महाद्वीपों में फैल गया हो और आमतौर पर कई लोगों को प्रभावित करता हो।" महामारी तब कही जाती है जब कोई बीमारी वैश्विक आबादी को प्रभावित करती है एवं जब पुरे विश्व समुदाय को एक साथ भारी संख्या में लोगो को मारकर एक वैश्विक व्यापक तबाही लाती है साथ ही यह तेजी के साथ फैलती हो।

न तो डब्ल्यूएचओ और न ही सीडीसी यह निर्दिष्ट करता है कि रोग के फैलने के लिए कितने देशों को प्रभावित किया जाना चाहिए, जिसे महामारी के रूप में लेबल किया जा सके।

दिव्यम (32): - मुझे महामारी का कोई पिछला उदाहरण दें?

मैं: 1917-1918 के स्पेनिश फ्लू महामारी, 1981 एचआईवी / एड्स महामारी और 2009 स्वाइन फ्लू महामारी, महामारी रोग के कुछ उदाहरण बताये जाते हैं। हालाकि स्वाइन फ़्लू महामारी एवं एचआईवी / एड्स महामारी, एक मिथ्या महामारी होने की आशंका है।

यहां एक महामारी के लिए, मृत्यु दर बहुत महत्वपूर्ण है; गंभीर महामारी के रूप में लेबल करने के लिए मृत्यु दर अधिक होनी चाहिए। लेकिन कोरोना की मृत्यु दर बहुत कम है, इसलिए इसे सच्ची महामारी नहीं कहा जा सकता है।

यहां विश्व स्वास्थ्य संघठन (विश्व स्वास्थ्य संगठन) ने एक बड़ी गलती की है। यह या तो गलती है या डब्ल्यूएचओ द्वारा जानबूझकर किया गया है क्योंकि डब्ल्यूएचओ मिथ्याकृत कोरोना महामारी के षड़यंत्र का हिस्सा हो सकता है।

दिव्यम (33): - यह डब्ल्यूएचओ (विश्व स्वास्थ्य संगठन) क्या है?

मैं: डब्ल्यूएचओ का अर्थ है - World Health Organisation अर्थात विश्व स्वास्थ्य संगठन। यह अंतर्राष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए जिम्मेदार संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का संविधान, जो एजेंसी की संरचना और सिद्धांतों को स्थापित करता है, अपने मुख्य उद्देश्य को 'सभी लोगों द्वारा स्वास्थ्य के उच्चतम संभव स्तर की प्राप्ति' के रूप में बताता है।

इसका मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैंड में है, जिसमें छह अर्ध-स्वायत्त क्षेत्रीय कार्यालय हैं और लगभग 150 क्षेत्रीय कार्यालय पूरे विश्व में वितरित किए जाते हैं।

डब्ल्यूएचओ के व्यापक उद्देश्यों में सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा की वकालत करना, सार्वजनिक स्वास्थ्य जोखिमों की निगरानी करना, स्वास्थ्य आपात स्थितियों के लिए प्रतिक्रियाओं का समन्वय करना और मानव स्वास्थ्य और भलाई को बढ़ावा देना शामिल है।

यह देशों को तकनीकी सहायता प्रदान करता है, अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य मानकों और दिशानिर्देशों को निर्धारित करता है और वैश्विक स्वास्थ्य मुद्दों पर डेटा एकत्र करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन, स्वास्थ्य मुद्दों पर शिखर सम्मेलन और चर्चा के लिए एक मंच के रूप में भी कार्य करता है।

यह कहा जाता है कि डब्ल्यूएचओ वैश्विक स्वास्थ्य के लिए जिम्मेदार है। लेकिन चीजें अलग हैं। डब्ल्यूएचओ के लोग कह रहे हैं कि वे वैश्विक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए काम कर रहे हैं लेकिन मुझे डर है कि वे वास्तव में बड़े फार्मास्यूटिकल दिग्गजों के एजेंट के रूप में काम कर रहे हैं और उनकी रुचि के लिए काम कर रहे हैं। मेरी राय में विश्व स्वास्थ्य संगठन अब दवा और वैक्सीन कंपनियों की कठपुतली बन चूका है। यहां तक कि 2009 में स्वाइन फ्लू महामारी को बाद में एक झूठी महामारी पाया गया था। जैसा कि पेस (PACE) ने पहले ही कहा है कि 2009 स्वाइन फ्लू महामारी एक मिथ्या महामारी थी।

दिव्यम (34): - क्या विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा घोषित 2009 स्वाइन फ्लू महामारी एक मिथ्या महामारी थी?

मैं: हाँ, यह एक झूठी महामारी थी। हाँ, यह एक नकली महामारी थी। हाँ, यह मिथ्या महामारी थी। मूल रूप से यह कोई यह महामारी नहीं थी।

PACE (पार्लियामेंटरी असेम्बली ऑफ़ काउंसिल ऑफ़ यूरोप) ने तथाकथित स्वाइन फ़्लू महामारी की जाँच की है। वे डब्ल्यूएचओ, फार्मा उद्योग और वैज्ञानिकों के बीच बड़े स्तर के भ्रष्टाचार का पता लगाते हैं, जिसने अरबों लोगों के मन में डर पैदा कर दिया है, लाखों लोगों के जीवन को स्थायी रूप से नुकसान पहुंचाया है और यहां तक कि सैकड़ों-हजारों की मौत भी डर से हुई है।

संसद का प्रस्ताव जर्मन बुंडेस्टैग के पूर्व सदस्य डॉ. वोल्फगैंग वोडार्ग और पेस की स्वास्थ्य समिति (यूरोप की परिषद की संसदीय सभा) के अध्यक्ष द्वारा पेश किया गया था। जर्मन बुंडेस्टैग जर्मन संघीय संसद है।

वोडार्ग एक मेडिकल डॉक्टर है जो डब्ल्यूएचओ के महामारी 'स्वाइन फ्लू अभियान को चिकित्सा क्षेत्र में, शताब्दी के सबसे महान चिकित्सा घोटालों' में से एक मानते है।

दिव्यम (35): - क्या विश्व स्वास्थ्य संघठन एक भ्रष्ट संगठन है?

मैं: ऐसा ही लगता है। यहां वैज्ञानिक और अधिकारी अपने स्वार्थ के लिए या किसी बड़ी दवा कंपनी के हित के लिए या किसी देश के हित के लिए काम कर रहे हैं। वे फार्मा कंपनियों या किसी बड़े देश के एजेंट हो सकते हैं।

यूरोप की संसद की परिषद ने कहा है कि, 'फ्लू के खिलाफ अपनी पेटेंट दवाओं और टीकों को बढ़ावा देने के लिए, दवा कंपनियों ने विश्व स्वास्थ्य संघठन के वैज्ञानिकों और आधिकारिक एजेंसियों को प्रभावित किया, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य मानकों के लिए दुनिया भर में सरकारों को अलार्म के लिए जिम्मेदार हैं। और उन्हें अपर्याप्त टीका रणनीतियों के लिए तंग स्वास्थ्य संसाधन बनाने और अनावश्यक रूप से परीक्षण किए गए टीकों के अज्ञात प्रभावों के जोखिम के लिए लाखों स्वस्थ लोगों को अनावश्यक रूप से पीड़ित किया'।

लगता है कि बर्ड-फ्लू और स्वाइन-फ्लू अभियान ने टीकाकरण करवाने वाले रोगियों को बहुत नुकसान पहुँचाया है। इसने महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थानों की विश्वसनीयता और जवाबदेही को भी नुकसान पहुंचाया है।

जून 2009 में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा घोषित 'फर्जी महामारी' के मुद्दे पर संसदीय जाँच की गई है। इस महामारी को उसके विशेषज्ञों के समूह SAGE (Study on global AGEing

and adult health) की सलाह पर घोषित किया गया था। SAGE वैश्विक स्तर पर उम्र बढ़ने और वयस्क स्वास्थ्य पर अध्ययन करता है। SAGE के कई सदस्यों के कुछ दवा दिग्गजों जैसे GlaxoSmithKline, Roche, Novartis के साथ वित्तीय संबंध हैं, जिन्होंने ड्रग्स के उत्पादन से लाभान्वित किया।

समिति को दिए अपने बयान में, वोडार्ग ने डब्ल्यूएचओ के वैज्ञानिकों और अधिकारियों पर फार्मा उद्योग के प्रभाव की आलोचना की, जिसमें कहा गया है कि इसने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है, जहां "लाखों स्वस्थ लोगों को खराब परीक्षण किए गए जोखिम भरे टीकों को लगवाया गया है और एक ऐसे फ्लू स्ट्रेन के लिए जो पिछले सभी फ्लू महामारी की तुलना में 'बहुत कम हानिकारक' है।"

दिव्यम (36): - महामारी के लिए क्या मापदंड होना चाहिए?

मैं: महामारी के मुख्य मापदंड मौतों की संख्या होनी चाहिए। यह संक्रमित व्यक्तियों की संख्या नहीं हो सकती है। क्योंकि मृत्यु की संख्या ही एकमात्र तरीका है, जहां हम किसी बीमारी का अंदाजा लगा सकते हैं कि वह घातक है या नहीं।

पहली बार एक महामारी के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मापदंड को अप्रैल 2009 में बदल दिया था, ताकि किसी बीमारी का वास्तविक जोखिम न हो तब भी सिर्फ रोग के मामलों की

संख्या के आधार पर ही 'महामारी' घोषित किया जा सके। यहाँ एक बड़ा खेल है। पहला मामला मेक्सिको मामला बताया गया था, पहले मामले के तुरंत बाद, डब्ल्यूएचओ ने महामारी के मानदंडों को बदल दिया। उन्होंने हमें मूर्ख बनाने के लिए मापदंड बदल दिए ताकि वो उसे महामारी बता सके।

स्वाइन फ्लू को महामारी के रूप में चिन्हित करके, कुछ देशों को महामारी की रोकथाम की योजनाओं को लागू करने के लिए मजबूर किया गया था और साथ ही गैर-आवश्यक स्वाइन फ्लू के टीके भी खरीदे गए थे।

क्योंकि डब्ल्यूएचओ किसी भी संसदीय नियंत्रण के अधीन नहीं है, वोडार्ग ने कहा कि सरकारों के लिए जवाबदेही पर जोर देना अनिवार्य होना चाहिए। जर्मनी की दो महत्वपूर्ण एजेंसियों - पॉल-एर्लिच और रॉबर्ट-कोच संस्थान की भूमिका की भी जाँच हुई। पेस (PACE) स्वाइन फ्लू महामारी को असली महामारी मानने के लिए तैयार नहीं थे।

दिव्यम (37): - पेस फाइनल रिपोर्ट क्या थी?

मैं: अंत में PACE स्वास्थ्य समिति ने स्वाइन फ्लू के 'अनुचित डर' की निंदा की। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह सार्वजनिक धन की बर्बादी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ), यूरोपीय संघ की एजेंसियों और राष्ट्रीय सरकारों द्वारा H1N1 कथित महामारी

को संभालने से जनता के पैसे की बड़ी बर्बादी हुई। यूरोपीय जनता के सामने अनुचित आतंक और भय थे।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के विशेषज्ञ वैज्ञानिकों के बीच हितों का टकराव अब बहुत अच्छी तरह से उजागर हो गया है। तीन वैज्ञानिकों को पहले व्याख्यान और परामर्श कार्य के लिए रोश या ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन जैसे ड्रग दिग्गजों द्वारा भुगतान किया गया था। अनुसंधान कार्यों में शामिल वैज्ञानिकों को भी फार्मा दिग्गजों द्वारा भुगतान किया गया है।

तो आप सोच सकते हैं, वहाँ पेड वैज्ञानिक हैं जो एक विशेष स्व-प्रेरित हित के लिए काम कर रहे हैं। वे मानवता के लिए काम नहीं कर रहे हैं। इन शैतान वैज्ञानिकों द्वारा विकसित ड्रग्स और टीके वास्तव में सहायक नहीं थे।

दिव्यम (38): - क्या स्वाइन फ्लू के लिए टीकाकरण प्रभावी था?

मैं: PACE की रिपोर्ट कहती है कि कई सबूत है जो साबित करते है कि वास्तव में महामारी कभी थी ही नहीं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने महामारी को गलत तरीके से परिभाषित किया, बहुत ज्यादा प्रचारित किया, जिसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राथमिकताओं में विकृति आ गई थी।

श्री फ्लिन ने समिति को बताया: 'यह एक ऐसी महामारी थी जो वास्तव में कभी थी ही नहीं', और टीकाकरण कार्यक्रम को सर्वोत्तम

उपचार के रूप में वर्णित किया गया, प्रचार किया गया। महामारी के बारे में निर्णय लेने की पारदर्शिता में व्यापक एवं गंभीर कमी थी।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा लिए गए फैसलों के कारण दवा उद्योग का प्रभाव समाज के लिए काफी हानिकारक हुआ है। यह सलाह भविष्य की महामारी के मामले में विनाशकारी साबित हो सकती है, यह चेतावनी देती है। उन्होंने दुनिया को चेतावनी दी की विश्व स्वास्थ्य संघठन पे विश्वास न करे अन्यथा अगली झूठी महामारी भयंकर विनाशकारी साबित होगी। लेकिन यह हमारी गलती है कि हमने उनकी सलाह को गंभीरता से नहीं लिया।

ब्रिटिश मेडिकल जर्नल के एडिटर-इन-चीफ फिओना गोडली ने बताया कि डब्ल्यूएचओ के दिशानिर्देशों का पालन करते हुए जिन दवा कंपनियों ने फ्लू के टीकों और दवाओं का स्टॉक जमा किया था, उन वैज्ञानिकों को दवा कंपनियों ने पहले ही भुगतान कर दिया था।

समिति ने कहा कि डब्ल्यूएचओ 'अत्यधिक रक्षात्मक' रहा है। डब्ल्यूएचओ यह मानने को तैयार नहीं है कि उसने महामारी की परिभाषा में बदलाव किया था।

दिव्यम (39): - विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्था पर दवा कंपनियों का क्या प्रभाव हो सकता है?

मैं: हाँ, ज्यादातर लोग इसी तरह से सोच रहे हैं। अमेरिकी फार्मा कंपनियां या बड़ी फार्मा कंपनियां मल्टीबिलियन-डॉलर उद्यम हैं। उनका वार्षिक बजट कई देशों के वार्षिक बजट से भी अधिक है। वे किसी भी संगठन को प्रभावित कर सकते हैं। वे किसी को भी रिश्वत दे सकते हैं।

दुनिया भर की सरकारों में इन कंपनियों की कठपुतलिया काम करती हैं। अब आप जान गये हैं कि पीएसीई (PACE) ने पाया कि स्वाइन फ्लू एक झूठी महामारी थी। अब हमें अपनी स्वास्थ्य नीतियों को निर्धारित करने के लिए डब्ल्यूएचओ को अधिकार नहीं देना चाहिए। विश्व स्वास्थ्य संगठन, सरकारों, डॉक्टरों या यहां तक कि मेडिकल पत्रिकाओं पर बिग फार्मा का बहुत बड़ा प्रभाव है।

और अब यह 2020 में एक गलत, झूठी एवं भ्रामक कोरोना महामारी के रूप में फिर से हुआ क्योंकि हमने पेस रिपोर्ट की चेतावनी से नहीं सीखा है। डब्ल्यूएचओ अपने आत्म-प्रेरित हित के लिए भय की रणनीति का उपयोग कर रहा है। डब्ल्यूएचओ डर का व्यापार रहा है|

दिव्यम (40): - डर का व्यापार क्या होता है?

मैं: अपने उत्पाद बेचने के लिए कुछ लोग डर का माहौल बनाते है । वो आपको बताते है की आप मरने वाले है । और वो आपको बचाना चाहते है । जिसके लिए आपको उनका उत्पादन खरीदना

होगा । डर भड़काना या डराना-भड़काना, जनता की भावनाओं और निर्णयों में हेरफेर करने के लिए भय को जानबूझकर पैदा किया जाता है । डर पैदा करने के लिए एक आसन्न गंभीर खतरे की अफवाह फैलाते है। वे हमें अपने उत्पादों को बेचने के लिए डराना चाहते हैं। जानबूझकर सार्वजनिक भय या किसी विशेष मुद्दे के बारे में डरावनी बाते फैलाई जाती है।

यह मीडिया के माध्यम से किया जाता है। मीडिया हाईप बनाता है। मीडिया गलत आंकड़े देता है और वास्तविक आंकड़े छिपाता है। उन्होंने सामान्य मृत्यु दर को असामान्य रूप से ज्यादा बताया, उन्होंने सामान्य घटनाओं को असामान्य रूप से बढ़ा चढा के बताया। वे समाज में दहशत पैदा करते हैं। उन्होंने आम लोगों को डराया। वे डब्ल्यूएचओ के साथ मिलकर मास्क के उपयोग को प्रोत्साहित करते हैं। शुरू में कुछ लोगों ने मास्क का इस्तेमाल शुरू किया। बाद में और लोगों ने भी अन्य लोगों को ऐसा करते देखकर भयभीत होकर मास्क का उपयोग करना शुरू कर दिया। ऐसा करके वे लोगों को डराते हैं। लेकिन वे आपको कभी नहीं बताते हैं कि मास्क आपके मुंह या नासिका में कोरोना वायरस के प्रवेश को रोक नहीं सकता है।

दिव्यम (41): - क्या मास्क कोरोना वायरस से बचा सकता है?

मैं: नहीं। लोगों को मुख्य मीडिया और विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मूर्ख बनाया गया था और बनाया जा रहा है। डब्ल्यूएचओ ने लोगों को मास्क पहनने की सलाह दी। यह एक ज्ञात तथ्य है कि एन-95 (N-95) मास्क भी वायरस से रक्षा नहीं कर सकता है। क्योंकि एन-95 (N-95) का मतलब 300 नैनोमीटर के ऊपर के आकार को 95% तक छानना है। जबकि दूसरी ओर कोरोना वायरस का आकार लगभग 100 नैनोमीटर है।

डब्ल्यूएचओ द्वारा अनुशंसित किसी भी मास्क को पहनना कुछ ऐसा है जैसे मच्छरदानी के साथ तैरना और स्विमिंग पूल में गीला न होने की उम्मीद करना। डब्ल्यूएचओ ने मास्किंग की सलाह दी है। मीडिया, डब्ल्यूएचओ और सरकारी एजेंसियां आपको कभी नहीं बताएंगी कि मास्क पहनने से कई बुरे प्रभाव पड़ते हैं।

दिव्यम (42): - मास्क पहनने के क्या-क्या बुरे प्रभाव हैं?

मैं: यह समझना चाहिए कि मास्क कोरोना वायरस के संक्रमण और / या इसके प्रसार को नहीं रोक सकता है। इसके कई दुष्प्रभाव हैं।

1) सबसे पहले, कोरोना वायरस का आकार लगभग 100 नैनोमीटर है और उपलब्ध मास्क का छिद्र आकार लगभग 300 से 800 नैनोमीटर है, इसलिए मुखौटा श्वसन के दौरान वायरस को प्रवेश करने से नहीं रोक सकता है। कुछ

लोगों का कहना है कि क्योंकि यह एक छोटी बूंद का संक्रमण है; इसलिए बूंदें मास्क से चिपकी रहेंगी और इस तरह से वे वायरस को नाक और मुंह में जाने से रोकेंगी लेकिन यह भी एक गलत धारणा है, क्योंकि बूंद मास्क से चिपकी रहती है, तो इस बात की अधिक संभावना है कि वायरस मास्क के संपर्क में रहेगा जो कि श्वसन के दौरान वायरस को श्वशन पथ में जाने की सम्भावना को बढाता है। अर्थात संक्रमण होने की अधिक संभावना है।

2) दूसरा, फेस मास्क सांस लेना अधिक कठिन बना सकता है। चेहरे पे मास्क पहनने से, वे कुछ ही समय मे असहनीय हो जाते हैं क्योंकि इससे उनकी सांस खराब हो जाती है। इसके अलावा, पहले उत्सर्जित कार्बन डाइऑक्साइड की कुछ मात्रा प्रत्येक श्वसन चक्र में श्वास के साथ पुनः ली जाती है। इसलिए वे श्वास लेने के प्रयासों, आवृत्ति और गहराई में वृद्धि करेंगे। जिससे आप और अधिक बीमार पड़ेंगे। मास्क किसी अन्य प्रकार के श्वसन संक्रमण से संक्रमित लोगों की नैदानिक स्थिति को भी खराब कर सकते है क्योंकि श्वास लेने में बाधा होने से एवं कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा बढ़ने से दूसरे वायरस या बैक्टीरिया की संख्या बढ़ सकती है। वास्तव में, पहनने वाला उसे अपनी खुद की श्वास छोड़ता है। कार्बन डाइऑक्साइड को पुनः श्वास में लेने से तेजी से सांस लेने,

तेजी से दिल की धड़कन, अनाड़ीपन, भावनात्मक उतार-चढ़ाव और थकान का कारण बनता है।

3) तीसरा, वे दृष्टि समस्याओं का कारण बन सकते हैं। फेस मास्क पहनने से श्वास की हवा में रुकावट आती है और श्वास की हवा निकलते समय आँखों में चली जाती है। इससे आपकी आंखों को ज्यादा कार्बन डाइ-ऑक्साइड मिलती है। यह कार्बन डाइ-ऑक्साइड, आपकी आंखों को बार-बार छूने के कारण एक चिड़चिड़ा एहसास और एक आवेग उत्पन्न करता है। यदि आपके हाथ दूषित हैं, तो आप बार-बार खुद को संक्रमित कर रहे हैं।

4) चौथा, फेस मास्क पहनना अत्यधिक असहज हैं। लंबे समय तक मुखौटा पहनना बहुत मुश्किल है। मास्क उस नमी को सोख लेगा जो सांस लेने और पसीने से बनती है। आप चाहते हैं कि आपका मास्क आपके चेहरे के आसपास पूरी तरह से फिट हो लेकिन यह आमतौर पर संभव नहीं है। कुछ समय बाद मास्क बहुत कड़ा हो जाता है और इससे आपके चेहरे पर दर्द हो जाता है। बहुत तंग मुखौटा आपको आसानी से श्वास लेने के लिए बहुत कम जगह देगा। कुछ समय बाद यह ढीला हो जाता है और नीचे खिसक जाता है।

5) पांचवां, वे चश्मे पे धुंध का कारण बन सकते हैं। जब कोई भी मास्क पहने बिना हवा छोड़ता है, तो यह हवा तुरंत

पर्यावरण में फैल जाती है। जब आप मास्क पहनते हैं, तो यह हवा आपके चश्मे में चली जाती है। कुछ लोग आपके मुंह और मास्क के बीच मुड़े हुए ऊतक को रखने का सुझाव देते हैं। वो यह कहते है क यह अतिरिक्त ऊतक-परत गर्म, नम हवा को अवशोषित करेगा, इसे आपके चश्मे तक पहुंचने से बचाएगा। लेकिन यह संभव नहीं है। ऐसा होता नहीं है। यह अतिरिक्त परत एक नई आफत की तरह है। इसे सही स्थान में टिकाना और भी ज्यादा मुश्किल है। यह भी कहा जाता है कि आपके नकाब के ऊपर का हिस्सा कड़ा होना चाहिए और नीचे का ढीला होना चाहिए, जिससे आपकी सांसों की हवा को अपनी आँखों से दूर जाने में मदद मिल सके। लेकिन फिर से यह संभव नहीं है क्योंकि एक सामान्य व्यक्ति अपने मुँह को बार-बार छूते हैं और मास्क पहनने के कुछ देर बाद ही ढीला हो जाता है।

6) छठे, वे हमारी प्रतिरक्षा को कम करते हैं। हाइपोक्सिया अर्थात कोशिकाओं में ऑक्सीजन का स्तर कम होना, प्रतिरक्षा प्रणाली के कुछ पहलुओं को दबा सकता है। आपके शरीर में पर्याप्त ऑक्सीजन की लंबे समय तक कमी संक्रमण से निपटने के लिए आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली की क्षमता को कम कर सकती है। मास्क पहने बूढ़े और छोटे लोगों को प्रतिरोधक क्षमता कम होने की आशंका अधिक

होती है। मास्क पहनना बूढ़े और छोटे बच्चो के लिए ज्यादा खतरनाक है।

7) सातवें, वे आपको करीब आने के लिए मजबूर कर सकते हैं। मास्क पहने व्यक्ति की पहचान करना मुश्किल है। यदि दोनों व्यक्ति एक-एक मुखौटा पहने हुए हैं, एक दूसरे से मिलते हैं, तो इसे पहचानना बहुत मुश्किल हो जाता है और अप्रत्यक्ष रूप से यह करीब आने के लिए मजबूर करेगा। मास्क पहनने वाले दो लोगों के बीच की बातचीत की गुणवत्ता, टोन और बोलने की मात्रा में अत्यधिक समझौता होता है और वे अनजाने में एक दूसरे के करीब आ सकते हैं। आपको जोर से बोलने की जरूरत पड़ती है, जिससे आपके कान भी बहरे हो सकते है।
8) आठवें, वे त्वचा पर चकत्ते, एलर्जी पैदा कर सकते हैं। मास्क से चेहरे की त्वचा पर एलर्जी, खुजली और लालिमा हो सकती है। मास्क पसीना, सौंदर्य उत्पाद, मोटर वाहन निकास, धूल के कण, पराग और हवा में तैरने वाले किसी भी कण को इकट्ठा कर सकता है, इसलिए ये सभी उत्पाद त्वचा पर चकत्ते और एलर्जी की प्रतिक्रिया पैदा कर सकते हैं।
9) नौवें, वे सुरक्षा की झूठी भावना पैदा करते हैं। मास्क के पोर का आकार कोरोना वायरस से तीन से दस गुना बड़ा होता है, इसलिए मास्क श्वसन पथ से वायरस को प्रवेश

करने या छोड़ने से नहीं रोकेगा। लेकिन एक व्यक्ति झूठा विश्वास कर सकता है कि वह सुरक्षित है लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है।

10)दसवां, आम लोग इसे बदलते नहीं है या धोते नहीं है। मास्क को 6 से 8 घंटे के बाद बदलाव की आवश्यकता होती है। अधिकांश आम लोग यह नहीं जानते हैं। मास्क को रोजाना कम से कम दो बार धोना चाहिए और यह ठीक से सूखना चाहिए। उनका उपयोग सूक्ष्म जीवों के प्रसार को रोकने के लिए किया जाता है, स्वयं सूक्ष्म जीवों को फैलाने के लिए नहीं, लेकिन इस तरह के गंदे मास्क पहनने से सभी प्रकार के कीटाणुओं के प्रसार में वृद्धि होगी।

11)ग्यारहवां, वे छोटे बच्चों को चोट पहुँचा सकते हैं। मास्क या क्लॉथ फेस कवरिंग को टॉडलर और छोटे बच्चों पर नहीं लगाना चाहिए। उन्हें सांस लेने में दिक्कत होगी। मास्क उन लोगों पर भी नहीं लगाया जाना चाहिए जो किसी की सहायता के बिना मास्क को हटाने में असमर्थ हैं जैसे शिशुओं, बेहोश या अक्षम व्यक्ति।

12)बारहवां, मुखौटा बुजुर्ग लोगों के जीवन को खतरे में डाल सकता हैं। बुजुर्ग आबादी में आमतौर पर मांसपेशियां कमजोर होती हैं, उनके श्वसन के प्रयास कम होते हैं और उन्हें कुछ और बीमारियां भी होती हैं। एसोसिएटेड बीमारी

श्वसन तंत्र या गैर-श्वसन तंत्र की हो सकती है जो उनकी श्वसन शक्ति और फेफड़ों की क्षमता को और कम कर देती है। इस स्थिति में मास्क पहनने से फेफड़े, रक्त और शरीर में उनके ऑक्सीजन का स्तर और कम हो जाएगा और इस तरह से उनके स्वास्थ्य और जीवन के लिए समझौता हो सकता है।

13)तेरहवां, मुखौटा के साथ चलना जीवन के लिए खतरा हो सकता है। हमने मुखौटे के साथ स्वस्थ युवाओं की मौत की खबर सुनी है। कुछ युवाओ के फेफड़े फट जाते हैं और मृत्यु या गंभीर बीमारी का कारण बन सकते हैं।

14)चौदहवां, मुखौटा सामाजिक मुद्दे का कारण बनता है। मास्क से समाज में एक डर पैदा होता है। एक व्यक्ति गलती से, अनजाने में, झूठे मीडिया प्रचार की वजह से मास्क को एक अच्छा सुरक्षा उपाय मान सकता है और उन लोगों के साथ गर्मा-गर्म चर्चा कर सकता है जो जानते हैं कि मास्क सुरक्षित नहीं हैं। इससे सहकर्मियों के साथ झगड़ा हो सकता है, एक-दूसरे को गाली दे सकते है, मुखौटा-समर्थक और मुखौटा-विरोधी समूहों के बीच झड़प हो सकती है। एक परिवार के सदस्यों के बीच, पत्नी और पति के बीच, पिता और पुत्रों के बीच और परिवार के अन्य सदस्यों के बीच भी ऐसी ही बातें होंगी, झगड़ा होने की सम्भावना बढ़ सकती है।

15)पंद्रहवां, मुखौटा अपराध की घटनाओं को बढ़ाता है। क्योंकि मुखौटा किसी व्यक्ति की असली पहचान को छिपा सकता है, इससे चोरों को मदद मिलती है। यहां तक कि सीसीटीवी कैमरा सही मायने में चोर की पहचान नहीं कर सकता है। यहां तक कि स्नैचिंग के रूप में रोड साइड अपराध भी बढ़ेंगे क्योंकि वे अब अधिक सुरक्षित और छिपे हुए हैं। एटीएम अपराध में और वृद्धि होगी। चोरी की घटना बढ़ेगी।

16)सोलहवां, मास्क पुलिस पर बोझ बढ़ाता है। पारिवारिक मुद्दों, सामाजिक मुद्दों, संघर्षों, चोरी, स्नैचिंग और अन्य अपराधों के कारण पुलिस को अधिक अनावश्यक मामले मिलेंगे। इन अनावश्यक मामलों से पुलिस पर भार बढ़ेगा। अगर पुलिस छोटे काम में व्यस्त हो जाएगी जैसे कि एक नागरिक को मास्क पहनने के लिए मजबूर करना और नहीं पहनने वाले व्यक्ति पर जुर्माना लगाना, तो समाज में अन्य बड़े अपराध भी बढ़ेंगे। इस देरी के कारण, पुराने मामलों की जांच में देरी होगी और पुराने अदालती मामलों के न्याय में देरी होगी।

17)सत्रहवां, मुखौटा घबराहट बढ़ाता है। इस घबराहट से अन्य बीमारी के लक्षणों का विस्तार होगा। इस घबराहट से रक्तचाप में वृद्धि या कमी हो सकती है, शर्करा के स्तर में वृद्धि या कमी हो सकती है। श्वसन संकट, मानसिक

अवसाद और कुछ व्यक्तियों में आत्मघाती विचार भी बढ़ सकते हैं।

18)अठारहवां, मास्क से पानी की मात्रा कम हो सकती है। यदि मास्क पहनने वाला व्यक्ति प्यासा है तो वह कुछ मिनटों या घंटों तक पानी पिने से बचता है। इसके कारण थकान, कब्ज, त्वचा का खराब होना, शुगर की कमी और मूत्र में कमी हो सकती है।

19)उन्नीसवां, मास्क प्रदूषण बढ़ा सकता है। मास्क के निपटान के कोई उचित तरीके नहीं हैं। लोग उन पुराने इस्तेमाल किए गए मास्क को सड़कों पर फेंक रहे हैं जो अस्वच्छ वातावरण और प्रदूषण बढ़ा रहे हैं। यह अन्य संक्रामक रोग को और फैलाएगा।

20)बीसवां, मुखौटा से समाज पर लागत बोझ बढ़ता है। मास्क 10 रुपए से लेकर 500 रुपए तक की रेंज में उपलब्ध हैं। और उन्हें प्रति 6-8 घंटे बाद बदलना या धोना और सूखाना पड़ता है; इसलिए यह जीवन जीने की लागत को बढ़ाता है। मास्क का खर्चा एक दैनिक खर्चा बन गया है जो बहुत कम लोग संभाल सकते हैं। यदि आप एन95 मास्क का चयन करना चाहते हैं तो मास्क का खर्चा आम आदमी तो छोड़िये खास आदमी तक नहीं कर पायेगा । औसतन वह INR 1000 से INR 30000 मासिक तक खर्चा जोड़ सकता है। कई परिवारों के लिए इतनी बड़ी राशि

का प्रबंधन करना आसान नहीं है। अधिक संभावनाएं हैं, लोग कई दिनों तक एक ही मुखौटे का पुन: उपयोग करने का जोखिम उठाते हैं। कुछ लोगों को भोजन और मास्क के बीच एक का चयन करना पड़ सकता है।

21)इक्कीसवां, मुखौटा हमारे देश की अर्थव्यवस्था को ध्वस्त कर सकता है। राष्ट्रीय स्तर पर, मुखौटा निश्चित रूप से आर्थिक आयामों को बाधित करेगा। देश की अर्थव्यवस्था नष्ट हो जाएगी। यदि कोई भी व्यक्ति मास्क लगाकर काम कर रहा है तो उसकी कार्य क्षमता कम हो जाएगी। मास्क पहनना, मास्क सेट करना (एक व्यक्ति आमतौर पर एक घंटे में अपने मास्क को न्यूनतम 10 बार सेट करता है), मास्क को हटाने, धोने और सुखाने की प्रक्रिया में समय की आवश्यकता होती है। इस तरह राष्ट्र का समय बर्बाद होता है। राष्ट्र की कार्य क्षमता घट जाती है। पहले से ही डॉक्टरों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले मास्क और पीपीई किट के कारण समाज में एक घबराहट की स्थिति है। सभी कारण एक साथ मिलकर देश के उत्पादन में कमी लाएंगे, जीडीपी में कमी आएगी और देश की अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो जाएगी।

दिव्यम (43): - इसका मतलब यह है कि मुखौटा न केवल बेकार हैं बल्कि हानिकारक भी हैं?

मैं: हां। आपने इसे ठीक से समझा। मास्क श्वसन संक्रमण, इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारियों या बूंदों और एयरोसोल कणों द्वारा प्रेषित श्वसन संबंधी बीमारियों को नहीं रोकता है। ज्ञान की कमी से, सरकारों को ऐसी नीतियां नहीं बनानी चाहिए जिनसे नुकसान होने की संभावना ज्यादा हो। सरकार को कॉरपोरेट को भय-आधारित भावनाओं का दोहन करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

अब हम समझ गए हैं कि वायरल श्वसन संबंधी बीमारी में मास्क पहनने का कोई ज्ञात लाभ नहीं है। ऐसा लगता है कि मास्क का मुख्य उद्देश्य लोगों में डर पैदा करना है। मास्क और पीपीई किट से समाज में घबराहट पैदा होती है और वे ऐसा करना चाहते हैं।

दिव्यम (44): - पीपीई किट क्या है?

मैं: पीपीई (PPE) किट का अर्थ है Peronal Protective Equipment अर्थात व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण। व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण एक सुरक्षात्मक कपड़े, हेलमेट, चश्मे या अन्य वस्त्र या उपकरण हैं जो पहनने वाले के शरीर को चोट या संक्रमण से बचाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

बड़े एवं गंभीर खतरों में भौतिक, विद्युत, गर्मी, रसायन, बायोहजार्ड और एयरबोर्न पार्टिकुलेट पदार्थ शामिल हैं। पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट एक सुरक्षात्मक उपकरण है जिसे एक जैविक एजेंट के संपर्क को कम करके स्वास्थ्य कर्मचारियों की सुरक्षा के

लिए बनाया गया है। वे आमतौर पर पॉलिथीन से बने होते हैं। एक बार उपयोग करने के बाद उन्हें नष्ट करने की आवश्यकता है। उनके कई नुकसान हैं।

दिव्यम (45): - पीपीई किट के क्या नुकसान हैं?

मैं: PPE किट पॉलिथीन रेन कोट की तरह है। यह प्लास्टिक सूट, काले चश्मे, हेलमेट, आपको संक्रमण से नहीं रोक सकते। पॉलिथीन के छेद का आकार कोरोना वायरस से काफी बड़ा आकार है। इसके अलावा यह आपके पूरे शरीर को ढकता है, इसलिए पर्यावरण के साथ आपका संपर्क खो जाएगा; आपका शरीर का अनुकूलन खो जाएगा। इससे पसीना, दुर्गंध, त्वचा की प्रतिक्रिया, एलर्जी की प्रतिक्रिया और प्रतिरक्षा में कमी आएगी।

अधिकांश अस्पतालों ने एसी को बंद कर दिया है, क्योंकि यह कहा जाता है कि एसी इसे फैलाएगा। इसके अलावा, आप पानी नहीं ले सकते हैं, इसलिए पानी की कमी से थकान, कब्ज, खराब त्वचा-स्वास्थ्य, चीनी की कमी और जलन हो सकती है।

इसके अलावा आपको अपने पेशाब और शौच को रोकना होगा जो आपके स्वास्थ्य को और नुकसान पहुंचाएगा। इसके अलावा मुखौटा के सभी बुरे प्रभाव यहां एक जटिल स्तर के साथ दिखाई देंगे।

दिव्यम (46): - फिर डॉक्टर पीपीई किट क्यों पहन रहे हैं?

मैं: तीन तरह के डॉक्टर होते हैं। पहली श्रेणी कम शिक्षा वाले, कम ज्ञान वाले और वे इन सभी चीजों के बारे में और अधिक जानना भी नहीं चाहते हैं। वे अध्ययन नहीं करना चाहते। उनकी अपनी स्वतंत्र विचार प्रक्रिया नहीं है। वे सिर्फ मीडिया समाचार और मीडिया ज्ञान से गुजारा कर रहे हैं। यह भेड़ चाल की तरह है। वे झूठे विश्वास में हैं।

डॉक्टरों की दूसरी श्रेणी वे हैं जो समाज में दहशत पैदा करना चाहते हैं और पीपीई किट उसके लिए बहुत अच्छे हथियार हैं। वे और अधिक पैसा कमाना चाहते हैं; वे रोगियों से अधिक शुल्क लेंगे। यह उनका लूटपाट का साधन है। वो आपदा में अवसर ढूंढ़ रहे है। उन्हें मजा आ रहा है, लोग डरते रहे एवं उनकी कमाई होती रहे ।

डॉक्टरों की तीसरी श्रेणी उन डॉक्टरों की है जो सरकारी नौकरियों में हैं। उन्हें सरकार द्वारा नकाब पहनने का आदेश दिया गया है। उन्हें सच बोलने की हिम्मत नहीं है; उन्हें सच्चाई का पालन करने की हिम्मत नहीं है। इन्हे पता है की ये निकम्मे है, अगर नौकरी चली गई तो फिर इतनी मोटी कमाई वाली नौकरी कहा मिलेगी । इनमे से ज़्यदातर भ्रस्ट है, इनकी आत्मा मर चुकी है ।

दिव्यम (47): - फिर पुलिस-कर्मी और सफाई-कर्मी पीपीई किट क्यों मांग रहे हैं?

मैं: उन्हें चिकित्सा विज्ञान का उन्नत ज्ञान नहीं है। मीडिया की खबरों से उन्हें गलत तरीके से शिक्षित किया जाता है। जब वे पीपीई किट में डॉक्टर को देखते हैं, तो उन्हें लगता है कि पीपीई किट संभवतः संक्रमण से बचाएगा। यहां तक कि मैंने एक पुलिस वाले की खबर पढ़ी है, जो पीपीई किट पहनने के बाद बेहोश हो गया था।

बल्कि मैं सरकार को पीपीई किट पर प्रतिबंध लगाने का सुझाव दूंगा क्योंकि कोरोना एक साधारण फ्लू वायरल बीमारी है जिसमें किसी विशेष सुरक्षा की आवश्यकता नहीं होती है। इसलिए पीपीई किट पहनने वाले व्यक्ति एक कोरोना योद्धा नहीं हैं, बल्कि वह दुष्ट लोगों के हाथों में खेल रहे हैं।

दिव्यम (48): - क्या डॉक्टर वास्तव में कोरोना योद्धा हैं?

मैं: नहीं। वे कोरोना योद्धा नहीं हैं। एक योद्धा, आम लोगों के कल्याण के लिए, आम लोगों के हित के लिए लड़ाई लड़ता है लेकिन यहाँ डॉक्टर लोग सामान्य रोगियों को भी नहीं देख रहे हैं। महामारी के इस समय के दौरान हमारे अस्पताल खाली पड़े हैं। लेकिन हमें झुठ-मुठ बताया गया है कि स्वास्थ्य सेवायें दबाव में हैं और वे अग्रिम पंक्ति के योद्धा हैं!

हम जानते हैं कि सोशल मीडिया पर कई वीडियो जारी किए गए थे कि लाशो के ढेर लगे हुए है, जिनका सामूहिक अंतिम

संस्कार किया जा रहा था, आपको बस यह दिखाने के लिए कि बीमारी कितनी खतरनाक है। लेकिन ये सभी खबरें फर्जी खबरें हैं। कोरोना एक साधारण वायरल बीमारी है, डॉक्टरों को इसे आम जन को बताना चाहिए। बल्कि डॉक्टर आम लोगों को डरा रहे हैं।

दिव्यम (49): - साधारण फ्लू वायरल बीमारी क्या है?

मैं: फ्लू बहती नाक, छींकने और गले में खराश जैसे लक्षणों के साथ एक आम सर्दी की तरह है। एक मामूली अंतर यह है कि आम सर्दी आमतौर पर धीरे-धीरे विकसित होती है, जबकि फ्लू कुछ हद तक अचानक आ जाता है।

फ्लू के आम लक्षण इस प्रकार हैं:

- बहती नाक, छींक
- 100.4 F से अधिक बुखार (38 डिग्री C)
- मांसपेशियों में दर्द
- ठंड लगना और पसीना आना
- सरदर्द
- सूखी खांसी, लगातार खांसी
- थकान और कमजोरी

• नाक बंद

• गले में खरास

फ्लू आमतौर पर इन्फ्लूएंजा वायरस के कारण होता है। इन्फ्लुएंजा एक वायरल संक्रमण है जो आपके श्वसन तंत्र, आपकी नाक, गले और फेफड़ों पर हमला करता है। इन्फ्लुएंजा को आमतौर पर फ्लू कहा जाता है। फ्लू होने वाले ज्यादातर लोग घर पर खुद का इलाज कर सकते हैं और अक्सर डॉक्टर को दिखाने की जरूरत नहीं होती। यह इन्फ्लुएंजा लाइक इलनेस (ILI - Influenza Like Illness) के एक स्पेक्ट्रम का एक हिस्सा है जो कि इन्फ्लुएंजा जैसी बीमारी है और कोरोना भी एक साधारण फ्लू है।

दिव्यम (50): - क्या कोवीड-19 सामान्य फ्लू के समान है?

मैं: हाँ। जनता को मीडिया द्वारा और कुछ डॉक्टरों द्वारा कोवीड-19 को फ्लू से तुलना नहीं करने के लिए बड़े पैमाने पर बताया गया था, लेकिन अब हम सच्चाई जान चुके हैं।

आइए इसकी तुलना सामान्य फ्लू से करें। नया नावेल-कोरोना वायरस और मौसमी फ्लू कई मायनों में समान हैं। दोनों श्वसन रोग हैं जो संक्रमित व्यक्ति के मुंह और नाक से तरल पदार्थ की बूंदों से फैलते हैं। दोनों संक्रामक हैं और बुखार, खांसी, मांसपेशियों में दर्द, कमजोरी जैसे समान लक्षण पैदा करते हैं। दोनों विशेष रूप

से बुजुर्गों पर अधिक प्रभाव डालते हैं। तो कोरोना एक साधारण फ्लू और आई-एल-आई (ILI) के स्पेक्ट्रम का हिस्सा है।

दिव्यम (51): - आई-एल-आई (ILI) क्या है?

मैं: आई-एल-आई (ILI) या इन्फ्लुएंजा लाइक इलनेस को फ्लू जैसे बीमारी या फ्लू जैसे सिंड्रोम के रूप में भी जाना जाता है। आई-एल-आई (ILI) में खांसी या गले में खराश के अलावा 100° F से अधिक या बराबर बुखार होता है। 1-4 दिनों की ऊष्मायन अवधि के बाद, शरीर के लक्षणों और श्वसन संकेतों की अचानक शुरुआत होती है। लक्षण आमतौर पर 5-7 दिनों तक रहता है। शरीर के लक्षणों में अस्वस्थता, शरीर में दर्द, सिरदर्द, भूख न लगना और मतली शामिल हो सकते हैं।

इन्फ्लुएंजा के चरम मौसम के दौरान 35-45% मामले आई-एल-आई के होते है। आई-एल-आई के प्रमुख वायरल एजेंटों में इन्फ्लूएंजा वायरस ए और बी, पैरा-इन्फ्लूएंजा वायरस, श्वसन सीनसीसीयल वायरस, मानव मेटा-न्यूमो वायरस, एडीनोवायरस, राइनो वायरस, एंटरो वायरस और मानव कोरोना वायरस शामिल हैं।

समाज में आई-एल-आई का होना बहुत ही सामान्य बात है। अमेरिका में आई-एल-आई की मृत्यु दर लगभग 0.1% है। कोरोना वायरस की मृत्यु दर बहुत कम है। यह 0.1% या इससे भी कम

है। युवाओं की अचानक मौत की झूठी मीडिया रिपोर्टिंग से भ्रमित न हों। यह कोरोना वायरस से जुड़ा नहीं है। इस प्रकार की अचानक होने वाली मौतों के अन्य कारण होते है ।

दिव्यम (52): - एक युवा स्वस्थ दिखने वाला व्यक्ति अचानक कैसे मर जाता है?

मैं: अचानक मरना असामान्य घटना नहीं है। यह कोरोना वायरस से संबंधित नहीं है। भारत में हर साल 13,00,000 वयस्कों की अचानक मृत्यु हो जाती है। इंडियन जर्नल ऑफ पैथोलॉजी एंड माइक्रोबायोलॉजी में प्रकाशित एक लेख का विश्लेषण करते है। आप इसे उनकी वेबसाइट - ijpmonline.com पर क्रॉस-चेक कर सकते हैं। यह लेख 07 मार्च 2011 को प्रकाशित किया गया था। 18 से 35 वर्ष के आयु वर्ग के 6453 मृत व्यक्तियों की शव-परीक्षा का विश्लेषण किया गया था। मृत्यु के समय, ये युवा व्यक्ति स्वस्थ थे और बिना किसी पूर्व बीमारी के थे।

पोस्ट मार्टम अध्ययन में पाया गया कि लगभग 54.6% व्यक्तियों की मृत्यु किसी न किसी संक्रमण के कारण हुई; वायरल, बैक्टीरियल, टीबी, हेपेटाइटिस, मलेरिया, टाइफाइड या किसी अन्य संक्रमण के कारण हो सकता है। परन्तु इन्हे इनकी जानकारी नहीं थी ।

लगभग 9.37% व्यक्तियों की मृत्यु किसी न किसी प्रकार के मस्तिष्क- सम्बंधित रोग जैसे कि ब्रेन हैमरेज, स्ट्रोक आदि से हुई थी।

हृदय संबंधी बीमारी के कारण 6.25% व्यक्तियों की मृत्यु हुई। जो हृदय से संबंधित मुद्दा है जैसे अनियमित दिल की धड़कन, दिल का दौरा, धमनी का फटना, कार्डियोमायोपैथी, इलेक्ट्रोलाइट असंतुलन, रक्त में अचानक परिवर्तन आदि।

वयस्क अचानक मृत्यु के अन्य मुख्य कारण फेफड़े की धमनी का बंद होना और सदमे हैं।

एक वेबसाइट webmd.com का कहना है कि यह अमेरिका में प्राकृतिक मौत का यह सबसे बड़ा कारण है, जिससे हर साल यूएसए में लगभग 3,25,000 वयस्क की मौत होती है। अगर हम भारत में इन आंकड़ों को प्रक्षेपित करते हैं तो हर साल 13,00,000 अचानक वयस्क मृत्यु के बारे में सोच सकते हैं। तो हर साल ऐसा होता है; भारत में 13,00,000 वयस्क मृत्यु और वह भी अचानक मृत्यु; हर महीने अचानक 1,08,000 मौतें और हर दिन 3600 अचानक मौतें होती हैं।

लेकिन मीडिया कभी ये सब नहीं बताता। यदि इनमें से किसी की मृत्यु से ठीक पहले कोरोना के लिए परीक्षण किया जाता है और सकारात्मक पाया जाता है, तो मीडिया बहुत बड़ा रोना रोएगा कि

यह अचानक मृत्यु कोरोना के कारण है। दूसरी ओर यह कोरोना के कारण नहीं है, यह कुछ व्यक्तियों के लिए मृत्यु का एक सामान्य तरीका है।

दिव्यम (53): - कोरोना से इतने लोग क्यों मर रहे हैं?

मैं: आपको कभी पता नहीं चलेगा कि लोग कोरोना या किसी अन्य बीमारी से मर रहे हैं। एक परीक्षण है जो आर-टी-पी-सी-आर (rtPCR) परीक्षण कहलाता है। यह परीक्षण अत्यधिक गलत है। अशुद्धि 1% से 40% या उससे अधिक की सीमा में हो सकती है। कोरोना के साथ मरने और कोरोना से मरने के बीच बहुत अंतर है।

दिव्यम (54): - क्या एक कोरोना संक्रमण से मुक्त हुआ व्यक्ति फिर से संक्रमित हो सकता है?

मैं: यदि आप फ्लू से ठीक हुए हैं, तो आप पुन: फ्लू से संक्रमित हो सकते हैं। यदि आप टीबी से ठीक हुए हैं, तो आप पुन: टीबी से संक्रमित हो सकते हैं। किसी भी तरह के संक्रमण से मुक्त हुए व्यक्ति के पुन: संक्रमण की संभावना हमेशा रहती है। यदि उपचार के साथ या उसके बिना एक कोरोना पॉजिटिव व्यक्ति कोरोना नकारात्मक हो जाता है, तो फिर से संक्रमण की संभावना हमेशा बनी रहती है।

यह एक सामान्य बात है एवं सभी बीमारियो पे लागु होती है। यह कोई असामान्य घटना नहीं है। तो यह एक संक्रमण की गंभीरता का संकेत नहीं है। जीतनी पुनः सक्रमण की सम्भावना किसी अन्य बीमारी में होती है, उतनी ही सम्भावना कोरोना में पुनः सक्रमण की होती है। इसके अलावा कोरोना या नावेल कोरोना कम संक्रामक दर वाली बीमारी है।

दिव्यम (55): - यदि कोरोना तेजी से नहीं फैल रहा है, तो संक्रमित व्यक्तियों की संख्या क्यों बढ़ रही है?

मैं: यह कोरोना परीक्षण के कारण है। जहा टेस्ट है वहा कोरोना है। यदि आप अधिक परीक्षण करेंगे तो अधिक संख्या में सकारात्मक परीक्षण आएगा। और क्योंकि वे प्रत्येक मामले को संचयी रूप से जोड़ रहे हैं इसलिए यह संख्या बढ़ रही है। वे संख्या जोड़ रहे हैं। यहां तक कि उन रोगियों को, जिन्होंने सुधार कर लिया है। जिन्हें सकारात्मक से नकारात्मक रूपांतरित किया गया है, उन्हें कुल टैली से नहीं हटाया गया है। यह इस खेल का बड़ा हिस्सा है।

यदि आप दुनिया के सभी लोगों का परीक्षण करते हैं, तो आप विश्व की 400 अरब या लगभग आधी आबादी को कोरोना सकारात्मक मान सकते हैं। कोरोना पॉजिटिव का मतलब कोरोना मरीज नहीं है। पहले आपको किसी बीमारी का संदेह होता है और

फिर आप उसका परीक्षण करते हैं। यहां हम एक रिवर्स मेडिकल प्रैक्टिस का पालन कर रहे हैं। यहाँ हम तथाकथित कोरोना मामलों का पता लगाने के लिए पहले सामान्य व्यक्तियों का परीक्षण कर रहे हैं। लोग बीमार नहीं पड़ रहे है हम स्वथ्य व्यक्ति का टेस्ट करके उस बता रह है की वो बीमार है जबकि वो बीमार नहीं है, वो संक्रमित नहीं है।

दिव्यम (56): - क्या कोरोना अत्यधिक संक्रामक है?

मैं: नहीं। एक अधिक संक्रामक बिमारी का 'आरशून्य' (आरशून्य = R-नॉट = R-Naught = R0) अधिक होता है। और कोरोना में R0 कम है, इसलिए यह अत्यधिक संक्रामक नहीं है। इसके अलावा इसकी मृत्यु दर बहुत कम है, इसलिए यह एक घातक बीमारी नहीं है। यह दुनिया की अर्थव्यवस्था को नष्ट करने के लिए, उनके कई छिपे हुए एजेंडों को प्राप्त करने के लिए एक नई गेम योजना है, नई विश्व व्यवस्था स्थापित करना उनमें से एक है।

दिव्यम (57): - 'आरशून्य' क्या है?

मैं: R0, जिसका उच्चारण 'आर नॉट' (R-naught) है, एक गणितीय शब्द है जो बताता है कि कोई संक्रामक बीमारी कितनी संक्रामक है। इसे प्रजनन संख्या के रूप में भी जाना जाता है।

जैसा कि एक संक्रमण नए लोगों में फैलता है, यह खुद को पुन: पेश करता है। कुछ बीमारियों का 'आरशून्य' इस प्रकार है -

- खसरा के लिए R0 12 से 18 तक होता है,
- क्षय रोग के लिए R0 5 से 20 तक होता है,,
- मानव कोरोना के लिए R0 1 से 4.4 तक होता है,
- इन्फ्लूएंजा के लिए R0 0.9 से 2.1 तक होता है,
- कोवीड-19 के लिए R0 1.0 से 2.2 तक होता है,

तो आप यहाँ देख सकते हैं कि कोवीड-19 के लिए 'आर नॉट' (R-naught), इन्फ्लुएंजा के 'आर नॉट' (R-naught) के आसपास है, जो कि आम फ्लू है।

दिव्यम (58): - कोवीड-19 का 'आरशून्य' अधिक नहीं है, फिर वायरस इतनी तेजी से क्यों फैल रहा है?

मैं: आपको एक विशेष बिंदु पर ध्यान देना चाहिए। मानव कोरोनावायरस का R0 वास्तव में नॉवेल कोरोनवायरस (या कोवीड-19) की तुलना में अधिक (2.7 ± 1.7) है। जबकि नॉवेल कोरोनावायरस का उच्चतम R0 सिर्फ 2.2 है जो वास्तव में ह्यूमन कोरोनावायरस से कम है। इसलिए व्यावहारिक रूप से इसे तेजी से नहीं फैलाना चाहिए। और वास्तव में यही सच है।

कोवीड-19 वास्तव में तेजी से नहीं फैल रहा है, यह सिर्फ मीडिया के कारण है। मीडिया भय की स्थिति पैदा करने के लिए क्रिकेट

कमेंट्री की तरह हर मामले की रिपोर्ट कर रहा है। उन्हें इसके लिए भुगतान किया गया होगा।

नैदानिक परीक्षण यानी, आरटी-पीसीआर और सीरोलॉजिकल परीक्षण अत्यधिक गलत हैं। पेटाह टिकवा के बेइलिन्सन अस्पताल में संक्रामक रोग इकाई के निदेशक प्रो. जिहाद बिशारा ने कहा कि "इजरायल और विदेश में जो लोग संक्रमित हैं वे अधिकांश बीमार होने के बावजूद भी ठीक हो जाएंगे, उन्हें पता भी नहीं चलेगा कि वो कब बीमार हुए और कब ठीक हुए और वैश्विक आतंक अनावश्यक और अतिरंजित है ।"

दिव्यम (59): - क्या क्षय रोग (टी.बी. = T.B.) कोरोना से ज्यादा मारक है?

मैं: टी.बी. हर साल औसतन 5 लाख भारतीयों को मारता है। टी.बी. का R0 लगभग 5 से 20 है, इसलिए यह नावेल कोरोना से अधिक खतरनाक है। आगे टी.बी. की मृत्यु दर उच्च है, नावेल कोरोना से ज्यादा ही नहीं बल्कि बहुत ज्यादा है। जब हमने एक डॉक्टर के रूप में तपेदिक के रोगियों के साथ बातचीत की, उनका इलाज शुरू किया, तो टी.बी. अस्पतालों में, हमें कभी भी मास्क या उन बॉडी सूट पहनने के लिए नहीं कहा गया था जैसा कि हम आज देख रहे हैं।

हम कोरोनोवायरस जैसे हल्के संक्रमण से क्यों मूर्ख बन रहे हैं? कई लोगों को शुरू से ही इस महामारी के बारे में संदेह था और अब उनकी संख्या कई गुना बढ़ गई है। यह सरकारों, प्रशासन, पुलिस और स्वास्थ्य अधिकारियों के बारे में पागल कुत्ते की तरह व्यवहार करने के लिए काफी विरोधाभास लगता है।

हम इस तथ्य को जानते हैं कि तपेदिक (टीबी) हमारे देश पर ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में एक बहुत बड़ा बोझ है। भारत में तपेदिक के कारण वार्षिक मृत्यु 4,40,000 से 5,00,000 है। कोवीड-19 की तुलना में टीबी भी 8 गुना अधिक संक्रामक और 8 गुना अधिक घातक है। इसलिए अगर मास्क, सामाजिक भेद, संगरोध (क्वरेंटाइन) और आत्म-अलगाव वास्तव में काम करते हैं, तो हमें टीबी को हराने के लिए इन सभी उपायों को अपनाना चाहिए।

दिव्यम (60): - लेकिन टी.बी. का इलाज है जबकि कोवीड-19 का नहीं है; क्या यह महत्वपूर्ण नहीं है?

मैं: जवाब यह है कि किसी भी फ्लू का कोई निश्चित इलाज नहीं है। बल्कि यह सब एक नया बाजार बनाने के बारे में है। यह सब एक नया बाजार खड़ा करने का षड़यंत्र है । मीडिया टी. बी. के बारे में नहीं बता रहा है। क्योंकि टी.बी. के लिए नैदानिक और दवा बाजार पहले से ही विकसित किया जा चुका है। अब मीडिया, फार्मा उद्योग के लिए नए बाजार बनाना चाहता है जिन्होंने उन्हें

बहुत बड़ा भुगतान किया गया। कोविड, क्षय रोग से 8 गुना कम संक्रामक और 8 गुना कम मारक है, इसलिए हमें इस तरह के कठोर उपायों की आवश्यकता नहीं है।

दिव्यम (61): - क्या कोरोना वायरस पर तापमान का कोई प्रभाव होता है?

मैं: ये लोग अफवाह फैला रहे हैं। पहले उन्होंने मार्च के महीने में बताया था, तत्काल लॉक डाउन की आवश्यकता है। और वायरस मई और जून के महीने में उच्च तापमान पर 'कम शक्तिशाली' होगा। बाद में अप्रैल में उन्होंने बताया कि मई और जून में शिखर आएगा, इसलिए लॉकडाउन के विस्तार की आवश्यकता है। अब वे बता रहे हैं कि जुलाई और अगस्त के महीने में शिखर आ जाएगा और संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए आंशिक लॉकडाउन, कन्टेनमेंट जोन, सामाजिक अलगाव और मास्क की आवश्यकता है।

यह आगे बढ़ेगा, बाद में वे कहेंगे, चोटी नवंबर और दिसंबर के महीने में आएगी और नवंबर / दिसंबर में वे कहेंगे कि चोटी जनवरी और फरवरी में आएगी। या हो सकता है ये लोग इस बीमारी की दूसरी चोटी की बात करे और कहे की अब झाड़ो में दूसरी लहर आ गई है । यह संभव है की ये लोग सर्दी के मौसम में एक झूठी दूसरी लहर ले के आये। और यह भी संभव है की ये

लोग अफवाह फैलायगे की दूसरी लहर पहली लहर से चार गुना ज्यादा खतरनाक है ताकि डरे हुए लोग और अधिक दर जाये एवं स्वेच्छा से टीके लगवाने के लिए तैयार हो जाये ।

मुझे लगता है, उनका खेल, भय के वातावरण को बनाए रख के राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था को नष्ट करने की योजना का है।

दिव्यम (62): - लेकिन क्या कोवीड-19 नया रोग नहीं है?

मैं: नहीं, यह सच नहीं है। कोवीड-19 की संरचना इन्फ्लूएंजा के समान है। कोवीड-19 केवल एक और सामान्य फ्लू वायरस बीमारी है, इसलिए घबराने की जरूरत नहीं है। भारत में सिर्फ टीबी ही नहीं बल्कि सांस की अन्य बीमारियों और इंफ़्लुएंज़ा जैसी बीमारियों का कुल बोझ कोवीड-19 की तुलना में बहुत अधिक है, साथ इनकी मारक क्षमता भी कोवीड-19 की तुलना में बहुत अधिक है।

मुख्य मीडिया द्वारा हमारे सामने बार-बार पीपीई किट को फ्लैश किया जा रहा है, यह एक भयावह तरीका है। यह हमें बार-बार यह याद दिलाने के लिए है कि यह वायरस बहुत खतरनाक है और हमें इस घातक खतरे से खुद को सुरक्षित रखने के लिए अधिकारियों, पुलिस और सरकार के हाथों में अपनी स्वतंत्रता और नागरिक अधिकारों को छोड़ देना चाहिए। शिक्षा के नाम पर लोगों

को भयभीत करने के लिए भारतीय मीडिया को बेतहाशा भुगतान किया गया है।

दिव्यम (63): - तो फिर अमेरिका में इतने सारे मामले क्यों हैं?

मैं: ऐसा कई कारणों से है। सीडीसी ने पूरे अमेरिकी जनता को और सभी दुनिया की आबादी को धोखा दिया है। सीडीसी कहता है कि यह एक गलती थी, लेकिन यह एक गलती नहीं थी, बल्कि एक गेम-प्लान की गणना के अनुसार की गई चाल थी। हार्वर्ड में ग्लोबल हेल्थ के प्रोफेसर के. टी. ली और हार्वर्ड ग्लोबल हेल्थ इंस्टीट्यूट के निदेशक आशीष झा ने पूछा, "सीडीसी यह गलती कैसे कर सकती है? यह एक गड़बड़ी है, गलती नहीं।"

इसके अलावा, जैसा कि आप अब जानते हैं, परीक्षण किट अत्यधिक गलत हैं। इसलिए वे उन व्यक्तियों पर सकारात्मक परिणाम दे सकते हैं, जो वास्तव में कोरोना रोगी नहीं हैं।

अब आप सीडीसी को एक घोटाला संगठन कह सकते हैं। सीडीसी, डॉ. फौसी, मीडिया, इलाज करने वाले डॉक्टरों ने जान बूझकर उच्च संख्या के मामलों का भ्रम पैदा किया है।

दिव्यम (64): - सीडीसी घोटाला क्या है?

मैं: यह कहा जाता है कि सीडीसी - सेंट्रल फॉर डिजीज कंट्रोल ने एक गड़बड़ की है। बहुत बड़ी गड़बड़। एजेंसी ने पुष्टि की कि यह

दो अलग-अलग परीक्षणों, वायरल पीसीआर परीक्षणों और एंटीबॉडी परीक्षणों के परिणामों को मिला रहा है, जोड़ रहा है। जबकि दोनों परीक्षण अलग-अलग जानकारी प्रकट करते हैं और विभिन्न कारणों से उपयोग किए जाते हैं।

एक ही व्यक्ति के यदि एक से ज्यादा बार परीक्षण सकारात्मक आते है तो इनको जोड़ा जा रहा है। इनको नये केस बताये जा रहे है। और इस फ़र्ज़ी तरीके से भी केस की संख्या बढ़ाई जा रही है। लेकिन बड़ा खेल दो अलग-अलग परीक्षणों के परिणामों को मिलाने का हो रहा है। उन्होंने एक ही रोगी पर दो अलग-अलग परीक्षणों का परिणाम जोड़ा; पीसीआर और एंटीबॉडी परीक्षण और उन्हें एक ही टैली में रखा। दो परीक्षणों के संयोजन ने मामलों की संख्या में भारी वृद्धि की है।

यह गलत तरीके से बढाई गई संख्या वे हर कुछ मिनटों के बाद टीवी स्क्रीन पर दिखा रहे हैं, दिन में कई बार। यह बढाई गई संख्या; मीडिया, सरकार और संबंधित खिलाड़ी टीवी मीडिया पर या अखबारों में आम लोगों को डराने, मास्किंग, सामाजिक भेद, तालाबंदी और अर्थव्यवस्था को फिर से खोलने से रोकने के लिए दिखाते थे।

बस जब अमेरिका में गवर्नर अपनी अर्थव्यवस्थाओं को फिर से खोलने की कोशिश कर रहे हैं, तो सीडीसी ने धोखा-धड़ी

करके केसेस की संख्या का आकड़ा विशाल कर दीया। इस धोखे ने उन्हें अर्थव्यवस्था को बंद करने के लिए मजबूर किया। इस तरह सीडीसी अधिकारियों, वैज्ञानिकों और पदाधिकारियों के भ्रष्ट होने के कारण लाखों अमेरिकियों को आर्थिक तबाही का सामना करना पड़ा।

इसलिए, मैं कह रहा हूं कि यह सीडीसी द्वारा गलती नहीं थी, बल्कि यह एक गेम था। उन्होंने यह गलत धारणा बनाने में कामयाबी हासिल की कि निरपेक्ष केस संख्या इससे अधिक होनी चाहिए।

मैंने कुछ लोगों को यह कहते हुए सुना है कि इस सुपर गेम के पीछे बहुत सारे लोग हैं जिनमें डॉ.फौसी, बिल गेट्स, रॉकफेलर, नील फर्ग्यूसन आदि शामिल हैं।

दिव्यम (65): - नील फर्ग्यूसन कौन है?

मैं: नील फर्ग्यूसन अपने आप को एक कंप्यूटर विश्लेषक कहता है। या तो वह सुपर बेवकूफ है या वह इस खेल के पीछे शामिल लोगों के साथ है। नील फर्ग्यूसन ने एक कंप्यूटर मॉडल द्वारा यूके और यूएस में कोवीड मौतों की भविष्यवाणी की थी।

नील फर्ग्यूसन ने कंप्यूटर मॉडल द्वारा बताया कि यूके में 5,00,000 कोवीड मौतों होंगी और यूएस में 22,00,000 कोवीड मौतों होंगी।

2020 में, यूके में 5,00,000 कोवीड मौतों और यूएस में 22,00,000 कोवीड मौतों के अनुमानों का उपयोग कई देशों ने लॉकडाउन को सही ठहराने के लिए किया। नील फर्ग्यूसन ने एक भयावह अतिशयोक्ति की है। उसका ट्रैक रिकॉर्ड पता लगाना चाहिए, उसकी जांच होनी चाहिए।

ये लोग झूठ बोल रहे हैं, झूठे आंकड़े प्रस्तुत कर रहे हैं, महामारी का भ्रम पैदा करने के लिए अतिरंजित संख्या दे रहे हैं, ताकि झूठी महामारी का डर पैदा हो सके। कुछ लोग बिल गेट्स की तरह एक ही बात बार-बार बोल रहे हैं; टीका, टीका, टीका। ऐसा इसलिए है क्योंकि शायद उसने इन वैक्सीन कंपनियों में निवेश किया है।

दिव्यम (66): - टीके (वैक्सीन) क्या हैं?

मैं: वैक्सीन एक जैविक रक्षा प्रणाली है जो एक विशेष संक्रामक रोग के खिलाफ प्रतिरक्षा प्रदान करती है। वैक्सीन में आमतौर पर एक एजेंट होता है जो रोग पैदा करने वाले सूक्ष्मजीव ही होता है है। यह अक्सर माइक्रोब एजेंट के कमजोर या मारे गए रूपों से बनता है। कभी-कभी सूक्ष्म जीव के बजाय, इसके विषाक्त पदार्थों या इसकी सतह के प्रोटीन में से एक का उपयोग किया जाता है।

आमतौर पर टीकों में वही कीटाणु होते हैं जो बीमारी का कारण होते हैं। उदाहरण के लिए, खसरे के टीके में खसरा वायरस होता

है। लेकिन वे या तो मारे गए होते हैं या उस स्तर तक कमजोर होते हैं कि वे आपको बहुत बीमार नहीं बनाते हैं।

दिव्यम (67): - टीके बीमारी को कैसे रोकते हैं?

मैं: एक टीका आपके शरीर में एंटीबॉडी का उत्पादन करने के लिए आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित करता है। यह कुछ ऐसा है जैसे अगर आप बीमारी के संपर्क में आएंगे तो होगा। परन्तु टीका लगने के बाद, आप पहले रोग प्राप्त किए बिना, उस रोग के प्रति प्रतिरक्षा विकसित कर लेते हैं। लेकिन टीके आपको कृत्रिम प्रतिरक्षा प्रदान करते हैं, वे प्राकृतिक प्रतिरक्षा प्रदान करने में सक्षम नहीं हैं।

जब टीके को वसायुक्त ऊतक या मांसपेशियों में इंजेक्ट किया जाता है या मौखिक रूप से दिया जाता है, तो वैक्सीन एंटीजन रोग के गंभीर लक्षण और संकेत उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं होते हैं, लेकिन प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए उनके खिलाफ एंटीबॉडी का उत्पादन करने के लिए पर्याप्त मजबूत होते हैं। जब वे बीमारी के कीटाणु या जीवाणु भविष्य में दोबारा हमला करते हैं, तो स्मृति कोशिकाएं पुन: संक्रमण को रोकती हैं। इस प्रकार, टीकाकरण के माध्यम से, बच्चे वास्तविक बीमारियों से गंभीर रूप से पीड़ित हुए बिना प्रतिरक्षा विकसित करते हैं। इस तरह टीके बीमारी को रोकते हैं।

प्रत्येक बच्चा एक प्रतिरक्षा प्रणाली के साथ पैदा होता है जो विभिन्न प्रकार की कोशिकाओं, ग्रंथियों, अंगों और तरल पदार्थों से बना होता है। ये प्रतिरक्षा प्रणाली हमलावर बैक्टीरिया, वायरस, फंगस और अन्य कीटाणुओं से लड़ने के लिए हमारे पूरे शरीर में स्थित होती हैं। प्रतिरक्षा प्रणाली उन कीटाणुओं को पहचानती है जो शरीर में विदेशी पदार्थ के रूप में प्रवेश करते हैं। इन कीटाणुओं की सतह पर एंटीजन होते हैं और हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली इस एंटीजन को पहचानती है और फिर उनसे लड़ने के लिए प्रोटीन पदार्थ बनाती है। इन पदार्थों को एंटीबॉडी कहा जाता है। वे एंटीजन से लड़ते हैं और उन्हें बेअसर करते हैं। कोशिकाएं जो एंटीबॉडी का उत्पादन करती हैं वे बाद में मेमोरी सेल (स्मृति कोशिकाएं) बन जाती हैं।

दिव्यम (68): - मेमोरी सेल क्या हैं?

मैं: एक सामान्य स्वस्थ प्रतिरक्षा प्रणाली में, हर साल लाखों हमलों से लड़ने के लिए लाखों एंटीबॉडी बनाने की क्षमता होती है। हमें यह पता भी नहीं चलता है कि हम पर हमला किया जा रहा है और हमारा शरीर प्रतिरक्षा प्रणाली द्वारा बचाव कर रहा हैं। एक बार आक्रमणकारी प्रतिजनों को नष्ट करने के बाद कई एंटीबॉडी गायब हो जाते हैं। एंटीबॉडी के उत्पादन में शामिल कोशिकाएं मेमोरी सेल बन जाती हैं। मेमोरी कोशिकाएं मूल

प्रतिजन (Antigen) को याद करती हैं। यह दुबारा हमला होने पर तुरंत एंटीजन को पहचान जाता है और फिर से लड़ता है।

मेमोरी कोशिकाएं मूल प्रतिजन को याद करती हैं। यह हमला होने पर तुरंत एंटीजन को पहचानता है और फिर इसके खिलाफ लड़ता है। यह वे प्रारंभिक हमले की तुलना में जल्दी और दृढ़ता से करते हैं चाहे प्रतिजन कई वर्षों के बाद भी एक व्यक्ति को फिर से संक्रमित करने का प्रयास करता हो। इस सुरक्षा प्रणाली को प्रतिरक्षा प्रणाली कहा जाता है। और इस प्रक्रिया में शामिल कोशिकाओं को मेमोरी सेल कहा जाता है।

प्राकृतिक संक्रमण या टीके द्वारा कृत्रिम संक्रमण पर कुछ कोशिकाएं मेमोरी सेल बन जाएंगी। टीके मूल रूप से एक प्रतिरक्षा ही प्रदान कर रहे हैं जो हमें प्राकृतिक संक्रमण पर मिलता है।

दिव्यम (69): - फिर हमें कोरोना वायरस के खिलाफ टीका क्यों विकसित नहीं करना चाहिए?

मैं: हमारे आस पास लाखों प्रकार के कीटाणु हैं तो आप कितने टीके विकसित करेंगे? स्वाभाविक रूप से लाखों प्रकार के टीकों को विकसित करने की आवश्यकता है। अधिकांश टीकों को एक से अधिक खुराक की आवश्यकता होती है। इसलिए फिर सभी बीमारियों से बचाने के लिए लाखों टीकों की खुराक के गुणकों की खुराक को देना पड़ेगा। क्यों हम अपने छोटे से नवजात शिशुओं

को इन सभी लाखों संक्रमित एजेंटों को चुभाना चाहते हैं जबकि हम प्राकृतिक प्रतिरक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं।

डब्ल्यूएचओ के एक पूर्व निदेशक, प्रोफेसर करोल सिकोरा ने कहा कि कोरोनावायरस स्वाभाविक रूप से ठीक हो सकता है इसलिए टीका की अब आवश्यकता नहीं है। सिकोरा ने कहा "एक वास्तविक मौका है कि वायरस किसी भी वैक्सीन के विकसित होने से पहले स्वाभाविक रूप से जल जाएगा" अर्थात स्वाभाविक रूप से ठीक हो जाएगा ।

अगर तुम्हें लगता है कि टीके सभी तरह के संक्रमण के लिए हैं तो यह संभव नहीं है। इसलिए मानव जाति को टीके के लिए एक बहुत घातक बीमारी पर ही ध्यान देना चाहिए। हमें फ्लू से कम मृत्यु दर के संक्रमण के लिए एक टीका क्यों विकसित करना चाहिए? टीकों के हानिकारक प्रभाव भी हैं?

दिव्यम (70): - टीके के हानिकारक प्रभाव क्या हैं?

मैं: एक सैन्य अध्ययन किया गया था। यह अध्ययन दिखाता है कि फ्लू का टीका प्राप्त करने वाले सैन्य कर्मियों को फ्लू के खिलाफ केवल एक छोटे से लाभ के साथ कोरोनोवायरस का खतरा 36 प्रतिशत बढ़ गया था। सार्स (SARS) वैक्सीन टीकाकरण के साथ, जो हमें वायरस से बचाने के लिए दिया जाता है, वास्तव में

हमें उसी सार्स (SARS) कोरोनावायरस से संक्रमण के लिए और अधिक संवेदनशील बनाता है।

यदि सभी को टीका लगाया जाता है, तो हम में से हर एक को जल्द ही ऐसे टीके लगाए जाएंगे जो दूषित भ्रूण या मानव भ्रूण कोशिकाओं या पशु भ्रूण कोशिकाओं से लिए गए डीएनए या आरएनए हैं।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि टीका कैंसर का कारण बनता है। हमारे पास इस मामले पर उचित अध्ययन नहीं है लेकिन यह सच हो सकता है। कुछ लोगों द्वारा यह भी कहा जाता है कि टीके ऑटिज्म का कारण बनते हैं।

दिव्यम (71): - ऑटिज्म क्या है?

मैं: ऑटिज्म एक गंभीर विकासात्मक विकार है जो दूसरों के साथ संवाद करने और बातचीत करने की क्षमता को बाधित करता है। ऑटिज़्म, या ऑटिज़्म-स्पेक्ट्रम-डिसऑर्डर (एएसडी- ASD); सामाजिक कौशल, दोहराए जाने वाले व्यवहार, भाषण और गैर-मौखिक संचार के साथ चुनौतियों की विशेष स्थितियों की एक विस्तृत श्रृंखला को संदर्भित करता है, जिसमे पीड़ित बच्चा बाधा अनुभव करता है। सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल के अनुसार, संयुक्त राज्य अमेरिका में ऑटिज्म आज 54 बच्चों में अनुमानित 1 को प्रभावित करता है, जो कुछ दशक पहले बहुत कम था।

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है और प्रभावित व्यक्ति के समग्र संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक और शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। लक्षणों की सीमा और गंभीरता व्यापक रूप से भिन्न हो सकती है। सामान्य लक्षणों में संचार के साथ कठिनाई, सामाजिक बातचीत के साथ कठिनाई, जुनूनी हितों और दोहराव वाले व्यवहार शामिल हैं। प्रारंभिक अवस्था में बीमारी की पहचान होने से व्यवहारिक, शैक्षिक और पारिवारिक उपचार लक्षणों को कम कर सकते हैं और विकास और सीखने का समर्थन कर सकते हैं।

टीके ऑटिज्म और कैंसर का कारण बनते हैं। टीके अन्य विकारों को प्रेरित कर सकते हैं या अन्य बीमारियों की गंभीरता को बढ़ा सकते हैं। इसलिए हमें किसी ऐसी हल्की बीमारी का टीका नहीं लगाना चाहिए जिसकी मृत्यु दर बहुत कम हो।

दिव्यम (72): - इस कोवीड-19 की सही मृत्यु दर क्या है?

मैं: मुझे लगता है कि इसकी मृत्यु दर सामान्य सर्दी या फ्लू की तरह है। तो यह सिर्फ 0.1% है या इससे भी बहुत कम हो सकता है।

यूके सरकार ने जनवरी 2020 में एक बयान जारी किया था जिसमें दावा किया गया था कि अमेरिका में 22,00,000 मौतें और ब्रिटेन में 5,00,000 मौतें होंगी। कोवीड को तब 'उच्च परिणामक

संक्रामक रोग' (HCID - High Consequence Infectious Disease) का दर्जा दिया गया था। 2 महीने के बाद, उसी ब्रिटेन सरकार ने फिर अपना विचार बदल दिया।

19 मार्च 2020 को उन्होंने चुपचाप इसे उच्च परिणाम संक्रामक रोग (HCID - High Consequence Infectious Disease) से हटा दिया और इसे एक सामान्य वायरस की श्रेणी में डाल दिया और उल्लेख किया कि इसके लिए किसी विशेष उपचार की आवश्यकता नहीं है। यह निष्कर्ष द न्यू एंड इमर्जिंग रेस्पिरेटरी वायरस थ्रेटस एडवाइजरी ग्रुप (एन-ई-आर-वी-टी-ए-जी) द्वारा किया गया जिसमें 16 वैज्ञानिक शामिल हैं।

26 मार्च को, न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ़ मेडिसिन में एक रिपोर्ट सामने आई, जिसमें बताया गया कि कोवीड-19 उतना घातक नहीं है जितना कि हम इसे होने की उम्मीद करते हैं और इसकी मृत्यु दर 0.1% है जो सामान्य फ्लू के बराबर है । हां, शून्य दशमलव एक प्रतिशत मृत्यु दर। यह सभी बिके हुए मीडिया हैं जिन्होंने इस महामारी का निर्माण किया है; बल्कि इसे मीडिया-डेमिक नाम दिया जाना चाहिए।

दिव्यम (73): - क्या मीडिया पक्षपाती है?

मैं: मीडिया को बहुत अधिक भुगतान किया जाता है। सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में मीडिया को सर्वाधिक भ्रस्ट

संस्था के रूप में जाना है। जरा सोचिए कि मृत्यु दर केवल 0.1% है। इसका क्या मतलब है? अगर 1000 लोग वायरस से बीमार पड़ते हैं तो केवल 1 व्यक्ति की मृत्यु होगी। हाँ, हजार में से केवल एक ही मरेगा। यह 0.1% मृत्यु दर भी आंकड़ा गलत और घातक दवाओं और डर के माहौल के बाद है।

ज़रा सोचिए, अगर आप खतरनाक ड्रग ट्रायल और डर के इस माहौल को हटा दें तो मृत्यु दर 0.01% हो सकती है, जो सामान्य फ्लू से बहुत-बहुत कम है। लेकिन पेड मीडिया यह कहते हुए हाहाकार मचा रहा है कि दुनिया भर में बहुत से लोग घातक वायरस से मर रहे हैं।

हम सभी संगीत के साथ भयभीत पृष्ठभूमि वाले समाचार देख रहे हैं। हम इस खतरनाक वायरस को नियंत्रित करने की कोशिश में मास्क और पीपीई किट में इधर-उधर भागते हुए लोगों के साथ खबरें देख रहे हैं। मीडिया इस तरह दिखा रहा है कि प्रशासन और पुलिस इस बेकाबू बीमारी को नियंत्रित करने के लिए बड़े प्रयास कर रहे हैं।

दरअसल मीडिया आपको मुर्ख बना रहा है। इतने मरीज कोवीड-19 से नहीं मर रहे हैं। कोवीड-19 के साथ बहुत मामूली संख्या में मृत्यु हो सकती है। जो लोग मर रहे हैं वे अन्य गंभीर सह-रुग्णताएं से पीड़ित थे। उनके पास पहले से ही अन्य गंभीर

स्वास्थ्य समस्याएं थी और यदि वे आरटी-पीसीआर परीक्षण के साथ मर जाते हैं, जिसके नतीजे अत्यधिक गलत है तो कोवीड-19 को सकारात्मक दिखाते हुए उन्हें कोवीड-19 के कारण मृत्यु के रूप में गिना जा रहा है।

इसलिए निश्चित रूप से मीडिया पक्षपाती है। यह सब बिकाऊ मीडिया का प्रोपेगेंडा है। यह सब एक नया बाजार विकसित करने के लिए किया जाता है।

दिव्यम (74): - क्या मीडिया का उपयोग एक नया बाजार विकसित करने के लिए किया जा रहा है?

मैं: हां। उनका उपयोग किया जा रहा है या आप कह सकते हैं कि उन्होंने अपनी आत्मा बेच दी है। अब आपको दुनिया में कहीं भी स्वतंत्र और निष्पक्ष मीडिया नहीं मिलेगा।

मीडिया द्वारा प्रारंभ में इटली में मृत्यु दर 10% बताई गई थी। इटली में एक अध्ययन किया गया था, जहां पाया गया कि बिना किसी अन्य बीमारी के साथ, कोवीड-19 से मरने वालो की संख्या 10% में से केवल 1.2% ही थी ।

मीडिया ने हमें क्या बताया। मीडिया ने इटली में 10% की मृत्यु दर बताई, लेकिन वास्तविक आंकड़े इस 10% के 1.2% हैं, अर्थात वास्तविक मृत्यु दर हुई केवल 0.12% । अधिकांश सामान्य सह-रुग्णताएँ इस्केमिक हृदय रोग, एट्रियल फ़िब्रिलेशन, स्ट्रोक, उच्च

रक्तचाप, मधुमेह, मनोभ्रंश, सी-ओ-पी-डी, कैंसर, क्रोनिक यकृत रोग, क्रोनिक किडनी रोग इत्यादि हैं। कोरोना से पहले भी लोग इन बीमारियों से मर रहे थे। लेकिन मीडिया इन मौतों को कोरोना से लेबल कर रहा है।

मीडिया ने हम सभी को इतना भयभीत कर दिया है कि कुछ लोग वैक्सीन का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। वे सोच रहे हैं कि केवल टीका ही हमें बचा सकता है। यही उनकी खेल योजना थी; वे जन-जन की सोच, उनके व्यवहार और निर्णय लेने की प्रक्रिया को बदलना चाहते थे। अब मीडिया की मदद से उन्होंने अपने उत्पाद के आविष्कार से पहले ही एक बड़ा बाजार बनाने का अपना लक्ष्य हासिल कर लिया है।

दिव्यम (75): - कुछ लोगों को वैक्सीन में इतनी अधिक दिलचस्पी क्यों है?

मैं: इन लोगों को मीडिया द्वारा भ्रमित गया है। अब कुछ लोग सिर्फ इतनी कम मृत्यु दर वाली बीमारी के लिए भी वैक्सीन चाहते हैं। लोग इतने अधिक अस्पष्ट, भ्रमित, भयभीत, अशांत और अस्त-व्यस्त हैं कि वे किसी भी तरह से और किसी भी कीमत पर जल्द से जल्द एक समाधान चाहते हैं।

उन्हें मीडिया और अन्य खिलाड़ियों द्वारा गलत तरीके से इतना आश्वस्त किया गया है कि वे यह सोचकर टीका लगावाने के लिए

तैयार हैं कि इससे वर्तमान भय की स्थिति समाप्त हो जाएगी। वे नौकरी पर वापस जाना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि सब कुछ जल्द से जल्द फिर से खोल दिया जाए।

इन लोगों को इसकी प्रभावकारिता और सुरक्षा के बारे में झूठा विश्वास दिलाया गया है। इसलिए आपको यह समझने की आवश्यकता है कि आप कैसे-कैसे मुर्ख बनाये गए, जो हर बीमारी के इलाज के रूप में टीकाकरण के बारे में विश्वास करने लगे। उन्होंने आपके विचार और निर्णय को अपने पक्ष में बदलने के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है।

आपको पता होना चाहिए कि गंभीर बीमारियों के लिए तथाकथित टीकाकरण भी बहुत प्रभावी नहीं था। आप इसे टीकाकरण के इतिहास को समझकर सीख सकते हैं।

दिव्यम (76): - टीकाकरण का इतिहास क्या है?

मैं: आइए टीकाकरण का इतिहास देखें। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में देखी गई मृत्यु दर में गिरावट का असली कारण टीकाकरण नहीं है। अमेरिकी बच्चों में संक्रामक रोग मृत्यु दर में कमी का लगभग 90% उपलब्धि 1940 से पहले प्राप्त कर ली गई थी जबकि उस समय टीके उपलब्ध नहीं थे। यह बिंदु महत्वपूर्ण है। संक्रामक रोग मृत्यु दर में कमी का 90% हिस्सा अच्छा पोषण, स्वास्थ्य-शिक्षा,

आर्थिक स्थिति और बेहतर पर्यावरण की स्थिति से प्राप्त किया गया था।

टीके बाद में आये। टीकों की वजह से मृत्यु दर में केवल 10% की ही कमी पाई गई। आपको झूठ बोला गया है और मूर्ख बनाया गया है कि टीकाकरण रोग के कम होने का कारण है लेकिन सच्चाई यह है कि टीकों के विकास और शुरूआत से पहले ही बीमारी की मृत्यु दर में अच्छी तरह से गिरावट आई थी।

मैं आपको यह ग्राफ दिखाना चाहता हूं। आप इस ग्राफ को देख कर समझ सकते हैं और संक्रामक रोग की रोकथाम में टीकाकरण की भूमिका को बहुत सूक्ष्म तरीके से समझ सकते हैं। वैक्सीन वाले रोगों और वैक्सीन के बिना रोगों में सुधार की प्रवृत्ति लगभग समान है।

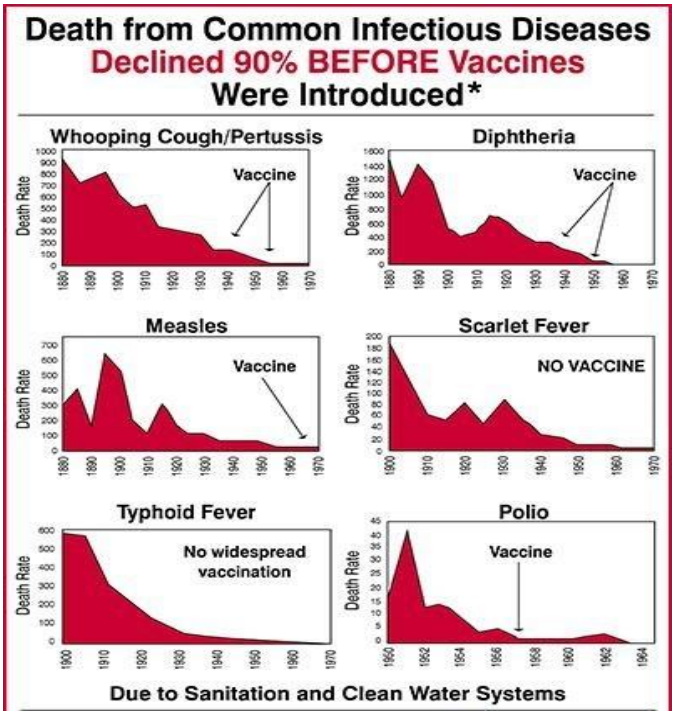

DIVYAM (77): - क्या पोलियो को टीके के द्वारा समाप्त नहीं किया गया है?

ME: पोलियो वायरस कोल्ड या फ्लू वायरस की तरह ही एक बहुत ही सामान्य वायरस है। अधिकांश लोगों के शरीर में किसी समय पोलियो वायरस था / है, लेकिन वे इसे नहीं जानते हैं। हम कभी भी इसके लिए परीक्षण नहीं करते है जब तक कि हमें पक्षाघात नहीं हो जाता है। हम सभी के शरीर में एक समय में हजारों या शायद लाखों अलग-अलग वायरस होते हैं। यह हमारी

प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित, सक्रिय और उत्तरदायी रखने का प्रकृति का प्राकृतिक तरीका है।

1940 और 50 के दशक में पोलियो वायरस के कारण जो लकवा हुआ था, वह वास्तव में पोलियो वायरस के कारण नहीं था। बल्कि यह एक अत्यधिक जहरीले कीटनाशक, डी-डी-टी (DDT) के व्यापक छिड़काव के कारण था। डी-डी-टी अब कई देशों में प्रतिबंधित है।

पोलियो का टीकाकरण तब शुरू किया गया था जब पोलियो चोटी (Peak) पहले से ही नीचे थी। इसे ठीक से समझने के लिए इस पोलियो ग्राफ को देखें।

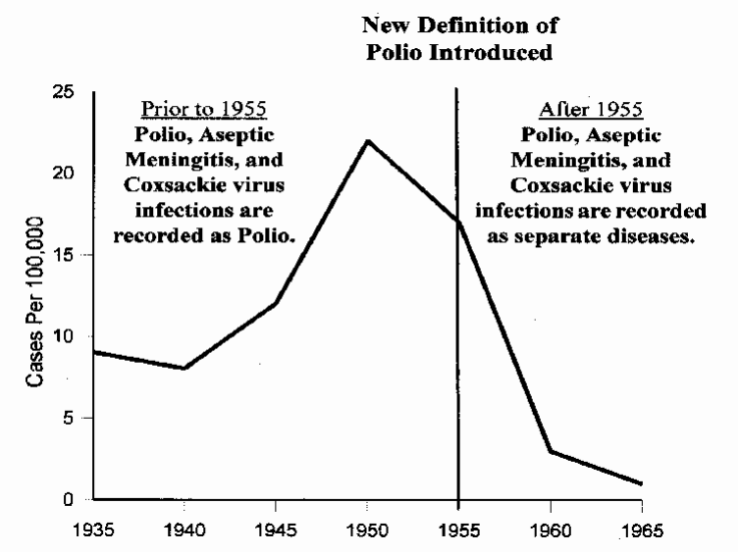

मैं आपको यहाँ कुछ नए बिंदुओं को नोट करने का सुझाव दूंगा -

1. टीकाकरण से पहले सभी पक्षाघात मामलो चाहे वो पोलियो से हो, मेनिन्जाइटिस से हो और कॉक्ससेकी वायरस से हो, इन सभी को पोलियो के मामले के रूप में शामिल किया गया था।

2. लेकिन वर्ष 1955 में टीकाकरण की शुरुआत के बाद, पोलियो की परिभाषा बदल गई। अब मेनिन्जाइटिस और कॉक्ससेकी वायरस के कारण पक्षाघात को पोलियो के रूप में चिन्हित नहीं किया जाता है, बल्कि अब उन्हें अलग इकाई माना जाता है।

3. बाद में पक्षाघात के नए मामलो के लिए आगे की परिभाषा बदल दी गई। अब उन्होंने पक्षाघात के एक मामले को ए-एफ-पी (AFP) के मामले के रूप में कहा जाता है। अब कहा जाता है कि यह एक्यूट फ्लेसीड पैरालिसिस (ए-एफ-पी AFP) है, पोलियो नहीं। आपको इस ट्रिक को समझने की जरूरत है। अब एक दिन अगर आपको बचपन के लकवे का मामला लगता है तो वे कहते हैं कि यह ए-एफ-पी का मामला है। अब यदि आपको पोलियो पक्षाघात का मामला मिला है तो वे इसे ए-एफ-पी के रूप में कहेंगे, पोलियो के रूप में नहीं कहेंगे, क्योंकि वे हमें कहना चाहते हैं कि पोलियो का उन्मूलन हो गया है।

4. टीकाकरण से ठीक पहले पोलियो चोटी को भी देखें। इसी तरह के ग्राफ अन्य संक्रमणों में देखे जाते हैं और आप देखेंगे कि टीके के विकास से ठीक पहले मरीजों की संख्या की सर्वोत्तम चोटी है।

इसके अलावा हमें ध्यान देना चाहिए कि प्रारंभिक जीवन में प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया विकसित नहीं होती है। प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को विकसित होने में समय लगता है।

दिव्यम (78): - मनुष्य में किस उम्र में प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया विकसित होती है?

मैं: नए जन्मे शिशु में 6 महीने से पहले प्रतिरक्षा प्रणाली का विकास नहीं होता है। यह मां के दूध से अपने सभी एंटीबॉडीज लेता है। जन्म के 6 से 9 महीने बाद, शिशु ग्लाइकोप्रोटीन का जवाब देना शुरू करता है, परन्तु यह प्रारम्भ मात्र है। 12 से 24 महीने की उम्र के बाद ही पॉलीसेकेराइड और ग्लाइकोप्रोटीन के प्रति शरीर की प्रतिक्रिया में एक उल्लेखनीय सुधार होता है।

मानव शरीर जीवन के पहले 6 महीनों में प्रतिरक्षा प्रणाली, प्रतिक्रिया को प्रारम्भ नहीं कर सकता है। कम से कम 2 वर्ष का समय लगता है। यह समय 2 यह वर्ष से ज्यादा भी हो सकता है। तो जीवन के शुरुआती कुछ महीनों में हमारे नवजात शिशुओं को छेदना क्यों? जब वे उस समय एंटीबॉडी का उत्पादन करने में असमर्थ होते हैं तो उन्हें गैर जरूरी मौखिक रोगाणु या रोगाणु के

कुछ हिस्सों को क्यों देना। हमारे प्यारे-प्यारे बच्चो को सुइयों से क्यों छेदना?

बिग फार्मा और उनके प्रमोटरों जैसे बिल गेट्स, डॉ.फौसी, मार्क जुकरबर्ग ने हमारा ब्रेनवॉश किया है। हम सोच रहे हैं कि वे हमारी रक्षा कर रहे हैं लेकिन एक सवाल है; किससे सुरक्षा? एक बच्चे की प्रतिरक्षा प्रणाली इस प्रारंभिक अवस्था में ठीक से प्रतिक्रिया दे ही नहीं पाती है। तो फिर सुरक्षा कैसी?

आगे यह बात भी ध्यान में रखे कि टीकों में एल्युमिनियम, निकल, पारा, फॉर्मलडिहाइड, डीएनए, उत्परिवर्तित मानव कोशिकीय रेखाएं और आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त जानवरों की भ्रूण कोशिकाओं जैसे खतरनाक पदार्थ हैं। टीको को बनाने की प्रक्रिया में कई बार गाय या सूअर के मांस, चर्बी का तेल एवं हड्डियों का प्रयोग होता है। कई बार गर्भवती गायो के आंशिक विकसित भ्रूण को जीवित ही निकाला जाता है एवं उसका प्रयोग होता है।

टीके प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित करने के लिए दिए जाते हैं लेकिन इसमें इम्यूनो-सप्रेसेंट्स होते हैं! डॉक्टर या तो अपनी अज्ञानता के कारण या बड़े फार्मा से मौद्रिक प्रोत्साहन के कारण आपको सिर्फ अपने बच्चे को टीका लगाने के लिए कह रहे हैं। हम पहले से ही मुर्ख बना दिए गए हैं इसलिए हम इस पर विश्वास

करते रहते हैं। लेकिन हमें पता होना चाहिए कि टीके के विभिन्न प्रकार के दुष्प्रभाव भी हैं।

दिव्यम (79): - टीके के दुष्प्रभाव क्या हैं?

मैं: इसके कई दुष्प्रभाव हैं जैसे -

- गठिया,
- सीने में दर्द
- चक्कर आना,
- झटके आना और चेतना खोना
- आक्षेप और दौरे पड़ना
- गुलेन बेरी सिंड्रोम
- कपाल तंत्रिका पक्षाघात या
- अंग पक्षाघात
- मस्तिष्क की सूजन, आंखों में दर्द
- आंशिक चेहरे का पक्षाघात

. . . और बहुत सारे, यहाँ तक कि कुछ लोगो का कहना हैं कि आटिज्म एवं केंसर भी ।

दिव्यम (80): - टीके के संबंध में और क्या मुद्दे हैं और क्या प्रश्न हैं?

मैं: कई और प्रश्न हैं। इनका उत्तर देने की आवश्यकता है।

• यदि किसी बच्चे को खसरा का टीका पहले ही लग चुका है तो खसरे के प्रकोप से डरना क्यों?

• यदि टीके का ऑटिज्म से कोई संबंध नहीं है तो सीडीसी नैदानिक परीक्षण के उन आंकड़ों को क्यों नहीं चुनता है जो टीकाकरण के साथ ऑटिज्म की बढ़ती आवृत्ति का सुझाव दे रहे हैं?

• सीडीसी के एक शीर्ष वैज्ञानिक ने खुले तौर पर यह कबूल किया कि टीके के कारण ऑटिज्म में वृद्धि हुई है। इस पर जाँच क्यों नहीं?

• हम जानते हैं कि पारा एक न्यूरोटॉक्सिक रसायन है। फिर इसका उपयोग अभी भी टीका बनाने में क्यों किया जाता है? टीके युक्त ऐसे पारा को बच्चों और गर्भवती महिलाओं में क्यों इंजेक्ट किया जा रहा है?

• टीके के कारण होने वाले सभी हानिकारक प्रभावों से वैक्सीन उद्योग को कानूनी प्रतिरक्षा की आवश्यकता क्यों है?

• हम उन पर अदालत में मुकदमा क्यों नहीं चला सकते?

• ऐतिहासिक सार्वजनिक स्वास्थ्य चार्ट पूरी तरह से अलग कहानी क्यों बताते हैं? इन चार्टों से पता चलता है कि संक्रामक रोग में

लगभग सभी गिरावट वास्तव में संबंधित टीकों के आने से पहले हो रही है?

• टीके भरोसेमंद नहीं हैं। अफ्रीका में एक प्रो-वैक्सीन समूह को पता चलता है कि अफ्रीकी महिलाओं को दिए जा रहे टीकों के साथ गुप्त रूप से गर्भपात वाले पदार्थों को दीया गया था, ऐसा क्यों?

• कुछ वैक्सीन कंपनियां क्यों स्वीकार करती हैं कि वे बिना किसी क्लिनिकल परीक्षण के समर्थन में हैं?

• यदि टीके पूरी तरह से सुरक्षित हैं तो खतरनाक और भयावह दुष्प्रभावों की एक लंबी सूची क्यों है?

• वैक्सीन कंपनियां क्यों बता रही हैं कि गर्भवती महिलाओं में उनके टीके का कभी परीक्षण नहीं किया गया है? वे क्यों कहते हैं कि भ्रूण के विकास में वैक्सीन के प्रभाव से वो अज्ञात हैं?

• सीडीसी वेबसाइट यह क्यों सूची-बद्ध करती है कि टीकों में जहरीले रासायनिक तत्वों का उपयोग किया जाता है?

• टीका लगाने वाली कंपनियां माता-पिता को सलाखों के पीछे डालते हुए बिना टिका लगवाए बच्चों के माता-पिता की गिरफ्तारी क्यों चाहती हैं?

• टीके अप्राकृतिक और असामान्य पदार्थ हैं। उन्हें एक सामान्य रूप में क्यों स्वीकार किया जाए?

इन सब प्रश्नो क उत्तर ढूढ़ना जरूरी है।

दिव्यम (81): - क्या हमें इन 'नए सामान्य' को सामान्य मान लेना चाहिए?

मैं: नहीं। सामान्य, सामान्य है। असामान्य, असामान्य है। असामान्य को सामान्य नहीं कहा जा सकता। यह तभी होगा, जब कोई हमें मूर्ख बनाना चाहेगा।

- हमारे नागरिक अधिकारों को खो देना सामान्य नहीं है।
- मास्क पहनना सामान्य नहीं है।
- कॉलर ट्यून सामान्य नहीं है।
- सैनिटाइज़र का अनावश्यक उपयोग सामान्य नहीं है।
- 24x7x365 ट्रैक किया जाना सामान्य नहीं है।
- व्यापार बंद करना सामान्य नहीं है।
- आम जनता की नौकरियों का जाना सामान्य नहीं है।
- मीडिया का दैनिक शोरगुल, हल्ला गुल्ला सामान्य नहीं है।
- व्यवसायों और आम लोगों का दिवालिया होना सामान्य नहीं है।

- किसान अपने उत्पादों को बर्बाद कर रहे हैं, अपने पशुओं को मार रहे हैं और उनके दूध को डंप कर रहे हैं, यह सामान्य नहीं है।
- लॉकडाउन सामान्य नहीं है।
- आंशिक ताला बंदी सामान्य नहीं है।
- अनलॉक के नाम पे लॉक डाउन सामान्य नहीं है।
- आपके स्थानीय अधिकारी आपको ट्रैक करते हैं और अपने पड़ोसियों से दुश्मनी करने के लिए कहते हैं, यह सामान्य नहीं है।
- सामाजिक भेद सामान्य नहीं है।
- वक्र (Curve) को समतल करने की बात करना सामान्य नहीं है।
- घरो में बंद करना सामान्य नहीं हैं।

इस प्रकार की चीजें पहले भी हुई थीं। पहले भी उन्होंने यह कहा था कि हर कोई मर रहा है। यही बात एचआईवी झूठी महामारी के समय और झूठा स्वाइन फ्लू महामारी के समय में भी हुई थीं। उस समय भी मीडिया द्वारा एक आतंक पैदा किया गया था।

दिव्यम (82): - एचआईवी का आतंक क्या था?

मैं: 1981 में HIV का पहला मामला सामने आया था। तब 80 के दशक के दौरान मीडिया ने खूब आतंक मचाया था।

एचआईवी/एड्स कार्ड वाली रैलियां निकाली गई थीं। यहां तक कि स्कूली बच्चों को भी शिक्षा के नाम पर इस तरह की रैलियों में भाग लेने के लिए मजबूर किया गया था। अमेरिका में अफवाह थी कि सुपर-फास्ट तेजी के साथ एचआईवी फैल रहा है। हर कोई एचआईवी से मारा जाएगा। यहां तक कि किसी के छूने या किसी व्यक्ति के रूमाल को छूने से भी बीमारी फैल जाएगी। अमेरिका में हर कोई डरा हुआ था। चारों तरफ सिर्फ एचआईवी का डर था।

फार्मा उद्योग ने कई परीक्षण किट और उपकरण बेच दिए। अब किसी भी तरह की सर्जरी से पहले डॉक्टरों द्वारा एचआईवी परीक्षण एक अनिवार्य परीक्षण है। उन्होंने एचआईवी का एक बाजार बनाया है। हर साल नए बाजार बनाए जा रहे हैं। कभी यह एचआईवी है, कभी यह डेंगू है, कभी यह चिकनगुनिया है, कभी इबोला, कभी ज़िका और कभी कोरोना।

उन्होंने एचआईवी के उस समय और कोरोना के इस समय मामले की संख्या के बारे में झूठ बोला था। उन्होंने एचआईवी के उस समय की मृत्यु संख्या के बारे में झूठ बोला था और कोरोना के इस समय के बारे में झूठ बोला है।

दिव्यम (83): - तो फिर इतनी मौतें क्यों हो रही हैं?

मैं: मृत्यु एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। मौतें हर एक साल, हर एक महीने और हर एक दिन हो रही हैं। अंतर केवल इतना है कि वे

मीडिया द्वारा रिपोर्ट नहीं की जाती हैं। सीडीसी ने फरवरी महीने में भविष्यवाणी की थी कि कोरोना के कारण अमेरिका में बड़ी संख्या में लगभग 2,00,000 से 17,00,000 के बीच मृत्यु होगी। अकेले अमेरिका में इस फ्लू के मौसम में कोरोना वायरस के कारण सीडीसी द्वारा इन मौतों का अनुमान लगाया गया था।

इस सीजन में कुल फ्लू की मृत्यु लगभग 20,000 से 50,000 है जो पिछले चार सत्रों (2018, 2017, 2016, 2015) में फ्लू से होने वाली मौतों की संख्या से कम है।

पेड मीडिया ने पूरी तरह से एक सनसनी पैदा कर दी। अब फ्लू के लक्षण वाले सभी रोगी का परीक्षण किया जा रहा है। इस बात से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे सांस की बीमारी या किसी अन्य बीमारी से मरते हैं, ये लोग उन्हें कोरोना मौत के रूप में चिन्हित कर रहे हैं। तो आप कह सकते हैं कि यह कोरोना महामारी एक नकली महामारी है।

दिव्यम (84): - यह झूठी महामारी कब शुरू हुई थी?

मैं: हमने पहली बार तथाकथित घातक और खतरनाक वायरस के बारे में 2019 के दिसंबर महीने में सुना। यह खबर चीन के हुबेई प्रांत के वुहान के शहर से आई थी। हमें मीडिया द्वारा यह बताया गया कि यह चमगादड़ खाने से उत्पन्न हुआ था। हमने यह कहावत सुनी है कि चीनी सब कुछ खाते हैं - जीवित या निर्जीव,

सब कुछ खा जाते हैं । उन्होंने जान बूझकर एवम बड़ी चालाकी के साथ वुहान को चुना।

दिव्यम (85): - क्या वुहान को सोच समझकर चुना गया था?

मैं: हाँ, यह जानबूझकर चुना गया था। क्योंकि चीन का नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी वुहान में स्थित है इसलिए यह अफवाह फैलाना आसान है कि चीन यहां कुछ शोध कर रहा था। भारत का नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी पुणे, महाराष्ट्र में है। इसलिए कोई भी देश भारत में एक वास्तविक या गलत वायरस फैलाना चाहता है, किसी वायरस बीमारी की अफवाह फैलाना चाहता है, तो उसकी पहली पसंद पुणे होगी। और अगली पसंद कुछ ऐसे शहर होंगे जहां हमारे पास नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी की कुछ प्रमुख शाखाएं होंगी।

चीन को फंसाया गया। डब्ल्यूएचओ के निर्देशों के अनुसार चीन ने मुखौटा, सामाजिक भेद और तालाबंदी शुरू कर दी। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने प्रकोप के शुरुआती दौर में चीन की प्रशंसा की क्योंकि चीन ने उनके निर्देशों का पालन किया। लेकिन जल्द ही चीन को डब्ल्यूएचओ के वास्तविक तथ्य और वास्तविक शैतानी योजना का एहसास हुआ। इसलिए चीनी नीति निर्माताओं ने डब्ल्यूएचओ के निर्देश से दूरी बनाए रखी और इस प्रकार अपने राष्ट्र को बचा लिया।

हालाँकि मैं चीनी विस्तारवादी नीति, 'एक इंच रोज़' की नीति के सख्त खिलाफ हूँ लेकिन यहाँ बात अलग है। ये मामला अलग है। चीन यहां पीड़ित है। अंततः चीन को पता चल गया कि ये विश्व स्वास्थ्य संगठन अनुशंसित परीक्षण किट वास्तव में अत्यधिक गलत हैं।

दिव्यम (86): - क्या कोरोना परीक्षण में उच्च स्तर की अशुद्धि है?

मैं: प्रारंभ में कोवीड-19 का केवल एक परीक्षण द्वारा निदान किया जा सकता था, जिसे रिवर्स ट्रांसक्रिपटेस पॉलीमरेज़ चेन रिएक्शन या संक्षेप में आर-टी-पी-सी-आर (RT-PCR) कहा जाता है। यह परीक्षण वायरस की पूरी आनुवंशिक संरचना का पता नहीं लगाता है बल्कि यह वायरस के आनुवंशिक सामग्री के एक हिस्से का पता लगाता है। इसलिए यह परोक्षण अत्यंत गलत नतीजे देता है। आइए देखें कि परीक्षण किट का मैनुअल क्या कहता है-

यह आर-टी-पी-सी-आर (rtPCR) टेस्ट इन्फ्लुएंजा ए वायरस (H1N1), इन्फ्लुएंजा बी वायरस, रेस्पिरेटरी सीनसीसिअल वायरस (टाइप बी), रेस्पिरेटरी एडीनो वायरस (टाइप 3, टाइप 7), माइकोप्लाज्मा न्यूमोनि, क्लैमाइडिया न्यूमोनि आदि के साथ गैर-विशिष्ट है। क्लैमाइडिया न्यूमोन मूल रूप से बैक्टीरिया हैं। तो यहां एक सकारात्मक परीक्षण का अर्थ है कि इनमें से किसी भी

वायरस या यहां तक कि बैक्टीरिया के कारण संक्रमण। इसलिए संक्रमण कोरोना के कारण या उपरोक्त वायरस या बैक्टीरिया में से किसी के कारण है, यह विभेदित नहीं किया जा सकता है। यहां तक कि निमोनिया का एक रोगी भी एक सकारात्मक कोरोना टेस्ट देगा। एक सकारात्मक कोरोना परीक्षण का मतलब हमेशा कोरोना नहीं होता है।

परीक्षण मैनुअल में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि परीक्षण के लिए नियामक स्थिति केवल अनुसंधान प्रक्रियाओं के लिए है न कि नैदानिक प्रक्रियाओं में उपयोग के लिए।

यह परीक्षण एक ही व्यक्ति में कभी सकारात्मक और कभी नकारात्मक हो सकता है। चार वुहान मरीज़ जिन्हें कोवीड नकारात्मक (-ve) के रूप में डिस्चार्ज किया गया था लेकिन डिस्चार्ज के 14 दिनों के बाद में कोवीड सकारात्मक (+ve) पाया गया।

सीडीसी ने यह भी उल्लेख किया है कि यह परीक्षण एक विशिष्ट परीक्षण नहीं है। अर्थात यह परिक्षण कोविड-19 के अलावा भी अन्य कोरोना वायरस में भी सकारात्मक नतीजे दे सकता है। न सिर्फ ऐसा बल्कि कोरोना वायरस के अलावा भी किसी अन्य वायरस से संक्रमण हो तो वहा भी सकारात्मक नतीजे दे सकता

है। न सिर्फ ऐसा बल्कि कुछ बैक्टीरिया से संक्रमण हो तो वहा भी सकारात्मक नतीजे दे सकता है।

दिव्यम (87): - इस आरटी-पीसीआर (RT-PCR) परीक्षण के बारे में CDC की क्या टिप्पणिया है?

मैं: सीडीसी (CDC - Center For Disease Control - US) संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रमुख राष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान है। यह स्वास्थ्य और मानव सेवा विभाग के तहत एक संयुक्त राज्य संघीय एजेंसी है और अटलांटा, जॉर्जिया में मुख्यालय है। रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्र (सीडीसी) ने निम्नलिखित अवलोकन किए।

• एक सकारात्मक परीक्षण एक संक्रामक वायरस की उपस्थिति का संकेत नहीं दे सकता है या एक सकारात्मक परीक्षण 2019-कोविड की वजह से ही है ऐसा हमेशा सही नहीं होता है।

• जब बीमारी का प्रचलन मध्यम या कम होता है तो झूठी सकारात्मक होने की संभावना अधिक होती है।

• 2019-nCov संक्रमण के उपचार की निगरानी के लिए इस परीक्षण का प्रदर्शन स्थापित नहीं किया गया है।

तो यह परीक्षा एक बेकार परीक्षा है। कोरोना वायरस के अलावा और भी संक्रमण में यह सकारात्मक परीक्षण दे सकता है। यहां

तक कि निमोनिया पैदा करने वाले बैक्टीरिया में भी एक सकारात्मक परीक्षण दे सकते हैं। कभी-कभी एक्सोसोम को भी कोरोना वायरस के रूप में भ्रमित तरीके से पहचाना जा सकता है अर्थात एक्सो-सोम को भी गलती से कोरोना वायरस समझा जा सकता है।

दिव्यम (88): - एक्सो-सोम क्या है?

मैं: मानव शरीर एक प्रकार की कोशिका को स्त्राव करता है जिसे 'एक्सोसोम' कहा जाता है। एक्सोसोम का कार्य स्पष्ट नहीं है। यह माना जाता है कि यह सेलुलर फ़ंक्शन का अपशिष्ट उत्पाद है। यह हमारे शरीर के विभिन्न हिस्सों से निकलता है जिसमें मूत्र, लार, स्तन का दूध, फेफड़े का स्राव आदि शामिल हैं। फेफड़े के स्राव को ब्रांको-एल्वोलर लवाज कहते है। एक्सोसोम को ब्रोन्को एलविओलर द्रव में भी देखा जाता है। तरल पदार्थ, 'ब्रोंको-एल्वोलर लवाज' में पाया जाने वाला 'एक्सोसोम' कोवीड-19 वायरस से काफी मिलता-जुलता है। इस सारणी में समानताओं को देखें।

	कोवीड-19	एक्सोसोम
सेल के बाहर व्यास	100 एनएम (नेनोमीटर)	100 एनएम (नेनोमीटर)
आनुवंशिक सामग्री	आरएनए	आरएनए
रिसेप्टर	ऐस-2	ऐस-2

ब्रोन्को-एल्वोलर लवाज फेफड़े में तरल पदार्थ के रूप में पाया जाता है। इसलिए यह बहुत संभव है कि आरटी-पीसीआर गलत तरीके से एक एक्सोसोम को, एक कोविड-19 वायरस के रूप में निदान कर सकता है। डॉ. एंड्रयू कॉफमैन, एमडी ने एक साक्षात्कार दिया जहां उन्होंने कहा कि हम एक्सोसोम को वायरस के रूप में गलत तरीके से भी समझ सकते है।

इसके अलावा आरटी-पीसीआर परीक्षण इतने गलत हैं कि वे गैर-मानव नमूनों में भी सकारात्मक हो सकते हैं, जैसाकि तंजानिया में इसका अध्ययन किया गया था।

दिव्यम (89): - तंजानिया में क्या अध्ययन किया गया था?

मैं: तंजानिया में इस्तेमाल किए गए कोरोनावायरस टेस्ट किट को राष्ट्रपति जॉन मागुफुली ने दोषपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि उन्होंने गैर-मानव नमूनों पे ये टेस्ट करवाया था। एक बकरी, पपीता और अन्नानास से लिए गए नमूनों ने सकारात्मक परिणाम दिए हैं। तो, पपीता या अनानास या बकरी पर कोरोना परीक्षण कैसे सकारात्मक हो सकते हैं? मागुफुली, तंज़ानिया के रास्ट्राध्यक्ष ने कहा कि किट में "तकनीकी त्रुटियां" थीं।

"कोवीड-19 परीक्षण किट विदेश से आयात किया गया था", मागुफुली ने कहा। राष्ट्रपति ने कहा कि उन्होंने तंजानिया के सरकारी अधिकारियों को किट की गुणवत्ता की जांच करने का

निर्देश दिया है। उन्होंने कई गैर-मानवीय नमूने बेतरतीब ढंग से प्राप्त किए थे लेकिन उन्हें मानव नाम और मानव गुण सौंपा था।

ये नमूने पपीता, अनानास, एक बटेर, एक बकरी और एक भेड़ से लिए गए थे। ये नमूने कोरोनोवायरस के परीक्षण के लिए तंजानिया की प्रयोगशाला में भेजे गए थे। लैब तकनीशियन और डॉक्टर उनकी उत्पत्ति से अनजान थे। उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि ये गैर-मानव नमूने हैं।

पपीता, अनानास, और बकरी के नमूनों ने कोवीड-19 के लिए सकारात्मक परिणाम दिया। इसका मतलब परीक्षण गलत सकारात्मक परिणाम दे रहा है। यह संभावना थी कि कुछ लोगों का सकारात्मक परिणाम आ रहा था जबकि वास्तव में वे कोरोनावायरस से संक्रमित नहीं थे।

मागुफुली, तंज़ानिया के रास्ट्राध्यक्ष ने मौद्रिक सहायता लेने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि हमें यह स्वीकार नहीं करना चाहिए कि हर सहायता हमारे राष्ट्र के लिए अच्छी है। उन्होंने परीक्षण के लिए एक बकरी, एक पपीता और एक अनानास के नमूने के नतीजों को तंजानिया की प्रयोगशाला में भेजे। ये नमूने कोवीड-19 पॉजिटिव निकले थे। तंजानिया के राष्ट्रपति द्वारा डब्ल्यूएचओ को देश से बाहर करने की खबर है। "मैं मेडागास्कर

के साथ संवाद कर रहा हूं", उन्होंने एक भाषण के दौरान कहा, "उन्हें एक दवा मिली है"।

दिव्यम (90): - मेडागास्कर की वह दवा कौन सी है?

मैं: यह एक चमकीले-हरे फर्न जैसा पौधा है। यह अफ्रीकी देशों में कोवीड-19 के इलाज के रूप में प्रचारित किया जा रहा है। मेडागास्कर के राष्ट्रपति एंड्री राजोइलिना ने कहा कि मेडागास्कर ने कोविड-19 के इलाज के रूप में इस हर्बल उपचार को विकसित किया है।

यह कोवीड-ऑर्गेनिक्स के रूप में विपणन किया जाता है और एक हर्बल दवा के रूप में बेचा जाता है। राजोइलिना ने इसे अपने हिंद महासागर द्वीप राष्ट्र में व्यापक रूप से वितरित किया है और इसे अफ्रीका के कई हिस्सों में निर्यात किया है। लेकिन पश्चिम ने इस दवा पर संदेह पैदा किया है।

दिव्यम (91): - पश्चिम को इस दवा पर संदेह क्यों है?

मैं: पश्चिम में इस पेय का बहुत बुरा स्वागत हुआ है। इसकी वजह है उनकी नीति। उनकी अफ्रीका और भारत के खिलाफ नफरत की नीति है। उन्हें लगता है कि दौड़ में वे बेहतर हैं। उनके अलावा कोई और कैसे किसी भी बीमारी का इलाज कर सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन, पश्चिम और अमेरिका के हित के लिए काम करने वाला एक कठपुतली संगठन है। मेडागास्कर के

राष्ट्रपति का मानना है कि दुनिया के बाकी लोगों ने मेडागास्कर के इलाज को कोरोनोवायरस के लिए ईमानदारी, तात्कालिकता और सम्मान के साथ इलाज करने से इनकार कर दिया है का एकमात्र कारण है कि उपचार अफ्रीका से आया है।

उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि अगर यह एक यूरोपीय देश होता जिसने वास्तव में इस उपाय की खोज की होती, तो क्या इसमें कोई संदेह होता? यहां तक कि हमने सुना है कि डब्ल्यूएचओ ने इस दवा का उपयोग रोकने के लिए रिश्वत की पेशकश की है।

दिव्यम (92): - यह डब्ल्यूएचओ घूस का मामला क्या है?

मैं: मेडागास्कर के राष्ट्रपति ने दावा किया है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोवीड-19 दवाई में जहर देने के लिए 20 मिलियन डॉलर की रिश्वत की पेशकश की है। यह अत्यंत ही भयानक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन विश्व के लोगो के बेहतर स्वास्थ्य के लिए बनाया गया है न कि लोगो को मारने के लिए। लेकिन यहां वे एक दवा में जहर देना चाहते हैं। मेडागास्कर के राष्ट्रपति एंड्री राजोइलिना ने विश्व स्वास्थ्य संगठन पर आरोप लगाया है कि उसने अपने कोवीड-19 ऑर्गेनिक्स में जहर मिलाने का ऑफर दिया है। राजोइलिना का दावा है कि डब्ल्यूएचओ ने उनकी दवा को जहर देने के लिए 20 मिलियन डॉलर की रिश्वत की पेशकश की थी।

पश्चिम में कोवीड-ऑर्गेनिक्स के साथ एक वास्तविक समस्या क्या है? पश्चिम की समस्या यह है कि यह अफ्रीका का उत्पाद कैसे हो सकता है? दुनिया को बचाने में मदद करने के लिए मेडागास्कर जैसा गरीब देश इस तरह की दवा कैसे विकसित कर सकता है?

तो अब आप देख सकते हैं कि विश्व स्वास्थ्य संगठन कितना भयानक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन दुनिया की आबादी के बेहतर स्वास्थ्य के लिए स्थापित किया गया था। दूसरी तरफ डब्ल्यूएचओ खुद एक दवा को जहर देने के लिए रिश्वत दे रहा है। इसका क्या मतलब है? डब्ल्यूएचओ मृत्यु दर में वृद्धि करना चाहता है। ऐसा लगता है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ही इन गलत आरटी-पीसीआर परीक्षणों, एंटीबॉडी परीक्षणों और घातक दवा परीक्षणों के पीछे मुख्य अपराधी है।

दिव्यम (93): - इन गलत आरटी-पीसीआर परीक्षण किटों की सिफारिश किसने की?

मैं: परीक्षण किट की सिफारिश विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा की जा रही है, वही संगठन जिसे अतीत में एक कपटपूर्ण संगठन कहा गया था। डब्लूएचओ को अतीत में सामान्य स्वाइन फ़्लू को, स्वाइन फ़्लू महामारी के रूप में प्रचारित का आरोपी बनाया गया है।

यूरोपियन परिषद् सभा की संसदीय सभा (PACE - Parliamentory Assembly of Council of Europe), ने डब्लूएचओ को सामान्य स्वाइन फ़्लू को, स्वाइन फ़्लू महामारी के रूप में प्रचारित का दोषी पाया है।

दिव्यम (94): - क्या एंटीबॉडी परीक्षण अधिक सटीक हैं?

मैं: नहीं। सीडीसी (CDC) ने अब स्वीकार किया है कि एंटीबॉडी परीक्षण
आधी बार गलत हो सकता है। हां, सीडीसी का कहना है कि 50% मामलों में यह गलत हो सकता है। गुणवत्ता नियंत्रण के संदर्भ में, 50% अशुद्धि के साथ एक परीक्षण बिल्कुल बेकार है। आगे एंटीबॉडी परीक्षण वायरस का पता नहीं लगा सकते हैं बल्कि वे एंटीबॉडी का पता लगाते हैं। एंटीबॉडी का पता लगाना एक अच्छा संकेत है। इसका मतलब है कि आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली ठीक काम कर रही है। आपको किसी दवा या वैक्सीन की आवश्यकता नहीं है।

दूसरी तरफ ये लोग टीके अनिवार्य कर रहे हैं। यह संभव हो सकता है कि शुरू में यह वैकल्पिक हो सकता है, लेकिन बाद में ये अनिवार्य हो जाएंगे। यह आपने मास्क के मामले में देखा है। पहले वे स्वैच्छिक थे लेकिन अब भारत में मुखौटे अनिवार्य हैं। और यदि आप मना करते हैं तो वे पुलिस या सेना भी तैनात कर

सकते हैं। यहां तक कि मैंने खबरें पढ़ी हैं कि वैक्सीन को अनिवार्य करने के लिए बिल गेट्स जैसे प्रमोटर, नेताओं को रिश्वत दे रहे हैं। ऐसा सुनने में आया है कि इसने नाइजीरिया के राष्ट्रपति को जबरन टीकाकरण के लिए रिश्वत की पेशकश की थी।

दिव्यम (95): - क्या बिल गेट्स ने नाइजीरिया के राष्ट्रपति को जबरन टीकाकरण के लिए रिश्वत की पेशकश की थी?

मैं: हमने सुना है कि बिल गेट्स द्वारा नाइजीरियाई राष्ट्रपति को जनता के लिए कोरोनवायरस टीकाकरण इंजेक्शन अनिवार्य करने की पेशकश की गई थी, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया।

ऐसा कहा जाता है कि बिल गेट्स ने ऐसा बिल बनाने के लिए नाइजीरियाई हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव को कोरोनवायरस के लिए जबरन टीकाकरण कार्यक्रम के लिए $10 मिलियन (लगभग 75 करोड़ रुपये) रिश्वत की पेशकश की थी। नाइजीरिया में विपक्षी राजनीतिक दलों ने 'विदेशी प्रायोजित बिल' को खारिज कर दिया। बिल सभी नाइजीरियाई लोगों के अनिवार्य टीकाकरण को अनिवार्य करने के लिए था।

बिल गेट्स चाहते थे कि जब तक टीकों की खोज न हो जाए, तब तक एक जबरन टीकाकरण बिल पास किया जाना चाहिए। नाइजीरिया में विरोधी राजनीतिक दल बहुत जागरूक लोग थे।

अगर वह सभी सदस्यों पर बिल लागू करता है तो, उन्होंने स्पीकर पर महाभियोग लाने की मांग की।

ईमेल के आविष्कारक और प्रसिद्ध एमआईटी के पूर्व वैज्ञानिक और पीएचडी धारक डॉ. शिवा अय्यादुरई ने कहा है कि बिल गेट्स हमें झांसा दे रहे हैं। उन्होंने दुनिया को टीका लगाने की योजना और राष्ट्रों को लॉकडाउन के तहत रखने की आलोचना की। और यहां तक कि कैनेडी ने भी बिल गेट्स की आलोचना की है।

दिव्यम (96): - कैनेडी ने बिल गेट्स के बारे में क्या कहा?

मैं: रॉबर्ट एफ. कैनेडी जूनियर, पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी के भतीजे ने भारत में बिल गेट्स के एजेंडे को उजागर किया। यहां तक कि कैनेडी जूनियर ने कहा कि बिल गेट्स बुरी तरह से टीकों की बीमारी से ग्रस्त हैं। श्री रॉबर्ट कैनेडी ने भारत में बिल के एजेंडे को उजागर करने वाला एक लेख लिखा और उन पर 'ट्विस्टेड मसीहा कॉम्प्लेक्स' से पीड़ित होने का आरोप तक लगाया।

वैक्सीन, बिल गेट्स के लिए एक रणनीतिक परोपकार है जो उनके कई वैक्सीन से संबंधित व्यवसायों के फायदे के लिए है जिसमें वैश्विक आईडी उद्यम को नियंत्रित करने और वैश्विक स्वास्थ्य नीति पर उसे तानाशाही नियंत्रण देने की माइक्रोसॉफ्ट की महत्वाकांक्षा शामिल है। बिल गेट्स का निर्दोष भारतीय लोगों के

साथ रिकॉर्ड बहुत बुरा रहा है। यह गेट्स फाउंडेशन के माध्यम से किया गया था। गेट्स फाउंडेशन ने भारतीय जनता को मौत के घाट सुलाया था।

दिव्यम (97): - गेट्स फाउंडेशन ने भारतीय जनता को किस प्रकार से मौत के घाट सुलाया?

मैं: गेट्स फाउंडेशन ने भारत में एक परीक्षण शुरू किया। भारत में यह परीक्षण अवैज्ञानिक और अनैतिक था। सर्वाइकल कैंसर के लिए एक घातक वैक्सीन ट्रायल किया गया था। यह एक खतरनाक परीक्षण था और हजारों मासूम छोटी बच्चियों की मौत हो गई।

यह टीका लगभग सभी लड़कियों में बाँझपन और मासिक धर्म संबंधी विकारों का कारण बना। संभवतः मुख्य मीडिया को बेहद ज्यादा भुगतान किया गया था जिसकी वजह से मुख्य मीडिया ने इसे 'साजिश के सिद्धांत' के रूप में आसानी से लेबल करके इसे ख़ारिज करने की कोशिश की। लेकिन यहां रिकॉर्ड आधिकारिक तौर पर उपलब्ध हैं। अब आप सोच सकते हैं कि मुख्य मीडिया ने इस बात को कैसे छिपाए रखा और बिल गेट्स को बचाने की कोशिश की।

संपूर्ण घटना को मुख्य मीडिया ने 'साजिश-सिद्धांत' के रूप में खारिज कर दिया था, लेकिन एक विस्तृत रिपोर्ट यहां उपलब्ध है।

इसे 'ह्यूमन पैपिलोमा वायरस (एचपीवी) वैक्सीन इन इंडिया का अध्ययन में अनियमितता' के रूप में शीर्षक दिया गया है।

यह अध्ययन भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के तहत किया गया था, जिसमे सभी मिनटों का विवरण दिया गया है ।

जैसा कि रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है, एना-फाईलेक्सिस जो कि गंभीर एलर्जी प्रतिक्रिया है, बेहोशी, ऐंठन, अस्थमा, केंद्रीय डिमाईलिनेटिंग बीमारियां, तीव्र फैलाया गया एन्सेफेलोमाइलाइटिस, इडियोपैथिक थ्रोम्बोसाइटोपिनिक परपूरा आदि खतरनाक वैक्सीन के ज्ञात दुष्प्रभावों में से कुछ हैं। हजारों युवा लड़कियों की मौत हो गई। और हजारों-लाखो को गंभीर बीमारी का सामना करना पड़ा।

PATH (Programme for Appropriate Technology in Health) जो कि 'स्वास्थ्य में उपयुक्त प्रौद्योगिकी' के लिए कार्यक्रम है, वास्तव में बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन से संबद्ध था। वे सभी परोपकार के नाम पर गलत, अवैज्ञानिक, अवैध और अनैतिक कार्य करते हैं।

दिव्यम (98): - क्या गेट्स फाउंडेशन कोई वास्तविक परोपकारी कार्य कर रहा है?

मैं: मुझे ऐसा नहीं लगता। वे 'वास्तविक' परोपकार कार्य नहीं कर रहे हैं, बल्कि यह उनका निवेश है। वह राक्षसी विचारों, व्यवहार और कार्रवाई के साथ एक राक्षसी अधिक लगता है। बिल गेट्स को टीका लगाने के लिए सभी को बाध्य करने की उनकी योजना के लिए बहुत आलोचना की गई है जो अभी तक खोजा जाना है। उनके इंस्टाग्राम पेज को देखें, अधिकांश टिप्पणियां प्रतिकूल हैं।

परोपकार वास्तव में एक मिठास-लेपित बहाना है जो इस चतुर, शैतानी आदमी द्वारा उपयोग किया जा रहा है। यह परोपकार समाज में एक अच्छी छवि बनाने और अपने शैतान विचारों और कार्यों को छिपाने के लिए है। अगर वह कम से कम एक डॉलर का 'दान' कर रहा है तो वह 20 से 50 गुना अधिक लाभ कमाएगा, यह पक्का है।

ऐसा कहा जाता है कि बिल गेट्स ने दुनिया भर के लोगों पर नज़र रखने के लिए निगरानी उपग्रह लॉन्च करने के लिए $1 बिलियन की योजना का समर्थन किया। इसका उद्देश्य गोपनीयता पर आक्रमण है। उसकी जांच होनी चाहिए।

दिव्यम (99): - क्या बिल गेट्स के खिलाफ कोई कार्रवाई की जा सकती है?

मैं: हमने एक ऑनलाइन याचिका के बारे में सुना है। एक ऑनलाइन याचिका व्हाइट हाउस पर बिल गेट्स और मेलिंडा गेट्स

द्वारा 'मानवता के खिलाफ अपराधों और मेडिकल कदाचार' की जांच करने के लिए कह रही है।

याचिका में 11 मई तक 500,000 से अधिक हस्ताक्षर प्राप्त हुए। इस ऑनलाइन याचिका में व्हाइट हाउस से मानवता के खिलाफ अपराधों के लिए बिल गेट्स की गिरफ्तारी की मांग की गई थी।

याचिका में बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन पर 'मेडिकल कदाचार' का आरोप लगाया गया है। याचिका में टीकाकरण के माध्यम से जनसंख्या वृद्धि को कम करने में उनकी रुचि के बारे में बात करते हुए बिल गेट्स को भी उद्धृत किया गया है। केन्या में ऐसा ही एक मामला सामने आया है।

दिव्यम (100): - यह केन्या केस क्या है?

मैं: टेटनस के टीकों में छिपे हुए एचसीजी (HCG) प्रतिजन के उपयोग के माध्यम से केन्याई बच्चों को जानबूझकर नसबंदी करने के लिए बिल गेट्स को दोषी ठहराया गया है। "यह हमारे सबसे बुरे डर को सही साबित करता है; यह विश्व स्वास्थ्य संगठन अभियान नवजात टेटनस के उन्मूलन के बारे में नहीं है, लेकिन केन्या कैथोलिक डॉक्टर्स एसोसिएशन के प्रवक्ता डॉ. नगारे ने कहा कि यह एक सिद्ध प्रजनन क्षमता का उपयोग करते हुए एक अच्छी तरह से समन्वित बलपूर्वक जनसंख्या नियंत्रण जन नसबंदी का अभ्यास है।

अधिकांश लोग अब बड़े सुपर एलीट वर्ग द्वारा खेले जाने वाले इस बड़े खेल को समझ गए हैं। हमें अपने हक के लिए लड़ना चाहिए। हमें आम जनता के हक के लिए लड़ना चाहिए। खेल के पीछे जो कोई भी है उसे दंडित किया जाना चाहिए। ऐसा लग रहा है कि बिल गेट्स पूरी दुनिया को धोखा दे रहे हैं।

दिव्यम (101): - क्या बिल गेट्स एक धोखेबाज, एक दज्जाल लगते हैं?

मैं: मुझे ऐसा लगता है। वह दज्जाल लगता है। वह 'ट्विस्टेड मसीहा कॉम्प्लेक्स' से पीड़ित है। वह मानव जाति के लिए एक महान धोखेबाज है। इतालवी राजनेता सारा क्यूनिअल ने बिल गेट्स और भ्रष्ट संसद पर आरोप लगाया और तत्काल जांच की मांग की।

यहां तक कि बिल गेट्स के खिलाफ 'अरेस्ट बिल गेट्स' के नारों के साथ कई प्रदर्शन हुए है। वह अपने शैतान विचारों को परोपकार के पर्दे के पीछे छिपा रहा है। यह भी सुना जाता है कि बिल या उसकी फाउंडेशन मृत्यु प्रमाण पत्र में हेरफेर करने के लिए डॉक्टरों को अच्छी राशि का भुगतान कर रही है।

दिव्यम (102): - क्या मृत्यु प्रमाणपत्र में हेरफेर किया जा रहा है?

मैं: संभवतः हाँ। मोंटाना के एक चिकित्सक डॉ. एनी बुकसेक ने बड़े खेल को उजागर किया। उन्होंने दिखाया कि कैसे कॉविड मृत्यु

प्रमाणपत्रों में हेरफेर किया जा रहा है। डॉ. बुकसेक का कहना है कि सीडीसी चिकित्सकों को मृत्यु प्रमाण पत्रों पर कॉविड मौतों को अतिरंजित करने का निर्देश दे रहा है।

इसके अलावा, ऐसा कहा जा रहा है किकि अमेरिका में डॉक्टरों को मरीज की मौत को 'कोरोना-डेथ' के रूप में लेबल करने के लिए 4000 डॉलर से अधिक का प्रोत्साहन मिल रहा है। यह अमेरिका में देखा गया था कि अस्थमा, कैंसर, हृदय रोग, सीओपीडी, और अन्य कारणों की लंबी सूची के कारण होने वाली मौतों की अब रिपोर्ट नहीं की जा रही है।

दिव्यम (103): - क्या सीडीसी साजिश का हिस्सा है?

मैं: ऐसा लगता है। ऐसा लगता है कि सीडीसी के लोग काफी भ्रष्ट हैं। अब यह केवल अमेरिका की बात नहीं है। यह पूरी दुनिया की बात है; यह सभी मानव जाति की बात है। हमें न केवल भारतीय या अफ्रीकी आबादी को बचाना है; बल्कि अमेरिकी आबादी को भी सीडीसी के कुटिल हाथों से बचाने की जरूरत है।

हमारे निम्न स्तर के राजनेताओं और निचले सीडीसी कर्मचारियों में से कुछ को सही तथ्य पता हो सकता है लेकिन वे ऐसा सोच रहे हैं जैसे पूरा समूह सोचता है। वे ग्रुपथिंक को बढ़ावा दे रहे हैं। तो आप इसे एक समूहवादी महामारी के रूप में भी लेबल कर सकते हैं।

दिव्यम (104): - ग्रुपथिंक क्या है?

मैं: ग्रुपथिंक एक मनोवैज्ञानिक घटना है जिसमें लोग एक समूह के भीतर आम सहमति बनाने की कोशिश करते हैं। कई मामलों में, लोग अपने स्वयं के व्यक्तिगत विश्वासों, विचारों और राय को अलग कर देंगे और बाकी समूह की राय को अपनाएंगे। लोग, जो इस मुद्दे के विरोध में हैं, अक्सर चुप रहते हैं, दूसरों के साथ शांति बनाए रखना पसंद करते हैं। उन्हें लगा कि वे समूह की एकरूपता को परेशान कर रहे हैं, इसलिए वे चुप बने रहते हैं, इसलिए उन्होंने अपने विचार नहीं बोले।

ग्रुप-थिंक वहा आम है जहां समूह के सदस्यों की पृष्ठभूमि समान होती है और विशेष रूप से जब उस समूह को तनावपूर्ण स्थिति में रखा जाता है| एक ऐसी तनावपूर्ण स्थिति जो त्वरित प्रतिक्रिया की मांग करता है, जिसमे ग्रुप-थिंक परिणाम स्वरूप तर्कहीन, मूर्खतापूर्ण निर्णय होता है।

यह नेताओं के बीच अधिक आम है। राजनेता अपने सुपर बॉस के साथ चर्चा से बचते हैं, इस डर के कारण कि कहीं वे पार्टी टिकट या मंत्री-पद या कुछ भत्तों या कुछ मौद्रिक लाभों को खो देंगे।

इस प्रकार ग्रुप-थिंक एक मनोवैज्ञानिक घटना है जो लोगों के समूह के भीतर होती है जिसमें समूह में सामंजस्य या अनुरूपता की

बलवती इच्छा शीर्ष पर होती है। इसके परिणामस्वरूप एक तर्कहीन, मूर्खतापूर्ण या दुविधापूर्ण निर्णय लिया जाता है।

इन सभी व्यवहारों के लिए सबसे अच्छा उदाहरण कोवीड-19 की प्रतिक्रिया है, जब सरकार के मंत्रियों को सामूहिक रूप से घबराहट हुई और अनिवार्य फेसमास्क, सामाजिक दूरी और लॉकडाउन का मूर्खतापूर्ण निर्णय लिया गया।

यह निर्णय एक या दो मालिकों द्वारा लिया गया था, समूह के बाकी सदस्यों ने नेत्रहीन रूप से समूह की रेखा के साथ पालन किया। उन्होंने बिना सोचे-समझे अपने मुखिया के निर्णय का अनुमोदन किया। उन्होंने उस आबादी को बंद कर दिया, जिसमें बीमारी से कोई गंभीर समस्या होने का जोखिम लगभग शून्य था।

साथ ही उन्होंने स्वतंत्र, अच्छे विचारकों का पक्ष नहीं जाना। भिन्न विचार-धारा वाले, अच्छे विचारक और स्वतंत्र चिकित्सा विशेषज्ञ एक शांत, बेहतर और तर्कसंगत विचार प्रस्तुत कर सकते थे। वे बेहतर समाधान दे सकते थे। वे कोवीड-19 को एक बेहतर लक्षित दृष्टिकोण प्रदान करने में सक्षम हो सकते हैं। लेकिन उनकी बात नहीं सुनी गई।

किसी भी देश के प्रधान मंत्री, जो अधिकतर निर्णय लेते हैं, उच्चतम राजनीतिक चालाक व्यक्ति होते हैं लेकिन कोई भी सरकारी कौशल, अध्यात्मिक कौशल, आर्थिक कौशल या वैज्ञानिक

कौशल वाले व्यक्ति नहीं होते है। वह एक जटिल वैज्ञानिक समस्या का गहराई से, पूरी गहराई से अध्ययन करने में असमर्थ होते है। वह सोचता है जैसे कि उसे कोई नारा लगाना है।

सरकार में, मीडिया में और आम जनता में सामूहिकता शायद मौजूदा पागलपन का कारण है। यदि एक महत्वपूर्ण व्यक्ति लॉकडाउन के लिए निर्णय लेता है, तो अन्य सदस्य अभी चुप बने हुए हैं। उन्हें यह समझना चाहिए कि अनिवार्य मास्क, सामाजिक दूरता और लॉकडाउन जैसे ड्रैकियन उपाय आवश्यक कदम नहीं हैं।

दिव्यम (105): - क्या लॉकडाउन समस्या को हल कर सकता है?

मैं: नहीं, बिल्कुल नहीं। कभी नहीं। भारत द्वारा लॉकडाउन का विकल्प चुनने से पहले से ही मैं इसके खिलाफ था। फरवरी 2020 से ही मैंने आम लोगों को शिक्षित करने की कोशिश की। मैंने आम लोगों को जगाने की कोशिश की; फेसबुक पर विभिन्न पोस्ट, लेख और वीडियो पोस्ट करके मैंने उनको जगाने का प्रयास किया। मैंने लोगों को जागरूक करने के लिए यूट्यूब पर कई वीडियो अपलोड किए और जनता को जागरूक करने की कोशिश की कि लॉकडाउन इस समस्या को हल नहीं करेगा।

भारत ने 21 दिनों का पहला लॉकडाउन, 19 दिनों का दूसरा लॉकडाउन, 14 दिनों का तीसरा लॉकडाउन और 40 दिनों का चौथा लॉकडाउन घोषित किया। अनलॉक भी एक नए प्रकार का

लॉकडाउन है। पहला अनलॉक 30 दिनों का, दूसरा अनलॉक 31 दिनों, तीसरा अनलॉक 31 दिनों का, चौथा अनलॉक 30 दिनों का किया गया। अब भारत 31 दिनों के पाचवे अनलॉक के तहत है। जनता को भ्रमित करने के लिए इसका नाम अनलॉक रखा गया है, परन्तु है यह भी लॉक डाउन ही।

कुछ राज्य 10 दिनों का लॉकडाउन कर रहे हैं, अन्य 3 दिनों का लॉकडाउन का चयन कर रहे हैं और कुछ शनिवार एवं रविवार का लॉकडाउन कर रहे हैं। कुछ रात्रिकालीन लॉकडाउन कर रहे हैं। दिनों की संख्या चुनने में कोई तर्कसंगत बात नहीं है। यह मनमाना, अवैज्ञानिक और अनुचित है। अनलॉक के नाम पर लॉकडाउन आगे चल रहा है। क्या कोई राजनेता या प्रशासनिक अधिकारी जनता को जवाब दे सकता है कि वे दिनों का चुनाव किस आधार पर कर रहे हैं? तर्कसंगत क्या है? वे किस विज्ञान का अनुसरण कर रहे हैं? यह नकली महामारी है, एक नकली विज्ञान है, नकली लोगों द्वारा हमें मूर्ख बनाने के लिए।

इस लॉकडाउन से देश का पूरा विनाश होगा। अब हमें महंगाई, बेरोजगारी और गरीबी का सामना करना पड़ रहा है। विश्व रेटिंग सूची में भारत की आर्थिक रेटिंग पहले ही नकारात्मक या कबाड़ हो गई है। भारत की अर्थ व्यवस्था 24 प्रतिशत नकारात्मक हो गई है जो की पहले 6 प्रतिशत धनात्मक थी। इस प्रकार से अर्थ व्यवस्था लगभग 30 प्रतिशत गिर गई है।

मीडिया को इसके खिलाफ बोलना चाहिए लेकिन वे अपना कर्तव्य नहीं निभा रहे हैं। वे पक्षपाती लगते हैं; संभवतः उन्हें बड़े संभ्रांत दिग्गजों द्वारा खरीदा गया है।

दिव्यम (106): - क्या मीडिया की भूमिका संदिग्ध है?

मैं: मीडिया ने उचित, वास्तविक, सभ्य, बुद्धिमान चर्चा का भ्रम पैदा किया लेकिन वास्तविकता अलग है। मीडिया पक्षपाती है। मीडिया या तो उन लोगों को नहीं बुला रहा है जो सच बोल रहे हैं या अगर उन्होंने उन्हें बुलाया भी तो मीडिया ने उन्हें अपने शब्दों को पूरा करने के लिए पर्याप्त समय नहीं दिया। मीडिया की चर्चा में गहराई, निष्पक्ष या संतुलन नहीं है।

मीडिया उन लोगों को मौका नहीं दे रहा है जो कोवीड-19 के महत्वपूर्ण विषय पर एक अलग सोच रखते हैं। दर्शकों को एक निष्पक्ष चर्चा नहीं मिल पा रही है। मीडिया उन लोगों की सुनवाई नहीं कर रहा है जो सच बोल रहे हैं। मीडिया को इन वैज्ञानिक लोगों को सुनना चाहिए जो अनिवार्य मास्क पहनने और लॉकडाउन के खिलाफ सख्त उपायों के खिलाफ हैं।

मीडिया ने चुपचाप नकारात्मक काम किया। उन्होंने हरामी की तरह काम किया। उनमें से ज्यादातर भ्रष्ट हैं। उन्होंने बड़े पैमाने पर लोगों को शिक्षित करने, ज्ञान फैलाने के नाम पर, आम लोगो

को डराने के लिए पैसा लिया है। लेकिन वे गलत शिक्षा, गलत ज्ञान को सामान्य जन तक फैला रहे हैं।

मीडिया वे लोग हैं जो हमेशा अपने अतिरिक्त अधिकारों के लिए लड़ते हैं, लेकिन ये लोग कोई जिम्मेदारी नहीं लेते हैं। ये ऐसे व्यक्ति हैं; जिनके पास कई अधिकार हैं लेकिन बिना किसी जिम्मेदारी के।

मुख्य मीडिया भय का माहौल बनाकर अपने व्यापार को फलाता-फूलाता है। वे एक सामान्य मुद्दे की संवेदनशीलता से समृद्ध होते हैं। वे नाटक रचते हैं। इनमें से अधिकांश पूर्व नियोजित होते हैं। यह वे अपने उन ग्राहकों के लिए करते हैं, जिन्होंने उन्हें भुगतान किया है। सत्य का उन्हें कोई मतलब नहीं है।

वे सत्य के रूप में विरोधी-सत्य का प्रसार कर रहे हैं। वे असत्य का प्रचार कर रहे हैं। वे लगातार झूठ बोल रहे है। कई मीडिया रिपोर्ट्स में कहा गया है कि अस्पताल उच्च दबाव में हैं और डॉक्टर इस महामारी से लड़ने के लिए फ्रंट लाइनों पर काम कर रहे हैं। कड़वा सच यह है कि अधिकांश अस्पताल खाली पड़े हैं और अधिकांश छोटे क्लीनिक बंद हैं।

वे समाज में दहशत पैदा करते हैं। उन्होंने भय के वातावरण का निर्माण, समर्थन और रखरखाव किया, उन्हें दंडित किया जाना चाहिए। हमें उनका बहिष्कार करना चाहिए।

दिव्यम (107): - एक आम आदमी मीडिया का बहिष्कार कैसे कर सकता है?

मैं: मीडिया समाचार कई बार गलत, मनगढ़ंत और अपनी स्वयं की छिपी रुचि होती है। हमें उनका बहिष्कार करना चाहिए।

- **सबसे पहले, हमें टीवी न्यूज़ देखना बंद करना होगा।**
- **दूसरी बात, अखबारों को पढ़ना बंद करो।**
- **तीसरा, हमें विज्ञापन दाताओं के सभी नामों पर ध्यान देना चाहिए एवं उनके उत्पादों को खरीदना बंद करना चाहिए।**
- **चौथा, विज्ञापनदाता, कंपनियों और व्यक्तियों को एक मेल भेजें या इनको एक कॉल करें कि हम आपके उत्पादों को नहीं खरीदेंगे, जब तक कि आप टेलीविजन और समाचार पत्रों पर अपने उत्पादों के विज्ञापन बंद नहीं करेंगे।**

देश को बचाने के लिए और मीडिया माफिया के हाथों से मानव जाति को बचाने के लिए, हमें उनका बहिष्कार करने की आवश्यकता है।

मीडिया को लोगों से कहना चाहिए कि मुखौटे सुरक्षात्मक नहीं हैं, लेकिन वे कुछ विपरीत बात कह रहे हैं। मीडिया को बताना होगा कि कोरोना वायरस से बचाने में सैनिटाइज़र की कोई भूमिका नहीं है लेकिन वे विपरीत बात कह रहे हैं। हमें मीडिया का बहिष्कार

करना चाहिए। हमें मीडिया का बहिष्कार करना चाहिए। हमें मीडिया को दंडित करना चाहिए।

दिव्यम (108): - क्या सैनिटाइज़र से कोरोना संक्रमण से बचा जा सकता है?

मैं: नहीं, मीडिया जो यह कह रहा है, वह सब झूठ है। मीडिया ने लोगों के दिमाग में एक फोबिया पैदा कर दिया है। इस मीडिया के कारण बड़े पैमाने पर भय और जन आतंक पैदा हुआ, लोग नियमित रूप से अपने हाथ और शरीर के अंगों को धो रहे हैं और यह सोच रहे हैं कि यह हमें खतरनाक वायरस से बचा रहा है।

हस्त सैनिटाइज़र में अल्कोहल बार-बार उपयोग करने पर आपके रक्तप्रवाह में प्रवेश करेगा जो कि लत का कारण बन सकता है। इसके अलावा सैनिटाइज़र के कई दुष्प्रभाव हैं।

दिव्यम (109): - सैनिटाइज़र के क्या दुष्प्रभाव हैं?

मैं: सैनिटाइज़र बहुत हानिकारक पदार्थ हैं। दोनों प्रकार के सैनिटाइजर अल्कोहल और गैर-अल्कोहल आधारित हस्त सैनिटाइजर के सबसे सामान्य प्रकार के प्रतिकूल स्वास्थ्य प्रभाव इस प्रकार हैं- नेत्र संबंधी जलन, उल्टी, नेत्रश्लेष्मलाशोथ, मौखिक जलन, खांसी और पेट में दर्द। दुर्लभ साइड इफेक्ट्स में कोमा, दौरा पड़ना, हाइपोग्लाइसीमिया, मेटाबॉलिक एसिडोसिस और श्वसन अवसाद शामिल थे। अब मैं तुम्हें विस्तार से बताऊंगा।

• सबसे पहले, अत्यधिक उपयोग आपके शरीर के माइक्रो-बायोम की सामान्य मात्रा को बदल सकता है। हां, यह अधिकांश कीटाणुओं को मारता है, लेकिन बड़ी महत्वपूर्ण समस्या यह है कि अच्छे कीटाणु भी मारे जाते हैं। ये अच्छे रोगाणु जो आपको संक्रमण से बचाते हैं, वे भी मारे जाते हैं, इसलिए सैनिटाइज़र आपकी प्रतिरोधक क्षमता को कम कर देता है। बैक्टीरिया को मारने में सैनिटाइज़र अधिक मजबूत होता है। सैनिटाइजर उन बैक्टीरिया को भी मारता है जो हमारे शरीर के लिए फायदेमंद होते हैं, अर्थात ये हमारे लाभदायक बैक्टीरिया की गिनती को कम कर सकते हैं। इसका समाधान यह है कि लोगों को कुछ अतिरिक्त सावधानी के साथ हस्त-सैनिटाइज़र का उपयोग करना चाहिए और केवल तब ही जब वे साबुन और पानी तक पहुंच नहीं रखते हो। यहां तक कि राख और पानी शरीर से हानिकारक माइक्रो-बायोम को निकालने के लिए पर्याप्त हैं।

• दूसरा, यह आपके एक्जिमा के खतरे को बढ़ा सकता है। सैनिटाइज़र से आमतौर पर जलन और एलर्जी होती है और इससे हाथ की सूजन और एक्जिमा का खतरा बढ़ सकता है। यह आमतौर पर त्वचा पर लालिमा, सूखापन, कठोरता, दरारें और यहां तक कि फफोले की खुजली, सूजन या दर्द का कारण बनता है।

• तीसरा, इसका अत्यधिक उपयोग एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी बैक्टीरिया को विकसित कर सकता है। रोग नियंत्रण और रोकथाम

केंद्र (CDC) कहता है कि जीवाणुरोधी पदार्थों के साथ हस्त-प्रक्षालक एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी मजबूत बैक्टीरिया के विकास में योगदान कर सकते हैं। इसलिए सैनिटाइज़र के बजाय पानी से अपने हाथों को धोना चाहिए। या पानी के साथ राख का उपयोग करें जो बेहतर स्वास्थ्य स्वच्छता भी है। एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी बैक्टीरिया एंटीबायोटिक दवा की मात्रा को सहन करने की क्षमता रखता है जो अन्यथा उन्हें मारने में सक्षम होना चाहिए था। या तो एंटीबायोटिक उन्हें नहीं मारेंगे या उन्हें मारने के लिए उच्च खुराक की आवश्यकता होगी। कुछ सैनिटाइजर में ट्राईक्लोसन होता है। ट्राईक्लोसन एंटीबायोटिक दवाओं के प्रति प्रतिरोध विकसित करने वाले बैक्टीरिया की संभावना को बढ़ाता है। एंटीबायोटिक दवाओं का ओवर-एक्सपोज़र या अनुचित एंटीबायोटिक उपयोग बैक्टीरिया-प्रतिरोध का कारण बन सकता है, जिससे भविष्य में इलाज करना अधिक कठिन या असंभव हो सकता है।

• चौथा, हस्त सैनिटाइज़र गंदगी और कीचड़ को हटाने के लिए उतने प्रभावी नहीं हैं। यदि आपके हाथ बहुत ज्यादा गंदे हैं तो हस्त सैनिटाइज़र सभी कीचड़ को हटाने में सक्षम नहीं होगा। हस्त सैनिटाइज़र सभी गंदगी को दूर नहीं करता है और जब हमारे हाथ कीचड़ से गंदे होते हैं तब कीटाणुओं को मारने में कम प्रभावी होता है।

• पांचवां, गर्म पानी और साबुन से हाथ धोना किसी भी रोगाणु को मारने का सबसे अच्छा तरीका है। हस्त-प्रक्षालक सूत्र में प्राथमिक कीटाणुनाशक घटक एक अल्कोहल होता है - ईथाइल या आइसोप्रोपिल अल्कोहल। इसके अलावा, शराब की गंध को दूर करने के लिए उनके साथ सुगंधित सॉफ्टनर जोड़े जाते हैं। इसके बार-बार उपयोग से त्वचा में जलन हो सकती है। यदि आपकी त्वचा ज्यादा संवेदनशील है तो प्रभाव और भी खराब हो सकते हैं।

• छठा, अत्यधिक और गैर-जरूरी उपयोग आपके हाथों को शुष्क बना सकता हैं। यदि आप हर दिन या हर कुछ घंटों के बाद हस्त सैनिटाइज़र का उपयोग कर रहे हैं, तो हस्त सैनिटाइज़र में मौजूद शराब आपकी त्वचा को शुष्क कर सकती है। आप अपने हाथों को साफ करने के लिए साबुन और पानी के लिए जा सकते हैं। या आप अपने हाथों को साफ करने के लिए राख और पानी का उपयोग कर सकते हैं।

• सातवां, यह आपको बांझ बना सकता है। कुछ गैर-अल्कोहल आधारित हस्त सैनिटाइज़र हैं जो एक एंटीबायोटिक घटक से बने होते हैं जिन्हें ट्राईक्लोसन या ट्राईक्लोकोबन कहा जाता है। ट्राईक्लोसन एक खतरनाक पदार्थ है, क्योंकि इसके उपयोग या अति प्रयोग से प्रजनन क्षमता और भ्रूण के विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आगे यह अस्थमा के बढ़े हुए एपिसोड का कारण बन सकता है।

• आठवां, यह शराब विषाक्तता का कारण बन सकता है। हस्त सैनिटाइज़र से शराब विषाक्तता हो सकती हैं। किशोर उच्च जोखिम में होते हैं। हमने कुछ रिपोर्टों को देखा है कि किशोरों को हाथ के सैनिटाइज़र के सेवन से शराब के जहर के साथ अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा था। कुछ-कुछ मिनट में सेनिटाइजर लगाना और सेनिटाइजर का शरीर के अंदर जाने से आपके शरीर में शराब इकट्ठा हो सकती है। तो इससे शराब विषाक्तता का खतरा बढ़ जाता है। रोग नियंत्रण केंद्र (CDC-US) का कहना है कि विशेष रूप से छोटे बच्चे को हाथ-प्रक्षालक को निगलने का उच्च जोखिम होता है। हाथ सैनिटाइज़र आमतौर पर सुगंधित, चमकीले रंग या आकर्षक रूप से पैक किए जाते हैं। इसलिए बच्चे बहुत आकर्षित होते हैं। इसलिए हमें इसे हमेशा बच्चों की पहुंच से दूर रखना चाहिए।

• नौवां, यह हार्मोन असंतुलन का कारण बन सकता है। एफडीए (FDA) कहता है कि एक हस्त सैनिटाइज़र में मौजूद ट्राईक्लोसन भी हार्मोन की समस्याओं का कारण बनता है। कुछ सैनिटाइजर में सुगंध होती है। सुगंध में थेलेट्स होते हैं। थेलेट्स अंतःस्रावी तंत्र को बाधित कर सकता है। एंडोक्राइन हार्मोन सिस्टम को बिगाड़ सकता है। तो सैनिटाइज़र हार्मोनल असंतुलन को जन्म देगा। वे जननांग विकास को भी बदल सकते हैं।

• दसवां, हाथ-प्रक्षालक कभी भी विस्फोट कर सकता है। जो रसायनों के साथ काम करते हैं, उन लोगों के लिए यह बहुत जोखिम भरा है। हस्त सैनिटाइजर कभी भी फट सकता है और खतरनाक हो सकता है। किसी-किसी व्यक्ति को पूरे दिन रसायनों के साथ काम करना पड़ता है। और डर के कारण आप यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि आपके हाथ साफ हों। यदि आप दमदार सफाई एजेंट, डी-ग्रीसिंग सामग्री और कीटनाशकों के साथ काम करते हैं तो हस्त सैनिटाइज़र आपके शरीर के लिए बहुत हानिकारक हो सकता है। किसान और खेत मजदूर पहले से ही अपने शरीर में कीटनाशकों के स्तर में वृद्धि कर चुके है और सैनिटाइज़र का प्रभाव आगे चलकर और अधिक बुरा प्रभाव डाल सकता है।

• ग्यारहवां, यह आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को प्रभावित कर सकता है। ट्राईक्लोसन भी मानव प्रतिरक्षा प्रणाली और प्रतिक्रिया को कमजोर करता है। कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली लोगों को एलर्जी और अन्य संक्रमण के लिए अतिसंवेदनशील बना देती है। और यह प्लास्टिक में जहरीले रासायनिक बिस्फेनॉल-ए के प्रति भी अधिक संवेदनशील बना देता है। जैसा कि आप जानते हैं कि प्लास्टिक कैंसर को प्रेरित कर सकता है। तो यह कैंसर का कारण बन सकता है। यह पाया गया था कि वो स्वास्थ्य कर्मचारी जो नियमित हाथ धोने के लिए साबुन और पानी के बजाय हस्त

सैनिटाइज़र का उपयोग करते थे, नोरोवायरस के प्रकोप के लिए लगभग छह गुना अधिक जोखिम थे। नोरो वायरस तीव्र आंत्रशोथ का एक प्रेरक एजेंट है। यह पाया गया है कि ट्राइक्लोसन के उच्च स्तर वाले बच्चों और किशोरों में गैस्ट्रो-एंटरोटाइटिस, हे-फीवर और अन्य एलर्जी विकसित होने की अधिक संभावना थी।

• बारहवां, इसमें जहरीले रसायन हो सकते हैं। कभी-कभी, हाथ-प्रक्षालक सुगंधित और जहरीले रसायनों से भरा होता है। कानून कंपनियों के पक्ष में हैं। कानून के तहत, कंपनियों को सामग्री का खुलासा करने की आवश्यकता नहीं है। सिंथेटिक सुगंध में थेलेट्स (phthalates) और पेराबेन्स (parabens) होते हैं जो बहुत-बहुत हानिकारक होते हैं।

• तेरहवां, वे विकास को मंद कर सकते हैं। जैसा कि आप अब जानते हैं कि थेलेट्स (phthalates) अंतःस्रावी व्यवधान हैं जो मानव शरीर के विकास और प्रजनन को प्रभावित कर सकते हैं। पेराबेन्स (parabens) रसायन होते हैं जो हार्मोन, प्रजनन क्षमता, जन्म के परिणामों और प्रजनन विकास के कामकाज को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

• चौदहवां, वे आग की घटनाओं को बढ़ा सकते हैं। हमने रसोई में काम करने वाली कुछ महिलाओं को अचानक आग पकड़ने के बारे में सुना है। उनके हाथ जल गए। इसकी वजह थी हस्त-

सैनिटाइजर। यहां तक कि अगर आप अपनी कार में अत्यधिक सैनिटाइज़र का उपयोग करते हैं, तो यह आग पकड़ सकता है। हस्त-सैनिटाइजर अत्यधिक ज्वलनशील होते हैं।

तो, अब आप समझ गए हैं कि सैनिटाइज़र वास्तव में उतना उपयोगी नहीं है जितना मीडिया द्वारा बताया गया है। मास्क, हस्त सैनिटाइज़र, संगरोध और अलगाव समाज में केवल झूठी महामारी का प्रचार करने के लिए हैं। वे सिर्फ समाज में भय पैदा करने के लिए हैं।

दिव्यम (110): - संगरोध (Qurantine) क्या है?

मैं: संगरोध उन स्वस्थ लोगों को अलग करता है और प्रतिबंधित करता है जो एक संक्रामक बीमारी या संक्रमण के संपर्क में थे। यह उन लोगों के लिए भी किया जाता है जो किसी बीमारी के संपर्क में आ सकते हैं और यह नहीं जानते हैं कि उन्हें यह बीमारी हो सकती है क्योंकि लक्षण नहीं दिखते हैं।

दिव्यम (111): - अलगाव (Isolation) क्या है?

मैं: अलगाव एक संक्रामक बीमारी वाले बीमार लोगों को उन लोगों से अलग करता है जो बीमार नहीं हैं। अलगाव अर्थात रोगी की अलग-थलग करना। इस कोरोना समय में अलगाव बहुत खतरनाक है। डब्ल्यूएचओ ने इन रोगियों को गिनी-पिग के रूप में उपयोग किया है। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन एकजुटता परीक्षण' के नाम पर

मरीजों को खतरनाक दवा दी जा रही है। अलग-थलग पड़े रोगियों के लिए बहुत सी खतरनाक दवाएँ प्रयोग की जा रही हैं। यहां तक कि कुछ डॉक्टर स्टेरॉयड का उपयोग कर रहे हैं।

दिव्यम (112): - क्या स्टेरॉयड एक अच्छा इलाज है?

मैं: कुछ डॉक्टर एक स्टेरॉयड - प्रेडनिसोलोन, उपचार के रूप में दे रहे हैं। हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि प्रेडनिसोलोन का उपयोग क्यों किया जाए लेकिन कुछ डॉक्टर इसका उपयोग कर रहे हैं। प्रेडनिसोलोन आपकी प्रतिरक्षा को और कम कर सकता है। प्रेडनिसोलोन एक अच्छी दवा नहीं है और इसके कई दुष्प्रभाव हैं।

दिव्यम (113): - प्रेडनिसोलोन के साइड इफेक्ट्स क्या हैं?

मैं: मैं आपको एक वेबसाइट rxkind पर ले जाऊंगा। यहाँ आप प्रेडनिसोलोन के दुष्प्रभावों की सूची देख सकते हैं जो इस प्रकार है-

- संक्रमण की संभावना बढ़ना,
- असंतोष,
- अनिद्रा,
- भूख कम लगना,
- मतली,
- सिर दर्द,
- चक्कर आना,
- मासिक धर्म परिवर्तन,

- पसीना बढ़ गया,
- मुँहासे और
- घबराहट

मरीजों के लिए घातक दवाओं का उपयोग करना मानवता के लिए अच्छा नहीं है। मूल रूप से ऐसा लगता है कि डब्ल्यूएचओ कोरोना वायरस की मृत्यु दर को बढ़ाना चाहता है ताकि वे कह सकें कि यह एक सच्ची महामारी है।

दिव्यम (114): - क्या महामारी की पुष्टि या खंडन करने का कोई अन्य तरीका है?

मैं: हां। भारत और अन्य देशों में औसत मासिक मृत्यु दर की गणना पूर्व-कोवीड समय और कोवीड समय में की जानी चाहिए। यह मासिक, त्रैमासिक छह मासिक और वार्षिक रूप से तुलना की जानी चाहिए। कोवीड अवधि में कुल मौतों की संख्या और उसी महीने में पूर्व-कोवीड अवधियों को ध्यान में रखा जाना चाहिए और उसके अनुसार दोनों समयावधि की तुलनात्मक मौतों का अध्ययन करना चाहिए। यदि मृत्यु दर या मृत्यु की कुल संख्या में अंतर काफी अधिक है तो महामारी का दावा सही है अन्यथा यह एक झूठी महामारी है; लोगों को फंसाने के लिए एक नकली महामारी; हमें गुलाम बनाने के लिए एवम हम पर नज़र रखने के लिए एक नकली महामारी; ट्रैप करने के लिए एक नकली महामारी ।

दिव्यम (115): - यह ट्रैकिंग ऐप क्या है?

मैं: यह ट्रैकिंग ऐप नहीं बल्कि आप इसे ट्रैपिंग ऐप कह सकते हैं। यह ट्रैकिंग ऐप नहीं हैं, यह आपको फंसाने के लिए बनाया गया ऐप हैं। जो भी काम करता है उसके लिए आपके पास ट्रैकिंग-ऐप होना चाहिए। हालाँकि यह वर्तमान में हवाई या रेल द्वारा यात्रा करने के लिए अनिवार्य नहीं है लेकिन सरकार इसे यात्रा के लिए अनिवार्य भी कर सकती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि सरकार आपकी गोपनीयता को चुराना चाहती है। यह दासता की ओर एक कदम है। यह आपको गुलाम बनाने के लिए किया जा रहा हैं। यहां तक कि गूगल जैसे बड़े दिग्गज भी आपकी गोपनीयता का उल्लंघन करते हैं।

दिव्यम (116): - क्या गूगल हमारी गोपनीयता भी चुराता है?

मैं: हां। दुनिया की नंबर एक वेबसाइट गूगल पर पहले ही अपने उपयोग-कर्ताओं की गोपनीयता चुराने का आरोप लग चूका हैं। यह आपके हर गतिविधि को सूक्ष्मता से दर्ज करता है।

एंड्रॉइड डिवाइस पर कई गूगल सेवाएं आपकी अनुमति के बिना आपके स्थान डेटा को संग्रहीत करती हैं। यहां तक कि अगर आपने एक ऐसी गोपनीयता सेटिंग का उपयोग किया है जो स्थान-बंद कहता है, जहां आप अपना स्थान बताने की अनुमति नहीं देते है तो भी वे आपके स्थान को रिकॉर्ड करेंगे। यहां तक कि स्थान

के इतिहास को रोकने या बंद करने के बाद भी, कुछ गूगल ऐप्स आपसे और आपकी अनुमति के बिना, समय और स्थान डेटा को स्वचालित रूप से संग्रहीत करते हैं।

दिव्यम (117): - मैं इसकी पुष्टि करना चाहता हूं। इसकी पुष्टि कैसे करें?

मैं: यदि आप इसकी पुष्टि करना चाहते हैं, तो बस गूगल पर मेरी गतिविधि पर जाएं। अपने कंप्यूटर या लैपटॉप से myactivity.google.com पर जाएं। अन्य गूगल गतिविधि पर जाएं और फिर गतिविधि का प्रबंधन करें। और आप आप पाएंगे कि आपकी सभी गतिविधियां यहां दर्ज हैं।

गूगल आपके मोबाइल उपयोग के हर मिनट के विवरण को संग्रहीत करता है जिसमें आपके द्वारा खोले और बंद किए गए एप्लिकेशन शामिल हैं। आपकी सभी इंटरनेट गतिविधि रिकॉर्ड की गई हैं। यहां तक कि आपने लोकेशन ऑफ कर दिया है; तब भी गूगल एंड्रॉइड फ़ोन आमतौर पर जानकारी एकत्र करते रहते हैं और गूगल को जानकारी भेजते रहते हैं।

दिव्यम (118): - क्या गूगल इस कोरोना सुपर गेम में शामिल है?

मैं: शामिल लगता है। गूगल ने कुछ ऐसे पृष्ठ भी हटा दिए हैं जिनमें कोरोना झूठी महामारी की सच्ची तस्वीर दिखाई गई है। या तो गूगल इन सत्य-भाषी वेबसाइटों को नहीं दिखा रहा है या उन्हें

अंतिम पृष्ठों पर दिखा रहा है। तो, ऐसा लगता है कि गूगल ने उन लोगों के साथ हाथ मिलाया है जो हमारी अर्थव्यवस्था को नष्ट करना चाहते हैं।

दिव्यम (119): - क्या फेसबुक भी इसमें शामिल है?

मैं: फेसबुक पक्षपाती लगता है। यह उन पन्नों को हटा रहा है जहां लोग सच कह रहे हैं। फेसबुक किसी भी पोस्ट को फर्जी या सच कैसे कह सकता है। फेसबुक अपने यूजर्स को अकाउंट की चेतावनी जारी कर रहा है। फेसबुक ने मुझे एक खाता चेतावनी भी जारी की है। उसने मुझे कई बार कमेंट करने से एवं पोस्ट डालने से रोक लगा दी है ।

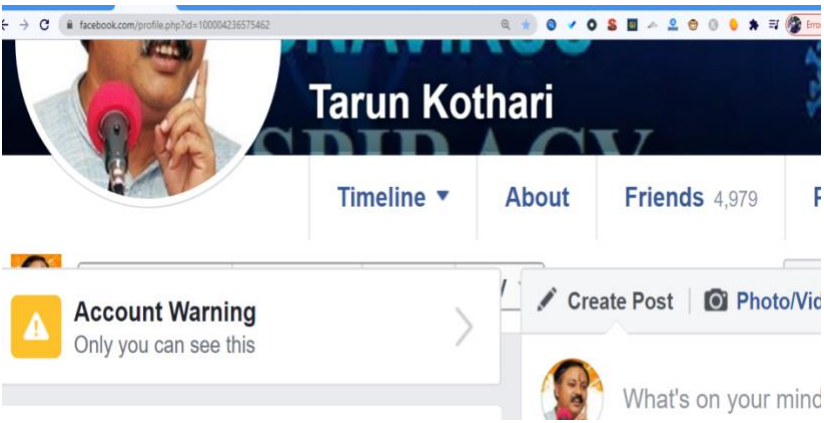

ऐसा लगता है कि वे फार्मा उद्योग के निर्देश के तहत काम कर रहे हैं। मैं एमबीबीएस, एमडी योग्यता वाला डॉक्टर हूं; इसलिए मैं

कोरोना के बारे में बेहतर जानता हूं या जुकरबर्ग कोरोना के बारे में बेहतर जानता है?

फार्मा कंपनियां हर दिन नए प्रिंसिपल का वर्णन कर रही हैं, अपने पुराने स्टैंड को बार-बार बदलकर विज्ञान का मजाक बना रही हैं। अधिकांश संगठनों पर बड़े षड्यंत्रकारियों का नियंत्रण है। श्री मार्क जुकरबर्ग का कहना है कि कोवीड-19 गलत सूचना पर फेसबुक अपने उपयोगकर्ताओं को चेतावनी देना शुरू करेगा, यदि वे पसंद, प्रतिक्रिया या टिप्पणी करते हैं।

फेसबुक सच बोलने वाले पृष्ठों और पोस्ट को हटा रहा है। फेसबुक उन्हें टिप्पणी करने, पोस्ट करने और साझा करने के लिए रोक रहा है।

कोई पोस्ट तथ्य या कल्पना है तो फेसबुक कैसे तय करता है? फेसबुक कैसे तय करता है कि जानकारी सही है या जानकारी गलत है? फेसबुक कैसे तय करता है कि जानकारी वैज्ञानिक या गैर-वैज्ञानिक है?

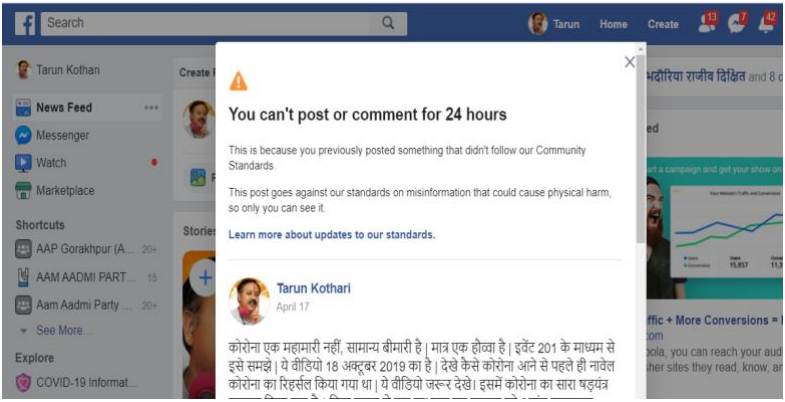

दिव्यम (120): - क्या यूट्यूब भी इसमें शामिल है?

मैं: हाँ, लगता है। यूट्यूब उन वीडियो को हटा रहा है जहां लोग सच बोल रहे हैं। इन वीडियो को गलत सूचना के नाम से हटा दिया गया है। यूट्यूब जनता को मूर्ख बना रहा है। वे कैसे तय कर सकते हैं कि यह जानकारी झूठी है या सच है?

यूट्यूब ने मेरे 20 से अधिक वीडियो हटा दिए हैं। यूट्यूब न केवल व्हिसल-ब्लोअर के वीडियो हटा रहा है, बल्कि उनका अकाउंट भी डिलीट कर रहा है। यूट्यूब ने अब मेरे दोनों चैनल 90 दिनों के लिए ब्लॉक का दिये है| इसलिए मुझे लगता है कि संभवतः इस खेल में यूट्यूब भी शामिल है।

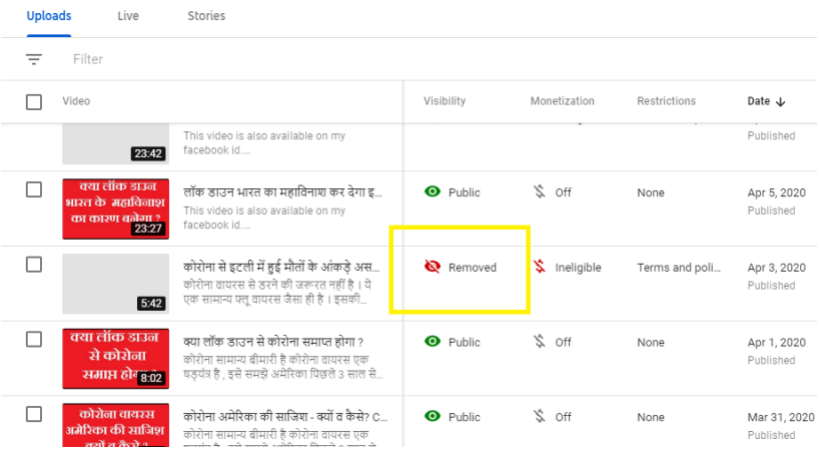

दिव्यम (121): - क्या वैसे भी बुजुर्गों के लिए घर पर रहना बेहतर नहीं है?

मैं: नहीं, बुजुर्गों के लिए घर के अंदर पैक रहना बेहतर नहीं है। भारत में स्थिति और भी खराब है। यहां 10,00,00,000 (10 करोड़) लोगों के पास घर नहीं है। तो उन्हें घर पर रहने का आदेश कैसे दिया जाए? लगभग 30 से 50 फीसदी आबादी एक या दो कमरों के छोटे से घर में रह रही है। हम ऐसे परिवारों के प्रत्येक व्यक्ति को कई महीनों के इतने लंबे समय के लिए कैसे बंद कर सकते हैं।

किसी को भी साधारण सर्दी जैसे बीमारी या फ्लू जैसी बीमारी से डरना नहीं चाहिए। क्या हमारी बुजुर्ग आबादी को खुद को बंद

करना चाहिए और तब तक सामाजिक दूरी बनाए रखनी चाहिए जब तक की वे मर नहीं जाते?

बुजुर्ग आबादी को बल्कि और अधिक धूप और ताजी हवा की जरूरत होती है। बल्कि उन्हें सुबह और शाम दोनों समय और रोजाना पार्क जाना चाहिए। अखबारों को हमें हुक्म नहीं देना चाहिए। वे वैज्ञानिक लोग नहीं हैं। अखबार हमें डरा रहे है।

दिव्यम (122): - अखबार की कहानी अलग क्यों है?

मैं: समाचार पत्रों को भारी भुगतान किया गया है। मीडिया स्टोरी सभी पेड स्टोरी हैं। मीडिया पुरानी छवियों को नवीनतम छवियों के रूप में दिखा रहा है।

उदाहरण के लिए पिछले कुछ समय पहले किसी कब्रिस्तान में कुछ काम चल रहा था। उदाहरण के लिए कहें कि 2015 में, किसी कब्रिस्तान में कुछ खुदाई की गई थी। वहा खुदाई की कुछ मशीने लाई गई थी। मीडिया ने इस पुरानी तस्वीर को उनके पुस्तकालय से लिया और 2020 में दिखाया और कहा कि वहाँ बहुत सारे शव हैं और अधिकारियों को कब्र खोदने के लिए खुदाई मशीनो की आवश्यकता पड़ रही है। यह असत्य की ऊंचाई है। गलत, मनगढ़ंत कहानियां देकर मीडिया दहशत पैदा कर रहा है। मीडिया को इसके लिए बहुत बड़ी सजा दी जानी चाहिए।

मीडिया को झुंड प्रतिरक्षा के बारे में भी जनता को बताना चाहिए और विटामिन-सी, विटामिन-डी जैसे प्राकृतिक प्रतिरक्षा बूस्टर के बारे में भी। मीडिया को समाज से डर को दूर करने के लिए कार्य करना चाहिए।

दिव्यम (123): - झुंड प्रतिरक्षा (Herd Immunity) क्या है?

मैं: झुंड का अर्थ है एक दूसरे के संपर्क में लगातार लोगों का समूह। झुंड का मतलब एक ही वातावरण में रहने वाले लोगों से है। झुंड प्रतिरक्षा का मतलब है कि एक आबादी के भीतर एक संक्रामक बीमारी के प्रसार के लिए प्रतिरोधक क्षमता।

जब आबादी की अच्छी संख्या एक संक्रामक बीमारी के प्रति प्रतिरक्षित होती है, तो यह बाकी आबादी को अप्रत्यक्ष सुरक्षा प्रदान करता है। इसे उन लोगों को झुंड प्रतिरक्षा या झुंड संरक्षण कहा जाता है जो बीमारी के संपर्क में नहीं आते हैं या अभी तक नहीं आये है। अगर वे बीमारी के संपर्क में आ जाते हैं, तो भी उन्हें यह बीमारी नहीं होगी।

उदाहरण के लिए, यदि 70% आबादी वायरस के संपर्क में आई है तो अन्य 30% बीमार नहीं होंगे। इस झुंड प्रतिरक्षा को प्राप्त करने के लिए अधिक से अधिक लोगो को संक्रमण के संपर्क में आना चाहिए। झुंड-प्रतिरक्षा में मृत्यु की संख्या कम हो जाती है, क्योंकि वे भी संरक्षित हैं, जो बीमारी के संपर्क में नहीं हैं।

दिव्यम (124): - दुनिया भर में मौतों की संख्या बढ़ गई है, ऐसा क्यों?

मैं: नहीं, बिल्कुल नहीं। संबंधित सरकारी वेबसाइट के सभी आंकड़ों को देखकर हम देख सकते हैं कि अमेरिका या इटली या भारत में इस मौसम में कोई अधिक मृत्युदर नहीं है। भारत में, प्रत्येक फ्लू के मौसम में, श्वसन संक्रमण या इंफ़्लुएंज़ा जैसी बीमारी से लगभग 3,50,000 लोग मारे जाते हैं। यह न्यूनतम आंकड़ा है। यह दो-तीन गुना भी हो सकता है। इसका मतलब है कि हर साल हर साल फ्लू के मौसम में भारत में इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारी (ILI) के कारण हर दिन 3000 मौतें होती हैं। यह फ्लू के मौसम का है, पूरे साल का नहीं। पूरे वर्ष का डेटा काफी अधिक होना चाहिए।

मीडिया द्वारा कोरोना के रूप में उल्लिखित मौतें वास्तव में गलत गणना, दोहरी गणना, घातक दवा, भय, मुखौटा, सामाजिक गड़बड़ी, अवसाद, आत्महत्या और अन्य प्रतिरक्षा विकारों के कारण हो सकती हैं।

दिव्यम (125): - क्या लॉकडाउन से आत्महत्या के मामले बढ़े हैं?

मैं: हां। ऑस्ट्रेलिया में आत्महत्या की दर कोरोनोवायरस के आर्थिक और सामाजिक प्रभावों के कारण 50 प्रतिशत तक बढ़ने की बात कही गई है। देश के शीर्ष मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ विश्व के प्रमुख शोध वायरस के प्रभाव की भविष्यवाणी करते हैं

जिसके परिणामस्वरूप अगले पांच वर्षों में, ऑस्ट्रेलिया में एक वर्ष में अतिरिक्त 1500 मौतें आत्महत्या से हो सकती हैं।

यह कोरोना महामारी के कारण मानसिक स्वास्थ्य संकट के कारण है। तो इस झूठे महामारी ने मुख्य रूप से आत्महत्या के मामलों को बढ़ा दिया है क्योंकि नौकरी में नुकसान और डर से मनोविकृति बढी है।

कैलिफोर्निया के डॉक्टरों का कहना है कि उन्होंने एक महीने में आत्महत्या के मामलों को देखा है जो एक साल में आत्महत्या के मामलों के बराबर है। इसलिए वे कहते हैं कि यह लगभग 10 से 12 गुना अधिक आत्महत्या है। इसका कारण मानसिक स्वास्थ्य पर लॉकडाउन का प्रभाव है। मानसिक अवसाद एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य समस्या है जिसे इस मीडिया-डेमिक के कारण कई गुना बढ़ा दिया गया है।

दिव्यम (126): - क्या आम लोगों की थर्मल स्क्रीनिंग उपयोगी है?

मैं: नहीं। स्क्रीनिंग बेकार है क्योंकि -

• सबसे पहले, कोरोना वायरस वाहक का 80% अलक्षणिक है और इसलिए इसका पता नहीं लगाया जा सकता है।

• दूसरा, शेष 20% रोगसूचक कोवीड रोगियों में से 50% से 60% को लक्षण के रूप में बुखार नहीं है। इसलिए उन्हें थर्मल स्कैनर से नहीं पहचाना जा सकता है।

• तीसरा, वर्तमान में इस्तेमाल किया जा रहा थर्मल स्कैनर वास्तव में 4 डिग्री F की स्वीकार्य त्रुटि वाला एक औद्योगिक थर्मल स्कैनर है।

तो आप समझ सकते हैं कि वर्तमान थर्मल स्क्रीनिंग विधि से अधिकांश कोरोना वाहक का पता नहीं लगाया जा सकता है। शुरू में हवाई अड्डे और बाद में कालोनियों में नियोजित थर्मल स्क्रीनिंग विधि एक बेकार, समय बर्बाद करने और पैसा बर्बाद करने वाली नीति है।

दिव्यम (127): - क्या लॉकडाउन से संक्रमण रुक सकता है?

मैं: लॉकडाउन जैसे ड्रैकियन उपायों द्वारा किसी भी वायरस को रोकना असंभव है। लॉकडाउन बिल्कुल अवैज्ञानिक तरीका है। आवश्यक सेवाओं में तो कुछ लोग काम कर रहे है।

ताइवान, स्वीडन और अब जापान ने पहले ही दिखा दिया है कि संपूर्ण लॉकडाउन अभ्यास एक पूर्ण रूप से एक बड़ी कॉमेडी है। उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया ने तालाबंदी के कठोर मार्ग का अनुसरण नहीं किया। यहां तक कि उत्तर कोरिया या दक्षिण कोरिया से कोई अतिरिक्त मौत नहीं हुई है। कुछ अफ्रीकी और

एशियाई देशों ने लॉकडाउन का विकल्प नहीं चुना है और ये देश कोई अतिरिक्त मौत नहीं दिखा रहे हैं।

दिव्यम (128): - अगर कोई लॉकडाउन नहीं किया जायेगा तो वायरस के प्रसार को कैसे नियंत्रित किया जा सकता है?

मैं: वायरस को नियंत्रित करना चूहे-दानी में एक चूहे को रखने जैसा नहीं है। वायरस सबसे छोटे कणों में से एक है। और चूंकि कोरोना वायरस घातक नहीं है इसलिए हम वायरस को फैलने दे सकते हैं ताकि हम झुंड की प्रतिरक्षा विकसित कर सकें।

सूरज की रोशनी और ताजी हवा ये दोनों अच्छी दवाएं हैं जो किसी भी वायरल बीमारी के खिलाफ लडने में कारगर हथियार हैं। इसलिए यदि आप अपने आप को घर पर सीमित रखते हैं तो आप वायरस के खिलाफ अपनी लड़ाई में इन दो प्राकृतिक जीवन रक्षक दवाओं से खुद को वंचित कर रहे हैं।

तो लॉकडाउन के परिणामस्वरूप प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होगी। यह कोरोना वायरस एक साधारण वायरस है, घातक नहीं है, इसलिए हमारी प्रतिरक्षा को बढ़ावा देना पर्याप्त से अधिक है। यदि आप स्वाइन फ्लू महामारी को समझ लेंगे तो यह आप बेहतर समझ सकते हैं। उस समय में भी मौत का कारण वायरस नहीं था।

दिव्यम (129): - स्वाइन फ्लू महामारी की क्या कहानी है?

मैं: मैं तुम्हारे साथ स्वाइन फ्लू महामारी के एक संक्षिप्त इतिहास पर चर्चा करूंगा। वर्ष 1920 में, एच1-एन1 (H1N1) स्पेनिश फ्लू का प्रकोप था। इसे दुनिया का सबसे बुरा फ्लू का प्रकोप माना जाता है, जिसमें लगभग 5,00,00,000 लोग मारे गए। इनमें लगभग 50 लाख भारतीय थे। यह माना जाता था कि वायरस बहुत मजबूत था और करोड़ों लोगों की जान लेने के लिए प्रयाप्त खतरनाक था। लेकिन अब चिकित्सा विज्ञान बहुत स्पष्ट रूप से कहता है कि मौतों का वास्तविक कारण वायरस या वायरस के कुछ घातक संस्करण नहीं बल्कि कुछ अन्य कारण थे।

1918-1920 के दौरान, जब भी कोई व्यक्ति फ्लू के लक्षणों के साथ पाया गया उसे अस्पताल में ले जाया गया और उसे एक बंद कमरे में रखा गया। कमरा किसी भी ताजी हवा और उचित धूप से रहित था। इसके अलावा उन्हें अपर्याप्त पोषण दिया गया। इन सभी कारकों ताजी हवा की कमी, धूप की कमी और पोषण की कमी स्वाइन फ्लू महामारी के मामले में मौत के असली कारण थे।

फिर, दुनिया के कुछ अस्पताल 'ओपन एयर हॉस्पिटल्स' के एक नए सिद्धांत के साथ आए। यहां मरीजों को ताजी हवा में रखा गया और धूप भी दी गई। ऐसे अस्पताल से मरीजों को इलाज किया गया और वे इलाज के बाद जीवित रहे।

याद रखें, ताजी हवा हमारे लिए प्रकृति का, ईश्वर का अनमोल उपहार है और सर्वश्रेष्ठ एंटीवायरल हैं। सूरज की रोशनी विटामिन-डी प्रदान करती है और हमारी प्रतिरक्षा में सुधार करती है।

मीडिया द्वारा बार-बार फ्लैश की गई मौतों के आंकड़ों से भ्रमित न हों। कोरोना घातक नहीं है और कोरोना पॉजिटिव की मौत का असली कारण कोरोना नहीं है।

दिव्यम (130): - स्वाइन फ्लू महामारी की तरह, क्या कोवीड-19 की मौतों का असली कारण कुछ और हैं?

मैं: यदि वर्तमान कोरोना महामारी की स्थिति को स्वाइन फ्लू महामारी के प्रकरण के साथ तुलना करें, तो ठीक यही बात हो रही है, यहाँ भी मौतों का कारण कुछ और ही है।

यदि किसी को कोरोना वायरस की जाँच सकारात्मक है तो उस व्यक्ति को पूरी तरह से अलग कर दिया जाता है ताकि व्यक्ति को ताजी हवा और सूरज की रोशनी से काट दिया जाए। इसके अलावा भोजन पैक किया हुआ होता है या आधा पकाया जाता है ताकि व्यक्ति केवल अपना पेट भर सके लेकिन पोषण लगभग नगण्य होता है। साथ ही मरीज अपने परिवार के सदस्यों से दूर रहता है। किसी भी सदस्य को उससे मिलने की अनुमति नहीं है। साथ ही भय का वातावरण है। साथ ही इन मरीजों को प्रयोग के नाम पर खतरनाक दवा दी जाती है। ऐसी स्थिति में रोगी को

ठीक होने में अधिक समय लगता है। और इनमें से कुछ की मृत्यु उपरोक्त कारणों से हो जाती है।

साथ ही, अगर मरीज क्रॉनिक किडनी डिजीज (गुर्दे की बीमारी), डायबिटीज, हार्ट डिजीज, सांस की बीमारी, हाई ब्लड प्रेशर या अन्य किसी बीमारी से ग्रसित है तो उसे और अधिक भय होगा। खतरनाक मलेरिया रोधी दवा हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्वीन और घातक एंटी-वायरल दवाओं के साथ-साथ एंटीबायोटिक के परिणामस्वरूप, क्यू.टी. अंतराल (QT interval) प्रभावित हो जाता है, जिससे कि दिल की धड़कन खतरनाक रूप से कम हो जाती है और अचानक हृदय की धड़कन रुकने का कारण बनती है।

लॉकडाउन और अन्य भय कारक चीजे रक्त शर्करा, रक्तचाप और अवसाद को और बढ़ाते हैं। लगभग 30 से 40 फीसदी आबादी अपनी नौकरी खोने की चिंता कर रही है। इसलिए अवसाद के अंतर्गत आने वाले व्यक्तियों की संख्या बढ़ रही है। सख्त लॉक-डाउन प्रोटोकॉल के कारण लोग अधिक बीमार पड़ रहे हैं।

इसके अलावा मृत्यु के आंकड़े अत्यधिक अतिरंजित हैं। अन्य बीमारियों के कारण होने वाली मौतों को भी कोरोना मौत के रूप में शामिल किया जा रहा है। मृत्यु प्रमाण पत्र में मृत्यु के कारण के रूप में मृत्यु का कारण लिखने के लिए डॉक्टरों को अच्छी मात्रा में प्रोत्साहन राशि का भुगतान किया जा रहा है।

अब ये कारण मृत्यु के वास्तविक कारण हैं जो कि कोरोना मृत्यु के रूप में दिखाए गए हैं। जब प्रकृति खुद को ठीक कर सकती है, तो कृत्रिम उपचार पद्धति के लिए क्यों जाना चाहिए? जब प्रकृति इसके खिलाफ प्रतिरक्षा प्रदान कर सकती है, तो फिर कृत्रिम टीकाकरण के लिए क्यों जाना चाहिए?

दिव्यम (131): - प्राकृतिक और कृत्रिम टीकाकरण में क्या अंतर है?

मैं: जब कोई संक्रमित एजेंट आपके शरीर में प्रवेश करता है तो आपका शरीर संक्रमित एजेंट के एंटीजन के खिलाफ एंटीबॉडी विकसित करेगा। इसमें कुछ दिन लग सकते हैं। लेकिन जब एक ही संक्रमित एजेंट आप पर दूसरी बार हमला करता है तो संक्रामक एजेंट के एंटीजन को बेअसर करने के लिये पहले से ही बनाई गई एंटीबॉडी की सेना को हमारा शरीर तुरंत जारी कर देता है।

मूल रूप से एक टीका आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त संक्रामक एजेंट है या कभी-कभी एंटीजन या टॉक्सोइड का एक कण है। उन्हें मुँह से या इंजेक्शन के रूप में दिया जाता है। इसके बाद वे एंटीबॉडी का उत्पादन करते हैं और आपका शरीर दूसरे आक्रमण या बाद के आक्रमण पर संक्रामक एजेंट को तुरंत पहचान कर लेता है।

अब कोरोना वायरस का उदाहरण लेते हैं। जब यह शरीर में प्रवेश करेगा तो हर कोई बीमार नहीं पड़ेगा। लगभग 80% से 90%

लोग कोरोना वायरस के कारण बीमार नहीं पड़ेंगे। उन्हें यह भी पता नहीं होगा कि वे कोरोनो वायरस के वाहक हैं। केवल 10% से 20% लोग बीमार पड़ते हैं। यहां तक कि उनमें से केवल आधे में ही बुखार और खांसी होगी और ये भी तेजी से ठीक हो जाएंगे। आपका शरीर कोरोनो वायरस से लड़ने के लिए प्रतिरक्षा या एंटीबॉडी विकसित करेगा ताकि अगली बार जब यह आपके शरीर में प्रवेश करे तो आपका शरीर जल्दी से लड़ने की स्थिति में होगा। इसे ही प्राकृतिक टीकाकरण कहा जाता है।

फार्मास्युटिकल उद्योग इस प्राकृतिक टीकाकरण के खिलाफ है। यह वे अपने उत्पाद 'टीके' (वैक्सीन) के माध्यम से हासिल करना चाहते हैं। जब यहीं काम वैक्सीन करता हैं तो इसे कृत्रिम टीकाकरण कहा जाता है।

ये लोग अपने टीके को बढ़ावा देना चाहते हैं। वे जानते हैं कि कोरोना बीमारी, इतनी मामूली बीमारी है कि इसका इलाज घर पर बनी दवा से भी किया जा सकता है। प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेद और होम्योपैथी बिना किसी लागत या न्यूनतम लागत से इसका इलाज कर सकते हैं। एक तरफ एलोपैथी के पास कोई इलाज नहीं है और दूसरी तरफ सरकार सिर्फ एलोपैथिक इलाज के लिए आम लोगों को मजबूर कर रही है। यह एक भद्दा मजाक है।

दिव्यम (132): - क्या आपका मतलब यह है कि कोरोना रोगियों को केवल एलोपैथिक उपचार दिया जा सकता है?

मैं: यदि कोई मरीज कोरोना पॉजिटिव है तो उस मरीज को बंद कर दिया जाता है और उसे केवल एलोपैथिक उपचार दिया जाता है। एक प्रायोगिक दवा रेमेडिसविर, जिसे कोरोना के लिए कभी भी अनुमोदित नहीं किया गया है, रोगियों को दी जाती है या मलेरिया-रोधी दवा हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्वीन दी जाती है, जिसका वायरल रोग से कोई संबंध नहीं है। वास्तव में यह पिछले 40 वर्षों में देखा गया है कि मलेरिया-रोधी दवा हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्वीन के कारण डिस-एरीधमिया हो सकता है। डिस-एरीधमिया का अर्थ है हृदय की अनियमित धड़कन जिसके परिणामस्वरूप अचानक हृदय की गति बंद हो सकती है। यह स्पष्ट है कि इस दवा के परिणामस्वरूप दिल का दौरा या कार्डियक अरेस्ट हो सकता है।

एलोपैथी में कोरोना वायरस का इलाज नहीं है उसके बावजूद भी इन रोगियों को एलोपैथिक दवाएं दी जा रही हैं; वहीं दूसरी ओर वे रोगियों को आयुर्वेदिक और होम्योपैथिक उपचार करने की अनुमति नहीं दे रहे हैं। यहां तक कि आयुर्वेदिक डॉक्टरों और होम्योपैथिक डॉक्टरों को भी मरीजों को देखने की अनुमति नहीं थी। इन डॉक्टरों को कोरोना रोगियों के इलाज की अनुमति नहीं है, मरीजों को लंबी दूरी पर रखा जाता है। या तो यह एक बहुत बड़ी गलती

है या ऐसा कुछ बड़े गेम प्लान के कारण हो सकता है या सरकार दबाव में हो सकती है या रिश्वत के प्रभाव में हो सकती है।

दिव्यम (133): - क्या किसी व्यक्ति के पास अपनी पसंद का इलाज चुनने का विकल्प है?

मैं: नहीं। उन्हें आयुर्वेदिक, प्राकृतिक चिकित्सा या होम्योपैथी जैसे अपनी पसंद की पैथी चुनने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि वह गिनी-पिग या खरगोश या चूहे की तरह एक परीक्षण करने वाले जानवर की तरह है। उसे वो एलोपैथिक दवाएं दी जाती हैं जिनकी कोरोना वायरस बीमारी में कोई उपयोगिता नहीं है। पैथी चुनने के रोगी के मूल अधिकार का उल्लंघन किया जा रहा है।

दिव्यम (134): - आयुष (AYUSH) डॉक्टरों को कोरोना रोगियों के इलाज की अनुमति क्यों नहीं है?

मैं: यह एक सही तथ्य है, उन्हें इसकी अनुमति नहीं है। जब भी कोई आयुर्वेदिक चिकित्सक मरीजों को इलाज के लिए उन्हें सौंपे जाने के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय से संपर्क करता है तो जवाब में उससे सवाल किया जाता है कि क्या उसने कभी कोरोना के मरीज का इलाज किया है। क्या मजाक है?

भारतीय स्वास्थ्य मंत्रालय रोगी का इलाज करने की अनुमति नहीं दे रहा है, बल्कि उनसे पूछ रहा है कि क्या उन्होंने पहले किसी कोरोना रोगी का इलाज किया है। लेकिन मंत्रालय एलोपैथिक

डॉक्टर से ये ही सवाल क्यों नहीं पूछ रहा है? अगर कोई एलोपैथिक डॉक्टर से यही सवाल करे तो क्या होगा? क्या किसी एलोपैथिक डॉक्टर के पास कोरोना के मरीज का इलाज करने का कोई सबूत है? उसके पास सबूत नहीं हैं और न ही हमारे आयुष डॉक्टरों के पास।

किसी भी एलोपैथिक डॉक्टर ने भी इस कोरोना बीमारी से पहले एक भी कोरोना रोगी का इलाज नहीं किया है। आयुर्वेदिक दवाएं किसी भी दुष्प्रभाव से रहित हैं; दूसरी ओर इस बात के प्रमाण हैं कि उपचार के लिए उपयोग की जाने वाली एलोपैथिक दवा के परिणामस्वरूप कई लोग हार्ट अटैक या कार्डियक अरेस्ट, आत्मघाती विचार और अन्य खतरनाक दुष्प्रभावों से प्रभावित हुए हैं।

दिव्यम (135): - क्यों भारत सरकार द्वारा आयुर्वेद या आयुष को एलोपैथ पर महत्व नहीं दिया जाता है या समान अवसर नहीं दिया जाता है?

मैं: हमारी सरकार को यह करना चाहिए। लेकिन यह एक रहस्य है कि वे ऐसा क्यों नहीं कर रहे हैं। यह बड़े खेल का हिस्सा हो सकता है। दुनिया के कई देश अपने मरीजों के लिए आयुर्वेद का उपयोग कर रहे हैं।

ईरान की राजधानी तेहरान में 200 कोरोना पॉजिटिव रोगियों का आयुर्वेदिक उपचार किया गया और परिणाम उत्कृष्ट थे। उपचार के 1 सप्ताह के भीतर 190 रोगी स्वस्थ हो गये और शेष 10 भी तेजी से ठीक होने लगे।

एक तरफ दुनिया के कुछ हिस्सों में आयुर्वेद का उपयोग रोगियों के इलाज के लिए किया जा रहा है और दूसरी तरफ हमारे अपने देश में रोगियों को आयुर्वेद और होम्योपैथिक डॉक्टरों से दूर रखा जाता है। भारत सरकार को एलोपैथ पर आयुर्वेद को तरजीह देनी चाहिए। संभवतः यह कारण हो सकता है - यदि आयुर्वेदिक डॉक्टरों को रोगी का इलाज करने का मौका दिया जाता और यदि वे इसका इलाज कर लेते तो यह साबित हो जाता कि यह एक झूठी महामारी है।

दिव्यम (136): - मैंने सुना है कि हर 100 साल बाद एक महामारी आती है। क्या यह इस बार की सदी की महामारी नहीं है?

मैं: नहीं। क्या कोई पिछली बीस शताब्दियों में बीस महामारी के नामों को बता सकता है? यह आँकड़े सत्य नहीं हैं। महामारी एक ज्योतिषीय घटना की तरह नहीं है। हमारे नीति निर्माता अविश्वसनीय नमूनों पर आधारित अर्थहीन आंकड़ों पर भरोसा कर रहे हैं। यह एक सुनियोजित नकली महामारी है।

सरकार बुरी तरह से 'तैयारी के तर्क' का उपयोग कर रही है। वे कह रहे हैं कि हमें सबसे बुरे के लिए तैयारी करने की आवश्यकता है इसलिए वे सामाजिक दूरी और लॉकडाउन के चरम उपाय कर रहे हैं। लेकिन जब सब कुछ सामान्य है तो सबसे खराब तैयारी के नाम पर लॉकडाउन क्यों किया जाएं?

यह एक बड़ी गेम योजना है। बड़े अभिजात वर्ग और मीडिया घरानों ने कई सरकारों को वह करने के लिए मजबूर किया है जो वे करना चाहते हैं। सरकार अब कठपुतली बन गई है। सरकार उनके हाथों में खेल रही है। अब मीडिया जनता को गुलाम बनाने का उपकरण बन गया है। मीडिया गलत और मनगढ़ंत खबरें देकर जनता की भावनाओं को नियंत्रित कर रहा है। मीडिया झूठे समाचार गढ़ रहा है।

दिव्यम (137): - मीडिया ने समाचार कैसे गढ़े?

मैं: न्यूयॉर्क पोस्ट पर प्रकाशित एक मीडिया लेख में दावा किया गया है कि केंटकी राज्य में तालाबंदी के विरोध के बाद कोरोना वायरस मामलों में सबसे अधिक स्पाइक देखा गया। इसलिए अब मैं विज्ञान और डेटा के प्रकाश में इस तथ्य को बताऊंगा। केंटकी में लगभग 100 लॉकडाउन प्रदर्शनकारी थे। उनमें से किसी को भी कोवीड-19 नहीं मिला। मामलों में बढ़त का कारण प्रदर्शनकारी नहीं हैं। यह एक नकली एवम झूठे समाचार का एक बहुत अच्छा

उदाहरण है जिसे भ्रमित करने, एकमुश्त धोखा देने और बड़े पैमाने पर मनोविज्ञान को बदलने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

आगे मीडिया ने पुरानी तस्वीरों को नई तस्वीर के रूप में दिखाया। किसी कब्रिस्तान या श्मशान घाट में कुछ समय पहले कभी कुछ रखरखाव का काम चल रहा था। जिसके लिए खुदाई करने वाली कुछ मशीने लाई गई थी। मीडिया द्वारा इन पुराने चित्रों का उपयोग करके इन्हें नवीनतम चित्रों के रूप में दिखाया गया; जनता को यह बताते हुए कि यहाँ कई शव हैं और प्रशासन को कब्र खोदने के लिए खुदाई करने वाली मशीने की आवश्यकता पड़ रही है।

इसलिए अगली बार जब आप ऐसी कोई भी खबर देखें, तो हमेशा संदेह करें कि मीडिया आपसे झूठ बोल रहा है। मीडिया पर विश्वास मत करो। उनका उद्देश्य किसी घटना की सच्ची तस्वीर न होकर आपकी संवेदना को उकसाना है। तो कृपया अपने दिमाग और अपनी बुद्धिमत्ता का उपयोग कल्पना की बजाय तथ्यों के के आधार पे निर्णय लेने के लिए, नकली की बजाय विज्ञान के के आधार पे निर्णय पर पहुंचने के लिए करें।

डॉक्टर इस नकली महामारी को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। डॉक्टरों को भी समझना चाहिए और सच बोलना चाहिए। अब दुनिया भर के डॉक्टरों को आगे आना चाहिए। उन्हें मानवता की

खातिर सच बोलने का साहस विकसित करना चाहिए। जब भी सामान्य जन को सच्चाई का पता चलेगा, वे बड़े कुलीनों, सरकार, प्रशासन और मीडिया का धिक्कार करेंगे। दोष डॉक्टरों पर भी आएगा। लोग उनसे पूछेंगे कि जब ये उन्हें लूट रहे थे तब वे चुप क्यों थे।

दिव्यम (138): - डॉक्टर सच क्यों नहीं बोल रहे हैं?

मैं: इसके कई कारण हैं:

1. उपचार करने वाले डॉक्टर नेत्रहीन रूप से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दिशानिर्देशों का पालन करते हैं। उन्हें अपनी सरकार द्वारा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों का पालन करने के लिए मजबूर किया जाता है। डब्ल्यूएचओ और अन्य अंतरराष्ट्रीय निकायों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय दिशानिर्देश तैयार किए जाते हैं जो स्वयं निहित स्वार्थ वाले लोगो द्वारा वित्त पोषित होते हैं।

2. वे स्वतंत्र विचारक नहीं हैं। वे अपनी पाठ्यपुस्तकों में जो कुछ भी पढ़ाया गया है उससे चिपके रहते हैं। उनकी पुस्तकों और पत्रिकाओं को किसी तरह के गलत ज्ञान के साथ इंजेक्ट किया जा सकता है। अपने अध्ययन के दौरान और अभ्यास के बाद के जीवन में वे कभी भी यह परीक्षण नहीं कर पाते हैं कि पुस्तक में लिखा गया सारा मामला सही है या नहीं। उन्हें अपनी पुस्तकों और पत्रिकाओं पर एक अंध विश्वास रखना होता है ।

3. कुछ डॉक्टर, जो इस पूरे घोटाले को उजागर करना चाहते हैं उनके वीडियो डिलीट हो रहे हैं, सोशल मीडिया पर उनकी पोस्ट को डिलीट किया जा रहा है। यू ट्यूब ने मेरे कई वीडियो हटा दिए थे और अब तो मेरा चैनल ही हटा दिया है| मेन स्ट्रीम मीडिया उनके साक्षात्कार नहीं ले रहा है। मेन स्ट्रीम मीडिया को भारी भुगतान किया गया है। जिसकी वजह से वो पहले ही अपना एजेंडा तय कर चुका है।

4. उन्हें अस्पताल मालिकों का भय है, अन्यथा उनके अनुबंध समाप्त हो जाएंगे और वे बेरोजगार हो जाएंगे।

5. फार्मास्युटिकल उद्योग ने सचमुच चिकित्सा पद्धति के पेशे को खरीद लिया है। वे ड्रग्स पर भारी कमीशन देते हैं।

6. कुछ डॉक्टर अदालत में मुकदमेबाजी के डर से सत्य नहीं बोल रहे हैं क्योकि अदालती कार्यवाही में बहुत समय और पैसा खर्च होता है।

7. नियामक संस्थान उच्चतम कार्रवाई कर सकते हैं। वे अनुशासनात्मक कार्रवाई के नाम पर इनके लाइसेंस को रद्द या निलंबित कर सकते हैं। नियामक निकाय उन चिकित्सकों को दंडित कर सकते हैं जो सिस्टम पर सवाल उठाते हैं।

8. वे इस डर में हैं कि पुलिस उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कर सकती है। उन्हें डर है कि सरकार उनके खिलाफ कार्रवाई

कर सकती है। विभिन्न पार्टी कार्यकर्ताओं के हमलों से वे और अधिक भयभीत हैं क्योंकि उनके विचारों को उनकी पार्टी के नेता के खिलाफ एक विचार के रूप में माना जा सकता है।

9. सरकारी डॉक्टर सरकारी नियमों और विनियमों का पालन करने के लिए बाध्य हैं। वे खुलकर अपने विचार व्यक्त नहीं कर सकते।

10. मेरे कुछ साथियों ने सच बताना शुरू कर दिया। लेकिन रोगियों के द्वारा उनके प्रति शत्रुतापूर्ण व्यवहार किया गया क्योंकि मरीजों को मीडिया द्वारा गलत तरीके से सिखाया गया था। इसलिए बाद में उन्होंने इसे और अधिक लोगों को बताने का विचार छोड़ दिया और चुप्पी साध ली।

दिव्यम (139): - डॉक्टर भी मर रहे हैं; यदि वायरस घातक नहीं है तो यह कैसे संभव है?

मैं: कई कारक हैं -

 सबसे पहले आपको डॉक्टरों की प्राकृतिक मृत्यु के आंकड़ों को जानना चाहिए। क्या आप जानते हैं कि हर साल, हर महीने, हर दिन कितने डॉक्टर लोग की मृत्यु होती हैं? सामान्य मृत्यु दर क्या है? बस भारत के लिए इसकी गणना करें। भारत में प्रति वर्ष लगभग 7.3 प्रति 1000 की मृत्यु दर है। सालाना 1,00,00,000 लोग मारे जाते है। यह मौत का आंकड़ा सबसे कम

है। हम आसानी से समझने के लिए 1,00,00,000 की संख्या ले रहे हैं; वास्तविक मृत्यु का आंकड़ा इससे अधिक है। इसका मतलब है लगभग 8,50,000 मौत मासिक। अर्थात न्यूनतम 28,000 मौते प्रति दिन। भारत में डॉक्टर जनसंख्या 1: 2000 को ध्यान में रखते हुए डॉक्टरों की मृत्यु का आंकड़ा हर महीने 425 के लगभग आता हैं। तो भारत में हर महीने लगभग 425 डॉक्टर मरेंगे। यह आंकड़ा न्यूनतम हैं। इनमें से कुछ की परिक्षण रिपोर्ट कोरोना झूठी सकारात्मक मिल सकती है और उनकी मृत्यु को कोरोना मृत्यु घोषित किया जाएगा।

 दूसरा, खतरनाक निवारक दवा के कारण कुछ डॉक्टर मर रहे हैं। गुवाहाटी के एक वरिष्ठ एनेस्थेटिस्ट डॉ. उत्पल बर्मन ने 29 मार्च को मलेरिया रोधी दवा लेने के बाद सीने में दर्द की शिकायत की। कोवीड-19 से निवारक उपाय के रूप में हाइड्रॉक्सि-क्लोरोक्वीन खाने की वजह से कार्डियक अरेस्ट के कारण मौत हो गई। इसलिए डॉक्टर निवारक दवा ले रहे हैं जो वास्तव में बहुत खतरनाक दवा है। इससे कुछ डॉक्टर्स की मौत हो रही है ।

 तीसरा, फेस मास्क, पीपीई किट का निरंतर उपयोग से उनकी प्रतिरोधक क्षमता में कमी और भय के वातावरण के कारण उनकी अन्य स्वास्थ्य समस्याओं में वृद्धि हुई, जिससे कुछ की मृत्यु हुई।

 चौथा, वे मीडिया, सरकार और जनता के दबाव में हैं। उन्हें सरकार के निर्देशों का पालन करने और आईसीएमआर, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय, राज्य स्वास्थ्य मंत्रालय आदि जैसे निकायों को और यहां तक कि उनके मालिकों को प्रसन्न करने के लिए अपनी आत्मा को मारना पड़ता है।

दिव्यम (140): - आई.सी.एम.आर. (ICMR) क्या है और उनके दिशानिर्देश क्या हैं?

मैं: इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (ICMR), केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय का एक विंग है। यह जैव-चिकित्सा अनुसंधान के लिए भारत का शीर्ष निकाय है। यह भारत में बायोमेडिकल रिसर्च का सह-निर्देशन, निर्माण और संवर्धन करता है। इसका मुख्यालय दिल्ली में है।

ICMR ने सभी स्वास्थ्य सेवा इकाइयों को निर्देश दिया है कि 'संदिग्ध मौतों' को कोवीड-19 मौतों के रूप में लेबल किया जा सकता है। वे सिर्फ आँख बंद करके कह रहे हैं कि वायरस बहुत खतरनाक है इसलिए अन्य कारणों से हुई हर मौत, कोरोना मौत की सूची में शामिल हो सकती है, भले ही परीक्षण नकारात्मक हो लेकिन डॉक्टरों को संदेह है तो।

वे आरटी-पीसीआर परीक्षण की अविश्वसनीयता पर कोई शब्द नहीं कह रहे हैं, कोई बयान नहीं दे रहे हैं, जिसके बारे में हम पहले ही

चर्चा कर चुके हैं। यदि आप इसका मतलब नहीं समझते हैं, तो बस यह समझने की कोशिश करें कि ये 'संदिग्ध मौतें' कोवीड-19 की मौत की संख्या को जोड़ देंगी जो मीडिया और सरकार द्वारा जनता को भयभीत करने में मदद करता है।

अभी एक नया रैपिड टेस्ट आया है जो की जल्दी रिपोर्ट दे देता है, इसके बारे में उनकी गाइडलाइन कहती है कि यदि परिणाम सकारात्मक आता है तो इसे स्वीकार किया जाएगा। लेकिन अगर परिणाम नकारात्मक आता है तो इसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। नकारात्मक के लिए आरटी-पीसीआर परीक्षण द्वारा आगे का परीक्षण अनिवार्य है। इससे संदेह पैदा होता है। क्या वे किसी भी तरह से रोगी की संख्या बढ़ाना चाहते हैं? क्या वे वैज्ञानिक काम कर रहे हैं?

इसके अलावा आईसीएमआर प्रतिरक्षा के संबंध में कोई शब्द नहीं कह रहा है। वे लोगों को यह नहीं बता रहे हैं कि प्रतिरक्षा कैसे बढ़ाई जाए। क्या उन्होंने प्राकृतिक टीकाकरण पर कोई अध्ययन किया है? वे कुछ भी नहीं कह रहे हैं कि शरीर में डेंड्राइटिक कोशिकाओं को कैसे बढ़ाया जाए। क्या उन्होंने डेंड्राइटिक कोशिकाओं पर कोई अध्ययन किया है?

दिव्यम (141): - डेंड्राइटिक कोशिका क्या हैं?

मैं: डेंड्राइटिक कोशिकाओं में प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने के गुण होते हैं। वे एक व्यक्ति की प्रतिरक्षा प्रतिक्रियाओं के लिए जिम्मेदार हैं। डेंड्राइटिक कोशिकाएं अस्थि मज्जा से उत्पन्न ल्यूकोसाइट्स हैं। वे एंटीजन-पेश करने वाली कोशिकाओं में सबसे शक्तिशाली प्रकार हैं। ये वृक्ष के समान संरचना वाली होती है। ये कोशिकाएं आपके शरीर की 90% से अधिक प्रतिरक्षा प्रदान करती हैं। ये डेंड्राइटिक कोशिकाएं हमारे पूरे शरीर में फैली होती हैं, खासकर त्वचा के नीचे।

उन्हें सैनिटाइज़र देकर, आप इन वृक्ष कोशिकाओं को मार रहे हैं या इनको निष्क्रिय कर रहे हैं। जब आप अपने हाथ पर सैनिटाइज़र लगा रहे होते हैं तो वास्तव में आप अपने हाथों पर शराब रगड़ रहे होते हैं। यह अल्कोहल त्वचा तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह आपकी त्वचा की डेंड्राइटिक कोशिकाओं तक पहुंच जाता है। और इस तरह आप अनजाने में या तो उन्हें मार देते हैं या उन्हें निष्क्रिय बना देते हैं।

यह शराब त्वचा की विभिन्न परतों में प्रवेश करती है और रक्त के साथ मिलकर पूरे शरीर में फैल जाती है। शराब की वजह से आपका ड्राइविंग लाइसेंस खत्म हो सकता है या जुर्माना हो सकता है। सैनिटाइजर आपकी प्रतिरोधक क्षमता को भी कम करते हैं।

दिव्यम (142): - मैं अपनी प्रतिरक्षा कैसे बढ़ा सकता हूं?

मैं: अपनी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए आप विटामिन-सी ले सकते हैं। विटामिन-सी के मुख्य प्राकृतिक स्रोत हैं - आवला, नींबू, नारंगी, मोसम्बी, कीवी, अमरूद, अंगूर, पपीता और स्ट्रॉबेरी। ब्रोकोली, फूलगोभी और शिमला मिर्च जैसी सब्जियां भी विटामिन-सी का उच्च स्रोत हैं। हरी और लाल मिर्च, पालक, गोभी, शलजम और अन्य पत्तेदार साग, मीठे और सफेद आलू भी विटामिन-सी का अच्छा स्रोत हैं।

अपनी प्रतिरक्षा को बढ़ाने के लिए आपको विटामिन-डी भी लेना चाहिए। यह बहुत सरल है। बस अपने शरीर को सुबह 15 मिनट और शाम को 15 मिनट धूप में रखें। टैबलेट के रूप में विटामिन-डी न लें। सूर्य के प्रकाश के संपर्क में रहना पर्याप्त है।

यदि आपकी प्रतिरक्षा अच्छी है, तो आपको कोरोना संक्रमण या किसी अन्य संक्रमण के बारे में चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

दिव्यम (143): - अगर मुझे कोरोना के लिए सकारात्मक परीक्षण किया जाता है तो मुझे क्या करना चाहिए?

मैं: सबसे पहले आपको बहुत खुश होना चाहिए कि आपका कोरोना परीक्षण सकारात्मक आया हैं। आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। बस अपने शरीर की प्रतिरक्षा को बढ़ाएं जो न केवल कोरोना बल्कि अन्य संक्रमणों के साथ भी लड़ेंगे।

और अगर यह परीक्षण, एंटीबॉडी परीक्षण है तो आपको और खुश होना चाहिए क्योंकि आपने अब कोरोना के खिलाफ एंटीबॉडी विकसित कर ली है। अब आप स्वाभाविक रूप से प्रतिरक्षित हैं। टीका की आवश्यकता कोई नहीं है, कोई उपचार की आवश्यकता नहीं है।

दिव्यम (144): - कोवीड-19 का उपचार क्या है?

मैं: एलोपैथी में इसके लिए कोई दवा नहीं है। लेकिन चमत्कार यह है कि उपचार के बिना भी मरीज ठीक हो रहे हैं। क्योंकि यह एक साधारण फ्लू है, क्योंकि यह एक सामान्य जुकाम है इसलिए घबराने की जरूरत नहीं है। तो बस हम एक फ्लू के मौसम के दौरान क्या करते हैं। बस अपने दादा-दादी की सलाह का पालन करें और एक घर आधारित दवा को ले।

दुर्भाग्य से भारत डब्लूएचओ पर आँख बंद करके भरोसा करता है। केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, डब्लूएचओ के शब्दांकन को आँख बंद करके देखता है। डब्ल्यूएचओ के तथाकथित विशेषज्ञ, दवा कंपनियों के साथ घनिष्ठ संबंध रखते हैं। कथित जानलेवा महामारी से निपटने के लिए, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 'सॉलिडैरिटी ट्रायल दवाओं' को मंजूरी दे दी है जो कि खाद्य एवं औषधि प्रशासन प्राधिकरण (FDA) द्वारा भी अनुमोदित नहीं थी। ये दवाएं एक जहर की तरह हैं।

दिव्यम (145): - विश्व स्वास्थ्य संगठन का एकजुटता क्लिनिक परीक्षण क्या है?

मैं: विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एक नैदानिक परीक्षण शुरू किया है जिसे 'सॉलिडैरिटी क्लिनिक ट्रायल' कहा जाता है। डब्ल्यूएचओ का कहना है कि 'सॉलिडैरिटी क्लिनिकल ट्रायल' डब्ल्यूएचओ और भागीदारों द्वारा शुरू की गई कोविड-19 के लिए एक प्रभावी उपचार खोजने में मदद करने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय नैदानिक परीक्षण है। जी हां, इसमें डब्ल्यूएचओ के पार्टनर भी है। यह आशा की जाती है कि परीक्षण के तहत एक या अधिक उपचार कोवीड-19 रोगियों में नैदानिक परिणामों में सुधार करेंगे और जीवन को बचाएंगे।

लेकिन चीजें अलग हैं। यहां सबसे खतरनाक दवाएं परीक्षण के नाम पर प्रयोग की जा रही हैं। दरअसल ये खतरनाक दवाएं मौत का कारण बन सकती हैं। बल्कि ऐसा लगता है कि डब्ल्यूएचओ के पास इन खतरनाक दवाओं का उपयोग करके लोगों को मारने की एक छिपी हुई योजना हो सकती है।

उपचार के विकल्प रूप में कुछ खतरनाक दवाए हैं। लेकिन न तो रोगियों और न ही डॉक्टर के पास विकल्प चुनने का विकल्प होता है। कंप्यूटर यह तय करेगा कि किस रोगी को कौनसी दवा दी जाएगी। ।

दिव्यम (146): - 'एकजुटता क्लिनिक परीक्षण' के तहत उपचार के विकल्प क्या हैं?

मैं: अध्ययन के तहत उपचार के विकल्प हैं -

1. **रेमडेसिवीर (Remdesivir)**
2. **लोपीनावीर / रिटोनावीर (Lopinavir / ritonavir)**
3. **हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन (Hydroxychloroquine)**
4. **इंटरफेरॉन बीटा-1ए (Interferon beta1A)**

रेमेडिसवीर को पहले इबोला के उपचार के रूप में परीक्षण किया गया था। लेकिन गंभीर दुष्प्रभावों और बढ़ती मौतों के कारण इबोला में इसका परीक्षण रोक दिया गया था। इसको मध्य-पूर्व-श्वसन-सिंड्रोम (MERS-CoV) और गंभीर-तीव्र-श्वसन-सिंड्रोम (SARS) के उपचार के लिए जानवरों पर अध्ययन किया गया। ऐसा बताया गया है कि अध्ययन से कुछ तथाकथित 'आशाजनक परिणाम' उत्पन्न आये हैं। ये दोनों बीमारी भी कोरोना वायरस के ही एक प्रकार से होती है, यह सुझाव देते हुए कि कोवीड-19 के रोगियों में कुछ प्रभाव हो सकता है, इस खरतरनक दवा को कोविड के मरीजों को दिया गया।

लोपीनावीर / रिटोनावीर (Lopinavir / ritonavir) का उपयोग एचआईवी के कुछ मामलों के लिए किया गया था। कोवीड-19, मर्स (MERS) और सार्स (SARS) के लिए यह दिखाना अभी

बाकी है कि यह नैदानिक परिणामों में सुधार कर सकता है या नहीं कर सकता है, संक्रमण को रोक नहीं सकता है या नहीं। इस परीक्षण का उद्देश्य कोवीड-19 रोगियों के लिए किसी भी प्रकार के लाभ की पहचान करना और उसकी पुष्टि करना है। इस दवा के कोवीड-19 रोगियों में अब तक किए गए अध्ययन अनिर्णायक रहे हैं।

इंटरफेरॉन बीटा-1-ए का उपयोग मल्टीपल स्केलेरोसिस के इलाज के लिए किया जाता है। इसके साइड इफेक्ट्स की संख्या अधिक है। जो भी दुष्प्रभाव आप सोच सकते हैं वो सभी दुष्प्रभाव इंटरफेरॉन बीटा-1-ए के साइड इफेक्ट के रूप में आप पाएंगे।

मलेरिया के उपचार में मलेरिया रोधी दवा हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्विन दी जाती है। इसका वायरस से कोई संबंध नहीं है क्योंकि मलेरिया प्लाजमोडियम परजीवी के कारण होता है न कि किसी वायरस का कारण ।

दिव्यम (147): - रेमडेसिवीर क्या है?

मैं: रेमडेसिवीर (RDV) आरएनए संश्लेषण को लक्षित करने वाली दवाओं के एंटीवायरल वर्ग में एक सिंथेटिक अणु है। यह अणु बहुत कुछ डीएनए के न्यूक्लियोसाइड जैसा दिखता है। यह वर्तमान में एक प्रायोगिक दवा है। ऐसा कहा जाता है कि रेमडेसिवीर आरएनए पोलीमरेज़ एंजाइम को अवरोधित कर देता है जिसका

अर्थ है कि आरएनए विकसित नहीं हो सकता है ताकि वायरस खुद को दोहरा न सके। लेकिन समस्या शरीर के प्रोटीन के साथ है। कई प्राकृतिक प्रक्रियाएं इस एंजाइम का उपयोग करती हैं। तो सभी सामान्य प्रोटीन विकास प्रक्रिया अवरुद्ध हो जाएगी। यह विकृत प्रोटीन हमारे शरीर में अन्य विकृतिया पैदा कर सकता है।

दिव्यम (148): - क्या रेमडेसिवीर कोवीड-19 के खिलाफ प्रभावी है?

मैं: संभवतः नहीं, इस बारे में केवल सीमित साक्ष्य उपलब्ध हैं। पिछले इबोला के प्रकोप के दौरान किए गए रेमडेसिवीर (आरडीवी) के प्रयोग खतरनाक साबित हुए थे। यह अध्ययन अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले ही रोक दिया गया था क्योंकि इसके कई खतरनाक दुष्प्रभाव पाये गये थे। और यह मृत्यु दर को बढ़ाने वाला पाया गया। इसके अलावा इसने इबोला रोगियों की मदद नहीं की बल्कि इसने कई रोगियों को मार डाला।

इबोला, मर्स (MERS) और सार्स (SARS) के तथाकथित महामारी के आधार पर अधिकांश नैदानिक निर्णय किए जाते हैं। इन तीनों प्रकोपों में रेमडेसिवीर का उपयोग किया गया था लेकिन आशा के अनुसार उतनी सफलता नहीं मिली। तो इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि यह दवा सहायक है। इसके विपरीत इसके कई खतरनाक दुष्प्रभाव हैं।

दिव्यम (149): - रेमडेसिवीर के साइड इफेक्ट्स क्या हैं?

मैं: एक लंबी सूची है।

• इससे तेजी से हाइपोटेंशन हो सकता है और कार्डियक अरेस्ट और मौत हो सकती है।

• लीवर एंजाइम बढ़ता है। बढ़ा हुआ यकृत एंजाइम अब तक का सबसे आम प्रतिकूल घटना है। तो यह दवा लीवर को नुकसान पहुंचाती है। एफडीए आपातकालीन उपयोग प्राधिकरण को खुराक देने से पहले सभी रोगियों पर यकृत परीक्षण के लिए कहता है।

• यह किडनी के लिए भी हानिकारक है। रेट (चूहा) मॉडल अध्ययनों ने रेमडेसिवीर से गुर्दे के कोर्टिकल नलिकाओं में चोट को दिखाया। मनुष्यों में, रेमडेसिवीर गुर्दे में काफी हद तक संचय हो सकता है और परिणामस्वरूप गुर्दे की कार्यक्षमता कम हो सकती है।

• यह दिल को भी नुकसान पहुंचाता है। निश्चित रूप से इस दवा के हृदय संबंधी प्रतिकूल प्रभाव हैं। शोधकर्ताओं को हृदय की अनियमितता के बारे में चिंता है।

• मिचली और दस्त जैसे जीआई (GI) प्रतिकूल प्रभाव भी बताए गए हैं।

• रेमेडिसविर के अध्ययन में अन्य प्रतिकूल प्रभावों में श्वसन विफलता और अंग हानि, कम एल्बुमिन, कम पोटेशियम, लाल रक्त कोशिकाओं की कमी और त्वचा का पीला होना शामिल हैं।

• रेमडेसिवीर के अन्य संभावित साइड इफेक्ट्स में शामिल हैं: इंजेक्शन स्थान संबंधित प्रतिक्रियाओं को रेमेडिसविर इन्फ्यूजन या उस समय के आस पास जब रेमेडिसविर दिया गया था, के दौरान देखा गया है। संबंधित प्रति-क्रियाओं में शामिल हैं: निम्न रक्तचाप, मतली, उल्टी, पसीना और कप-कपी।

दिव्यम (150): - क्या FDA ने कोवीड-19 के उपचार के लिए रेमडेसिवीर को मंजूरी दे दी है?

मैं: नहीं; रेमडेसिवीर (Remdesivir) को अभी भी एक प्रायोगिक दवा माना जाता है और यह FDA द्वारा अनुमोदित नहीं है। लेकिन इसे FDA द्वारा आपातकालीन उपयोग प्राधिकरण प्राप्त हुआ है। इसका मतलब यह है कि अब अमेरिकी में रेमेडिसविर वितरित किया जा सकता है और स्वास्थ्य सेवा प्रदाता अस्पताल में भर्ती गंभीर कोविड-19 मरीजों को रेमडेसिवीर एक प्रायोगिक दवा के रूप में इलाज दे सकते हैं।

कोवीड-19 के लिए रेमडेसिवीर का केवल आपातकालीन उपयोग स्वीकृत है। इसके अलावा इसमें अन्य सामान्य दवाओं के साथ कई गंभीर प्रतिक्रियाएं हैं।

दिव्यम (151): - क्या अन्य दवाएं रेमडेसिवीर के साथ परस्पर क्रिया करती हैं?

मैं: कुछ दवाएं हैं जो आपके रक्तप्रवाह में रेमडेसिवीर स्तर को बढ़ा देंगी और कुछ जो इसे कम कर देंगी। कुछ एंटीबायोटिक्स, एंटीकॉनवल्सेन्ट्स और कुछ अन्य दवाएं भी ऐसा कर सकती हैं। कुछ उदाहरण निम्न हैं -

- **क्लेरीथ्रोमायसीन (Clarithromycin)**
- **रिफैम्पिसिन (Rifampicin)**
- **फेनीटोइन (Phenytoin)**
- **फिनो-बार्बिटल (Phenobarbital)**

दिव्यम (152): - क्या रेमडेसिवीर महिलाओं के लिए सुरक्षित है?

मैं: गर्भावस्था पर रेमडेसिवीर का प्रभाव ज्ञात नहीं है और न ही हमें पता है कि यह स्तन के दूध में उत्सर्जित होता है या नहीं। रेमडेसिवीर ने चूहों और बंदरों में भ्रूण में गुर्दे के विकास को बुरी तरह प्रभावित किया। तो इससे टेरेटोजनिक दोष हो सकता है।

दिव्यम (153): - इंटरफेरॉन बीटा-1-ए को भी डब्ल्यूएचओ एकजुटता क्लिनिक परीक्षण के तहत शामिल किया गया है। इंटरफेरॉन बीटा-1-ए क्या है?

मैं: इंटरफेरॉन बीटा-1-ए, (166 अमीनो एसिड ग्लाइकोप्रोटीन) का उपयोग मल्टीपल स्केलेरोसिस नाम की बीमारी में किया जाता है। यह एक प्रोटीन है जो पुनः संयोजक डीएनए द्वारा निर्मित होता है। यह मल्टीपल स्केलेरोसिस का इलाज नहीं करता है, यह केवल रिलैप्स की आवृत्ति को कम करेगा। इंटरफेरॉन बीटा-1-ए कोई मल्टीपल स्केलेरोसिस का इलाज नहीं करता है बल्कि यह बीमारी की बार-बार भड़कने की संख्या को कम करने में मदद करता है और कुछ हद तक शारीरिक विकलांगता की घटना को धीमा करता है जो आमतौर पर इस बीमारी में होती है।

दिव्यम (154): - क्या कोवीड-19 कोरोनावायरस का इलाज करने के लिए इंटरफेरॉन बीटा-1-ए का उपयोग किया जा सकता है?

मैं: इंटरफेरॉन बीटा-1-ए और इंटरफेरॉन एल्फा-2-बी दोनों ही कोविड-19 कोरोनवायरस वायरस वाले लोगों के संभावित उपचार के रूप में देखा जा रहा है।

आम तौर पर जब हमारा शरीर एक वायरस का सामना करता है तो प्रतिरक्षा कोशिका एक आपातकालीन रसायन को छोड़ती है जिसे प्रतिरक्षा कहा जाता है। इंटरफेरॉन बीटा-1-ए, विशेष रूप से,

मैक्रोफेज को सक्रिय करता है जो एंटीजन और प्राकृतिक हत्यारी कोशिकाओं (एनके कोशिका, NK Cells-Natural Killer Cells), प्रतिरक्षा टी-सेल का ही एक प्रकार है।

सिद्धांत यह है कि इंटरफेरॉन निष्क्रिय भागों को सक्रिय करके प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने में सक्षम हो सकता है और उन्हें SARS-nCoV-2 हमले के खिलाफ बचाव की ओर निर्देशित कर सकता है।

लेकिन एक गंभीर समस्या है। जब इंटरफेरॉन हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को तेज करता है तो कोवीड-19 के फ्लू जैसे लक्षण बदतर होने की संभावना है। इसलिए अगर कोई पहले से ही वेंटिलेटर पर है तो इंटरफेरॉन-आधारित दवा भयावह हो सकती है और इसके परिणामस्वरूप मृत्यु हो सकती है।

इंटरफेरॉन-आधारित दवा के इलाज की कोशिश अमेरिका में 1990 के दशक के अंत और 2000 की शुरुआत में हेपेटाइटिस-सी के लिए की गई थी। इसके साइड इफेक्ट्स ने अमेरिकी रोगियों को बहुत चोट पहुंचाई। इसलिए इसे रोक दिया गया।

दिव्यम (155): - इंटरफेरॉन बीटा-1-ए के दुष्प्रभाव क्या हैं?

मैं: इस दवा के कई दुष्प्रभाव हैं। इसे एक दवा का नाम नहीं किया जा सकता है बल्कि यह एक जहर है। इसके लिए हम एक

वेबसाइट medlineplus.gov पर जाएंगे। देखें कि यह साइट किन दुष्प्रभावों के रूप में बताती है -

- सरदर्द
- बुखार
- ठंड लगना
- सूखी आंखें
- नज़रों की समस्या
- शुष्क मुँह
- चोट, दर्द, लालिमा, सूजन, या इंजेक्शन स्थल पर कोमलता
- नया अवसाद या बिगड़ता हुआ अवसाद
- खुद को नुकसान पहुंचाने या मारने या योजना बनाने या ऐसा करने की कोशिश करने के बारे में सोचना
- चिंता
- खुजली
- जल्दबाज
- सांस लेने या निगलने में कठिनाई
- आंखों, चेहरे, मुंह, जीभ, गले, हाथ, पैर या टखनों में सूजन
- प्रकाश की लपट महशुस करना
- बेहोशी
- दौरे पड़ना
- समन्वय में अवरोध

- अत्यधिक थकान
- शक्ति की कमी
- जी मिचलाना
- उल्टी
- भूख में कमी
- पीला मल
- पेट के ऊपरी दाहिने भाग में दर्द
- त्वचा या आंखों का पीला पड़ना
- गहरे रंग का मूत्र
- पीली त्वचा
- छाती में दर्द
- तेजी से दिल धड़कना
- असामान्य चोट या रक्तस्राव
- गले में खराश, खांसी, बुखार, ठंड लगना, या संक्रमण के अन्य लक्षण
- अस्पष्टीकृत वजन बढ़ना या घटना
- हर समय ठंडा या गर्म महशुस करना
- इंजेक्शन स्थल पर त्वचा का काला पड़ना या जलनिकासी
- लाल या खूनी दस्त या दस्त
- पेट दर्द
- धीमा या मुश्किल बोल पाना
- त्वचा पर बैंगनी पैच या पिनपॉइंट डॉट्स (दाने)

- पेशाब में कमी या खून आना

पुष्टि के लिए, अब हम एक और मेडिकल वेबसाइट drug.com देखेंगे, जो निम्नलिखित दुष्प्रभाव दिखाती है -

- काला, टेरी मल
- छाती में दर्द
- ठंड लगना
- खांसी
- दस्त
- बुखार
- फ्लू जैसे लक्षण
- सरदर्द
- जोड़ों का दर्द
- मांसपेशियों के दर्द
- जी मिचलाना
- दर्द
- दर्दनाक या कठिन पेशाब
- सांस लेने में कठिनाई
- होठों पर, मुंह में या मुंह पर छाले, अल्सर, या सफेद धब्बे
- ग्रंथियां की सूजन
- असामान्य रक्तस्राव या चोट
- अत्यधिक थकान या कमजोरी

- पेट या पेट में दर्द
- भद्दापन या अस्थिरता
- ऐंठन (दौरे)
- सुनवाई में कमी
- निगलने में कठिनाई
- सिर चकराना
- बेहोशी
- गर्मी का एहसास
- खुजली
- मूड में बदलाव, खासकर आत्महत्या के विचारों के साथ
- मांसपेशियों की ऐंठन
- योनि से दर्द या डिस्चार्ज होना
- पैल्विक असुविधा, दर्द या भारीपन
- चेहरे, गर्दन, बाहों और कभी-कभी ऊपरी छाती की लाली
- इंजेक्शन स्थल पर लालिमा, सूजन या कोमलता
- बहती या भरी हुई नाक
- त्वचा क्षति
- छींक आना
- गले में खराश
- बोलने में दिक्कत
- चेहरे, होंठ, या पलकों की सूजन
- सांस लेने में दिक्कत

- कान का दर्द
- बेचैनी या बीमारी की सामान्य भावना
- भूख में कमी
- शरीर पर दर्दनाक फफोले
- दर्दनाक घाव या होंठ, नाक, आंखों या जननांगों पर फफोले
- मसूड़ों से खूनना
- मूत्र या मल में रक्त
- नाक से खून बहना
- सीने में बेचैनी
- भ्रम की स्थिति
- कब्ज़
- गहरे रंग का मूत्र
- मूत्र उत्पादन में कमी
- उदास मन
- गर्दन की नसों का पतला होना
- सूखी त्वचा और बाल
- अत्यधिक थकान
- तेज़, अनियमित या तेज़ दिल की धड़कन
- अत्यधिक ठंड महसूस होना
- अत्यधिक थकान और कमजोरी
- बाल झड़ना
- भारी मासिक धर्म

- तेज़ बुखार
- अनियमित सांस लेना
- हल्के रंग का मल
- मूत्राशय के नियंत्रण में कमी
- मानसिक अवसाद
- मूड या अन्य मानसिक परिवर्तन
- मांसपेशियों में ऐंठन और अकड़न
- उलटी अथवा मितली
- घबराहट
- पीली त्वचा
- भूख में लगातार कमी
- त्वचा पर लाल धब्बे होना
- पलकों का फड़कना या सूजन होना या आंखों, चेहरे, होंठ, जीभ के आसपास सूजन होना
- लालिमा, छाला, छीलना, या त्वचा का ढीला होना
- गर्मी के प्रति संवेदनशीलता
- त्वचा के लाल चकत्ते
- धीमी गति से दिल की धड़कन
- चेतना की अचानक हानि
- पसीना आना
- चेहरे, उंगलियों, पैरों या निचले पैरों में सूजन
- मुंह या गले की सूजन

- **छाती में जकड़न**
- **गले में जकड़न**
- **ऊपरी दाहिना पेट या पेट दर्द या कोमलता**
- **वजन बढ़ना या कम होना**
- **पीली आँखें और त्वचा**

दिव्यम (156): - क्या इंटरफेरॉन बीटा-1-ए के कारण कोरोना रोगियों द्वारा आत्महत्या की जा रही है?

मैं: ऐसा ही लगता है। मैंने सुना है कि कोरोना उपचार के दौरान कुछ रोगियों ने आत्महत्या की है। कुछ ने अस्पताल की इमारत से भी छलांग लगा दी है। तो यह इस जहरीली दवा के कारण हो सकता है। हमें यह भी जांचना चाहिए कि इस दवा को कोरोना पॉजिटिव व्यक्तियों के उपचार के लिए क्यों चुना गया था। यह कोरोना से मौत की वृद्धि को बढ़ाने के लिए किया गया एक गेम प्लान हो सकता है।

दिव्यम (157): - जैसा कि आपने कहा कि लोपिनावीर / रिटोनावीर को भी 'विश्व स्वास्थ्य संगठन क्लिनिकल परीक्षण' के तहत शामिल किया गया है। लोपिनावीर / रिटोनावीर (Lopinavir / Ritonavir) के क्या दुष्प्रभाव हैं?

मैं: इसे समझने के लिए मैं आपको एक वेबसाइट पर ले जाऊंगा जिसका नाम webmd.com है। साइट ने निम्नलिखित दुष्प्रभाव लिखे हैं -

- **दस्त,**
- **सरदर्द,**
- **जी मिचलाना,**
- **उल्टी,**
- **पेट खराब,**
- **उनींदपन,**
- **सिर चकराना,**
- **मुंह में खराब स्वाद,**
- **सोने में परेशानी,**
- **अस्पष्टीकृत वजन घटना,**
- **थकान,**
- **मांसपेशियों में दर्द / कमजोरी जो दूर नहीं होती,**
- **सिरदर्द जो गंभीर हैं या दूर नहीं होते,**
- **जोड़ों का दर्द,**
- **हाथ / पैर की सुन्नता, हाथ / पैर में झनझनाहट,**
- **दृष्टि परिवर्तन,**
- **संक्रमण के संकेत (जैसे बुखार, ठंड लगना, लिम्फ नोड्स में सूजन)**

- श्वास लेने में कठिनाई,
- खांसी,
- गैर-चिकित्सा त्वचा घाव,
- एक अतिसक्रिय थायराइड के लक्षण (जैसे चिड़चिड़ापन, घबराहट, असहिष्णु गर्मी, दिल की तेज़ / अनियमित धड़कन, आँखों में जलन, गर्दन में असामान्य वृद्धि / थायराइड जिसे गोइटर के रूप में भी जाना जाता है),
- गुलेन-बेरी सिंड्रोम के रूप में जानी जाने वाली एक तंत्रिका समस्या के संकेत (जैसे कि श्वास लेने में परेशानी, आँखों को हिलाने के दौरान परेशानी / निगलने में परेशानी, चेहरे का गिरना, पक्षाघात, बोलने में परेशानी होना),
- प्यास में वृद्धि,
- पेशाब में वृद्धि,
- धुंधली दृष्टि,
- भ्रम की स्थिति,
- लगातार मतली / उल्टी,
- पेट में दर्द,
- पीली आँखें / पीली त्वचा,
- गहरा मूत्र,
- लगातार बुखार
- दिल का दौरा पड़ने के लक्षण (जैसे छाती / जबड़े / बाएं हाथ में दर्द, सांस की तकलीफ, असामान्य पसीना),

- **गंभीर चक्कर आना,**
- **बेहोशी,**
- **धीमी / तेज / अनियमित धड़कन,**
- **गंभीर उनींदापन,**
- **सांस लेने मे तकलीफ,**
- **दौरे,**
- **मांसपेशी में कमज़ोरी,**
- **गुर्दे की समस्याओं के संकेत (जैसे मूत्र की मात्रा में परिवर्तन)**
- **शरीर में वसा में परिवर्तन (जैसे ऊपरी पीठ और पेट के क्षेत्रों में वसा में वृद्धि, हाथ और पैरों में वसा में कमी)**
- **रक्त वसा (कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स) के स्तर में वृद्धि**

यह संभावित दुष्प्रभावों की पूरी सूची नहीं है। साथ ही यह लिखा है कि यदि आप ऊपर सूचीबद्ध अन्य प्रभावों को नोटिस करते हैं तो अपने डॉक्टर या फार्मासिस्ट से संपर्क करें।

अब मैं आपको ऊपर उल्लिखित दुष्प्रभावों की पुष्टि करने के लिए एक और वेबसाइट rxlist.com पर ले जाऊंगा। देखें कि यह साइट लोपिनावीर / रिटोनावीर (Lopinavir / Ritonavir) के दुष्प्रभावों के बारे में क्या कहती है -

- **दस्त,**
- **सरदर्द,**
- **कमजोरी,**
- **जी मिचलाना,**
- **उल्टी,**
- **पेट खराब,**
- **उनींदापन,**
- **सिर चकराना,**
- **मुंह में खराब स्वाद,**
- **नींद न आना,**
- **त्वचा पे लाल चकत्ते**
- **शरीर में वसा के आकार या स्थान में परिवर्तन (विशेष रूप से आपकी बाहों, पैरों, चेहरे, गर्दन, स्तन और कमर में),**
- **अस्पष्टीकृत वजन घटना,**
- **लगातार मांसपेशियों में दर्द या कमजोरी,**
- **जोड़ों का दर्द,**
- **हाथ / पैर की सुन्नता या झुनझुनी,**
- **गंभीर थकान,**
- **दृष्टि परिवर्तन,**
- **गंभीर या लगातार सिरदर्द,**
- **संक्रमण के संकेत (जैसे बुखार, ठंड लगना, सांस लेने में परेशानी, खांसी, गैर-चिकित्सा त्वचा घाव),**

- **एक अतिसक्रिय थायराइड के लक्षण (जैसे चिड़चिड़ापन, घबराहट, गर्मी असहिष्णुता, तेज अनियमित धड़कन, आँखों में जलन, गर्दन में असामान्य वृद्धि / थाइरोइड),**
- **गुलेन-बेरी सिंड्रोम के रूप में जानी जाने वाली एक तंत्रिका समस्या के संकेत (जैसे कि श्वास लेने में कठिनाई / निगलने में कठिनाई / आँखों को हिलाने में कठिनाई, चेहरे का गिरना, पक्षाघात, वाणी में समस्या)**
- **प्यास में वृद्धि,**
- **पेशाब में वृद्धि,**
- **भ्रम की स्थिति,**
- **लगातार मतली या उल्टी,**
- **पेट या पेट में दर्द,**
- **आंखों या त्वचा का पीला पड़ना,**
- **गहरे रंग का मूत्र**

तो आप इस ड्रग लोपिनावीर / रिटोनावीर (Lopinavir / Ritonavir) के साइड इफेक्ट को समझ गये है। अगर यह एक दवा है तो जहर क्या है?

दिव्यम (158): - हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्वीन के दुष्प्रभाव क्या हैं?

मैं: मैं हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्वीन के दुष्प्रभावों को बेहतर ढंग से समझने के लिए आपको एक वेबसाइट medicalnewstoday.com पर ले जाऊंगा। हाइड्रॉक्सी-क्लोरोक्वीन के साथ होने वाले दुष्प्रभाव इस प्रकार हैं:

- **सरदर्द**
- **सिर चकराना**
- **दस्त**
- **पेट में ऐंठन**
- **उल्टी**
- **धुंधली दृष्टि या अन्य दृष्टि परिवर्तन, जो कुछ मामलों में स्थायी हो सकते हैं**
- **हृदय रोग, हृदय घात होता और आपके दिल की लय का अनियमित होना, कुछ मामलो में मौत होना**
- **आपके कानों में घंटी बजना या सुनने में कमी होना**
- **एंजियोएडेमा (आपकी त्वचा की तेजी से सूजन)**
- **चमड़ी पे चकत्ते पड़ना**
- **हल्के या गंभीर ब्रोंकोस्पाज्म**
- **गले में खराश**
- **गंभीर हाइपोग्लाइकसीमिया**
- **असामान्य रक्तस्राव या चोट**
- **नीली-काली त्वचा होना**

- मांसपेशी में कमज़ोरी
- बालों का झड़ना या बालों का रंग बदलना
- मनोदशा में असामान्य परिवर्तन
- आत्महत्या के विचारों सहित मानसिक स्वास्थ्य का गड़बड़ाना

आप आगे की पुष्टि के लिए एक और वेबसाइट पे चलते हैं, जिसका नाम drug.com है, बस देखें कि हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वाइन के दुष्प्रभावों के बारे में यहाँ क्या लिखा है -

- त्वचा का ढीला होना
- धुंधली दृष्टि या अन्य दृष्टि परिवर्तन
- सीने में तकलीफ, दर्द या जकड़न
- खांसी या स्वर बैठना
- गहरे रंग का मूत्र
- पेशाब कम होना
- दोषपूर्ण रंग दृष्टि
- दस्त
- सांस लेने मे तकलीफ
- रात को देखने में कठिनाई
- चक्कर आना या बेहोशी
- दिल की धड़कन तेज़ या असमान होना

- महसूस करना कि दूसरे आपको देख रहे हैं या आपके व्यवहार को नियंत्रित कर रहे हैं
- यह महसूस करना कि दूसरे आपके विचार सुन सकते हैं या सुन रहे हैं
- उन चीजों को महसूस करना, देखना या सुनना जो वहां नहीं हैं
- ठंड के साथ या बिना ठंड के बुखार
- थकान या कमजोरी
- सरदर्द
- आंखों को हिलाने में असमर्थता
- पलक का फड़कना या ऐंठन बढ़ जाना
- जोड़ों या मांसपेशियों में दर्द
- चेहरे, पलकों, होंठ, जीभ, गले, हाथ, पैर, और यौन अंगों पर बड़ी छत्ते जैसी सूजन
- सुनने में परेशानी
- पीठ के निचले हिस्से या साइड में दर्द
- कोलाहल भरा श्वाश लेना
- दर्दनाक या कठिन पेशाब
- लाल आँखें
- त्वचा के लाल घाव, अक्सर एक बैंगनी केंद्र के साथ
- गंभीर मनोदशा या मानसिक परिवर्तन
- गले में खराश, अल्सर, या होंठ पर या मुंह में सफेद धब्बे

- जीभ चिपकना
- पेट दर्द
- पैरों में सूजन
- सूजी हुई या दर्दनाक ग्रंथियाँ
- सांस लेने, बोलने या निगलने में परेशानी
- गर्दन, धड़, हाथ या पैर का अनियंत्रित घूमना
- असामान्य व्यवहार
- असामान्य रक्तस्राव या चोट
- चेहरे के असामान्य भाव
- असामान्य थकान या कमजोरी
- पीली आँखें या त्वचा

ओवरडोज के लक्षण हैं -

- उनींदापन
- शुष्क मुँह
- बढ़ी हुई प्यास
- भूख में कमी
- मनोदशा में बदलाव
- नाड़ी का धीमा होना या रक्तचाप कम या शुन्य होना
- हाथ, पैर या होंठ में सुन्नता या झुनझुनी
- बेहोशी की हालत

दिव्यम (159): - फेबीफ्लू क्या है?

मैं: फेबीफ्लू में फेवीपीरावीर होता हैं। फेवीपीरावीर (Favipiravir) कोवीड-19 की एक नई प्रायोगिक दवा है। फेवीपीरावीर एक एंटीवायरल दवा है जिसे जापान में प्रतिरोधी-इन्फ्लूएंजा वायरस के उपचार के लिए विकसित किया गया था। इसका जैव रासायनिक नाम 6-फ्लोरो-3-हाइड्रॉक्सी-2-पाइराजिन कार्बोक्सामाइड है; ब्रांड नाम एबिगन या एविगन और फैबिफ्लू। फेवीपीरावीर (Favipiravir) एक संशोधित पाइराजिन एनालॉग (प्यूरिन न्यूक्लियोसाइड एनालॉग या पाइराज़िन कार्बोक्सामाइड का एक व्युत्पन्न) है जो शुरू में इन्फ्लूएंजा के उपचार के लिए अनुमोदित किया गया था जो कि ऑसेल्टामीविर और ज़नमीविर थेरेपी के लिए प्रतिरोधी था।

दिव्यम (160): - फेवीपीरावीर के साइड इफेक्ट्स क्या हैं?

मैं: यह दवा नई है। यह बहुत महंगी दवा है जो भारत में फैबिफ्लू के नाम से उपलब्ध है। अन्य ब्रांड का नाम एविगन है। अधिकांश दुष्प्रभाव अज्ञात हैं। लेकिन दूसरी दवाइयों की तरह यहा भी खतरनाक साइड इफेक्ट होने चाहिए। अब हम साइड इफेक्ट देखने के लिए cdc.gov.tw का रुख करेंगे।

• टेरोटोजेनिक प्रभाव। सीडीसी स्पष्ट रूप से कहता है कि दवा प्रारंभिक भ्रूण की मृत्यु का कारण बनती है और इसमें टेराटोजेनिक प्रभाव होता है। टेराटोजेनेसिस का अर्थ है विकासशील भ्रूण में दोष उत्पन्न करना, भ्रूण में अंगो का गलत तरीके से विकास होना अर्थात आपके पैदा होने वाले बच्चे में दोष। अगर आपको लगता है कि पुरुष सुरक्षित हैं तो आप गलत हैं। यहां यह भी लिखा गया है कि उनकी दवा शुक्राणु में वितरित होती है। तो फिर पुरुष के माध्यम से टेराटोजेनिसिटी की संभावना बढ़ जाती है। आपको 'थैलिडोमाइड त्रासदी' की खोज करनी चाहिए, 'थैलिडोमाइड त्रासदी'के बारे में और जानकारी लेनी चाहिये। लाखों भ्रूणों को इस दवा के दुष्प्रभाव का सामना करना पड़ा। अंग और अन्य विकृति वाले हजारों बच्चे अभी भी अमेरिका में हैं। अनुपस्थित भुजा और अनुपस्थित अग्र भाग , सील जैसे बच्चे पैदा होते हैं।

यध्यपि हम इस नई खतरनाक एंटीवायरल दवा के बारे में बहुत अधिक नहीं जानते हैं लेकिन टेराटोजेनिसिटी के अलावा कुछ और दुष्प्रभाव भी हैं -

- शरीर का वजन कम होना
- उल्टी
- संचलन अंगो की गतिविधि को कम करना
- लाल रक्त कोशिकाओं का उत्पादन कम होना
- असामान्य यकृत जिससे एस्पेरेटेट एमिनोट्रांस्फरेज, अल्कलीन फॉस्फेटस, ऐलेनिन एमिनोट्रांस्फरेज और कुल एल्ब्यूमिन का बढ़ा हुआ उत्पादन।
- हेपेटोसाइट्स में वृद्धि
- यह टेराटोजेनिक है; यह जन्मजात दोष पैदा कर सकता है और इसलिए गर्भवती महिलाओं में इससे बचना चाहिए।

तो अब आप बहुत अच्छी तरह से समझ सकते हैं। यह एक बड़ा खेल है। यह एक साधारण फ्लू है। लोग आमतौर पर इस वजह से नहीं मरेंगे। इसलिए उन्होंने मृत्यु दर बढ़ाने की योजना बनाई है। मास्क, सैनिटाइज़र, सामाजिक दुरी, लॉकडाउन, भय का वातावरण, डब्ल्यूएचओ एकजुटता नैदानिक परीक्षण के माध्यम से खतरनाक दवाइयों का प्रयोग इस गैर-गंभीर संक्रमण की मृत्यु दर को बढ़ाने के लिए सभी महत्वपूर्ण उपाय हैं। यह जॉर्जिया गाइड स्टोन्स के

सिद्धांतों के तहत वर्णित अधिकांश मनुष्यों को मारने के लिए एक सुनियोजित ऑपरेशन की तरह लगता है।

दिव्यम (161): - जॉर्जिया गाइड-स्टोन्स क्या हैं?

मैं: ये बड़े-बड़े पत्थर है। इन पत्थरों को अल्बर्ट काउंटी, जॉर्जिया, अमेरिका में लगाया गया है| ये पाँच ग्रेनाइट स्लैब हैं। उनमें से प्रत्येक का वजन लगभग 20 टन है और उनके ऊपर एक कैपस्टोन है। किसी को यह नहीं पता है कि इसे किसने बनवाया और क्यों बनवाया। कोई यह नहीं बता रहा है कि इसे किसने लगवाया और क्यों लगवाया। ये पत्थर अचानक कैसे प्रकट हो गए? कुछ लोगों और प्रशासनिक व्यक्तियों को तो यह पता होना चाहिए था लेकिन सभी मौन है। इन पत्थरों को कब लगवाया गया था से सम्बंधित जानकारी को गुप्त रखा जाता है। कोई भी प्रशासनिक व्यक्ति या प्राधिकरण इस सवाल का कोई जवाब क्यों नहीं दे रहा है कि ये पत्थर कहां से आए, इन पत्थरों को किसने बनाया, जब ये पत्थर यहां रखे गए थे तब वो लोग कहा थे, उनको जानकारी क्यों नहीं हुई?

यहां इन पत्थरों पर, आठ अलग-अलग भाषाओं में कुछ लिखा गया है। इस जगह से जमीन में 6 फीट नीचे एक कैप्सूल रखा गया है। यह यहाँ पर लिखा है 'खुलने तक' लेकिन किसी तारीख का उल्लेख नहीं किया गया है।

यहाँ दस आज्ञाएँ लिखी गई हैं।

1. **प्रकृति के साथ स्थायी संतुलन के लिए मानव की जनसँख्या 50,00,00,000 (50 करोड़) से कम की जाये।**
2. **बुद्धिमानी से मार्गदर्शन से प्रजनन - फिटनेस और विविधता में सुधार।**
3. **एक जीवित भाषा के साथ मानवता को एकजुट करें।**
4. **नियम जुनून विश्वास परंपरा और सभी चीजों नियंत्रण करना।**
5. **निष्पक्ष कानूनों और न्यायलयों के साथ लोगों और राष्ट्रों की रक्षा करें।**

6. सभी देश आंतरिक रूप से शासन करे। विश्व की अदालत में बाहरी विवादों को सुलझाये।
7. क्षुद्र कानूनों और बेकार अधिकारियों से बचें।
8. सामाजिक कर्तव्यों के साथ व्यक्तिगत अधिकारों को संतुलित करना।
9. पुरस्कार सत्य-सौंदर्य-प्रेम-अनंत के साथ सद्भाव की मांग।
10. पृथ्वी पर कैंसर न हो - प्रकृति के लिए जगह छोड़ो।

ज्यादातर लोग सोचते हैं कि यह एक शैतानी आदेश है, जहां वे लगभग 90% से ज्यादा मानव आबादी को मारना चाहते हैं। यह न्यू वर्ल्ड ऑर्डर की अवधारणा है; जहां ये लोग दुनिया की 90% से ज्यादा आबादी को कम करना चाहते हैं।

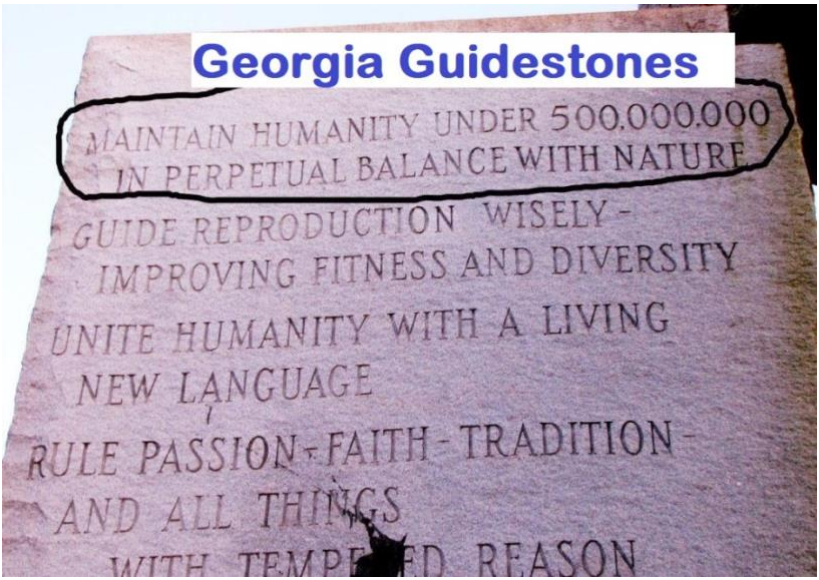

दिव्यम (162): - न्यू वर्ल्ड ऑर्डर क्या है?

मैं: यह न्यू वर्ल्ड ऑर्डर कुछ लोगों का एक समूह है जो एक अधिनायकवादी विश्व सरकार बनाने के लिए गुप्त रूप से काम कर रहे हैं। वे दुनिया पर राज करना चाहते हैं। वे हमें गुलाम बनाना चाहते हैं।

नई विश्व व्यवस्था के लोग एक सत्तावादी विश्व सरकार के माध्यम से दुनिया पर राज करना चाहते हैं जो सभी देशों की संप्रभुता को नष्ट कर देगा और अपना खुद का एजेंडा लागू करेगा। नई विश्व व्यवस्था धीरे-धीरे लागू हो रही है। जॉर्जिया गाइड पत्थर के नियमों को धीरे-धीरे लागू किया जा रहा है। यह माइंड कंट्रोल

(मानसिक-नियंत्रण), मनी कंट्रोल (वित्त-नियंत्रण), बिहेवियर कंट्रोल (व्यवहार-नियंत्रण) और पॉपुलेशन कंट्रोल (जनसंख्या-नियंत्रण) के द्वारा किया जाएगा।

दिव्यम (163): - मानसिक नियंत्रण क्या है?

मैं: मानसिक नियंत्रण अर्थात माइंड कंट्रोल आपके सोचने की प्रक्रिया को नियंत्रित करने की एक विधि है। राष्ट्रीय सहमति बनाने के नाम पर सरकार, निगमों और मुख्य मीडिया को आम लोगों के दिमाग को नियंत्रण करने में शामिल किया जा रहा है।

दरअसल वे डर की संस्कृति पैदा करके ऐसा कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि लोग भयभीत हों ताकि वे लोगो को सामाजिक एवं मानसिक नियंत्रण में ले सकें। जीवन से भयभीत एक व्यक्ति सत्ताधीशो को अपने नागरिक अधिकारों के हनन की स्वयं पेशकश कर सकता है। नई विश्व व्यवस्था को मन के नियंत्रण के उपयोग के माध्यम से लागू किया जाएगा - किसी व्यक्ति की अपनी सोच, व्यवहार, भावनाओं और निर्णयों को नियंत्रित करने में सक्षम रणनीति की एक विस्तृत श्रृंखला है यह सब। उनका अगला कदम वित्त नियंत्रण (मनी कंट्रोल) है।

दिव्यम (164): - वित्त नियंत्रण क्या है?

मैं: आपका सारा पैसा इन लोगों द्वारा नियंत्रित किया जाएगा। आप क्या खरीद सकते हैं और क्या नहीं खरीद सकते हैं, इसका

फैसला नई दुनिया के इन दुष्ट लोगों द्वारा किया जाएगा। इंटरनेट ट्रांजैक्शन, मोबाइल ट्रांजेक्शन, डिजिटल मनी, डिजिटल सिक्के, डिजिटल डॉलर ये सभी तरीके हैं जिनके जरिए ये आपके सारे पैसे को अपने नियंत्रण में ले लेंगे।

वे आपके शरीर में एक डिजिटल चिप स्थापित करने के लिए आपको बाध्य कर देंगे। यह चिप भविष्य के सभी लेनदेन के लिए जरूरी होगा। यह चिप आईडी२०२० (ID2020) न केवल आपके पैसे को नियंत्रित करेगा बल्कि ये आपके कार्यों, आपके व्यवहार, आपकी चाल और आपकी गोपनीयता को भी नियंत्रित करेगा। आपका व्यवहार उनकी इच्छाओ के अनुसार बेहद नियंत्रित होगा।

दिव्यम (165): - वे हमारे व्यवहार को कैसे नियंत्रित करेंगे?

मैं: उनका एक लक्ष्य बिहेवियर कंट्रोल (व्यवहार नियंत्रण) है। मीडिया के द्वारा आपके व्यवहार को नियंत्रित किया जाएगा। वे लगातार कुछ विशिष्ट मामलों को बार-बार फ्लैश करेंगे। आप केवल उस मामले को पढ़ेंगे जो वे आपके द्वारा पढ़ा जाना चाहते थे। मीडिया आपको वो ही दिखायेगा जो वो दिखाना चाहते है। ये सब सामान्य लगेगा।

जो सत्य बताने का प्रयास करेगा, मीडिया उसको स्थान नहीं देगा। मीडिया उसकी छवि ख़राब करने की पूरी कोशिश करेगा। सोसिअल मीडिया से उनके वीडियो एवं अन्य पोस्ट हटा दी जाएगी। उनके

कॉमेंट करने पे रोक लगा दी जाएगी। उनके खाते हटा दिये जाएंगे। उनके चैनल डिलीट कर दिये जायेगे|

मीडिया झूठी खबर फैलाएगा। मीडिया लोगों को मानसिक रूप से व्यवहार नियंत्रण करने के लिए तैयार करेगा। लोगो को फेस मास्क, सामाजिक दुरी, टीकाकरण, मास स्क्रीनिंग, पुलिस अत्याचार, स्वाथ्य आईडी, डिजिटल आईडी, क्वांटम टैटू, ऍप ट्रेसिंग, ऍप ट्रैकिंग आदि के लिए खुद को प्रस्तुत करने के लिए तैयार किया जायेगा।

यह आपने कोरोना मीडिया-डेमिक के वर्तमान परिदृश्य में देखा भी है। इस तरह वे आपके व्यवहार, भावनाओं और निर्णयों को नियंत्रित करेंगे। सभी साधनों का उपयोग करके अंततः वे जनसंख्या नियंत्रण के अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं ताकि आपको तथाकथित श्रेष्ठ जाति का गुलाम बनाया जा सके।

दिव्यम (166): - जनसंख्या नियंत्रण क्या है?

मैं: वे दुनिया की 90% से ज्यादा आबादी को कम करना चाहते हैं। वे विश्व की मानव आबादी को लगभग 50,00,00,000 (50 करोड़) रखना चाहते हैं। यहां तक कि टीकाकरण इस लक्ष्य को प्राप्त करने का एक तरीका हो सकता है।

अब लोग जाग रहे हैं। विशेष रूप से सामूहिक टीकाकरण के खिलाफ जनता ने 2010 के अंत में विरोध किया| अपने बच्चों को

टीका लगाने की अनुमति देने से इनकार करने या मना करने वाले लोगों को 'वैक्सीन-विरोधी' के रूप में जाना जाता है। इनके मना करने का मुख्य कारण यह है कि वे मानव नियंत्रण एजेंडे के खिलाफ हैं।

नई दुनिया के लोग किसी भी तरह से दुनिया की 90% आबादी को खत्म करना चाहते हैं। यह उनका मुख्य और पहला एजेंडा है। इस एजेंडे को एजेंडा-21 के रूप में जाना जाता है।

दिव्यम (167): - एजेंडा-21 क्या है?

मैं: डिपोपुलेशन एजेंडा, एजेंडा-21 का एक हिस्सा है ताकि वे मानव आबादी को कम कर सकें। इसे वे प्रबंधनीय संख्या कहते हैं। प्रबंधनीय संख्याओं का अर्थ है एक नियंत्रणीय संख्या ताकि वे बिना किसी भय के अपनी गतिविधियों को अंजाम दे सकें। एजेंडा-21 लोगों को गुलाम बनाने का अजेंडा है। यहां तक कि संयुक्त-राष्ट्र ने भी एजेंडा-21 को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता बताई है।

दिव्यम (168): - संयुक्त-राष्ट्र ने एजेंडा-21 को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता क्यों बताया है?

मैं: UNCED द्वारा वर्ष 1992 में एक सम्मेलन आयोजित किया गया था। UNCED का अर्थ है पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCED - United Nations Conference on Environment and Development)। स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय

और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समझौतों के कार्यान्वयन की निगरानी और रिपोर्ट करने के लिए UNCED के प्रभावी आदेश सुनिश्चित करने के लिए, सतत विकास आयोग (CSD) दिसंबर 1992 में बनाया गया था।

एजेंडा-21 संयुक्त राष्ट्र प्रणाली, सरकारों और प्रमुख समूहों के संगठनों द्वारा पर्यावरण पर मानव प्रभाव के संदर्भ में वैश्विक, राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर कार्रवाई की एक व्यापक योजना है।

लेकिन उनका छिपा एजेंडा है। संयुक्त राष्ट्र एक समग्र विश्व सरकार बनाना चाहता है| एजेंडा-21 मानव आबादी को लगभग 8 बिलियन से घटाकर लगभग 500 मिलियन कर देगा। इसका मतलब यह है कि संयुक्त राष्ट्र वैश्विक जनसंख्या के 90% से अधिक को मारने की योजना बना रहा है। सौभाग्य से हमें इवेंट-201 में इसके बारे में पता चल गया।

दिव्यम (169): - इवेंट-201 (Event-201) क्या है?

मैं: इवेंट-201, न्यूयॉर्क में 18 अक्टूबर, 2019 को हुआ। यहां उन्होंने 2020 में एक गंभीर महामारी की भविष्यवाणी की और इस पर चर्चा की कि इसे कैसे प्रबंधित किया जाए। हां, उन्होंने 2020 में एक महामारी की भविष्यवाणी की थी। हां, उन्होंने कोरोना महामारी की भविष्यवाणी की थी। हां, उन्होंने कोरोना

महामारी के एक नए तनाव की भविष्यवाणी की। हां, उन्होंने बताया कि वर्ष 2019-2020-2021 में एक कोरोना महामारी आएगी।

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम और बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन की साझेदारी में जॉन्स हॉपकिन्स सेंटर फॉर हेल्थ सिक्योरिटी ने इस कार्यक्रम की मेजबानी की। उन्होंने इसे उच्चस्तरीय महामारी अभ्यास कहा। उन्होंने बताया कि बड़े पैमाने पर आर्थिक और सामाजिक परिणामों को कम करने के लिए एक गंभीर महामारी की प्रतिक्रिया के दौरान सार्वजनिक / निजी भागीदारी वाले क्षेत्रों में समन्वय की आवश्यकता होती है।

यहां आप आसानी से समझ सकते हैं कि यह महामारी वास्तव में पूर्व नियोजित थी। तैयारियों के नाम पर, उन्होंने वास्तव में पूरी तरह से महामारी की अफवाह फ़ैलाने की योजना बनाई। वास्तव में यह जनता के पैसो की लूट की योजना थी| बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन यहां एक प्रमुख साजिश कर्ता तत्व लगता है।

दिव्यम (170): - तो क्या हम बिल गेट्स को एक मुख्य अपराधी के रूप में संदेह कर सकते हैं?

मैं: हाँ, हमें संदेह होना चाहिए। हमें जांच करनी चाहिए। बिल गेट्स ने एक बार कहा था। 'अगला विनाश परमाणु बम से नहीं होगा; बल्कि यह एक वायरस से होगा।' जब बिल ने यह कहा तो

वह कोरोना वायरस की एक छवि की ओर इशारा कर रहा था। बिल गेट्स 2015 से बहुत पहले से कह रहा है कि एक महामारी आने वाली है, एक महामारी आने वाली है, एक महामारी आने वाली है। दुनिया को इसके लिए तैयार करना चाहिए, दुनिया को इसके लिए तैयार करना चाहिए, दुनिया को इसके लिए तैयार करना चाहिए।

उन्होंने अगले विनाश की ओर इशारा करते हुए कहा कि ऐसा नहीं है (परमाणु विस्फोट की एक छवि); वास्तव में यह इस तरह दिखता है (कोरोना वायरस की एक तस्वीर)। तो एक व्यक्ति एक महामारी की भविष्यवाणी कैसे कर सकता है? तो एक व्यक्ति एक विशेष वायरस या बैक्टीरिया के कारण एक महामारी की भविष्यवाणी कैसे कर सकता है? सबसे बुद्धिमान चिकित्सक भी इसकी भविष्यवाणी नहीं कर सकता। सबसे बुद्धिमान वैज्ञानिक भी इसकी भविष्यवाणी नहीं कर सकते। एक भी राजनेता महामारी की भविष्यवाणी नहीं कर सकता। तो बिल गेट्स ने इसकी भविष्यवाणी कैसे की? तो यह स्पष्ट प्रमाण है कि यह महामारी एक नकली महामारी है।

वे विश्व अर्थव्यवस्था को पंगु बनाना चाहते हैं, वे विश्व शांति को नष्ट करना चाहते हैं, वे दुनिया की आबादी को कम करना चाहते हैं और वे हमें गुलाम बनाना चाहते हैं। यह नई विश्व व्यवस्था का

उनका एजेंडा है। वे विभिन्न उपकरणों द्वारा हमें गुलाम बना देंगे, आईडी2020 (ID2020) उनमें से एक है।

दिव्यम (171): - आईडी-2020 (ID-2020) क्या है?

मैं: आईडी-2020 (ID-2020) एक गैर-सरकारी संगठन है जो दुनिया भर के अरबों लोगों के लिए डिजिटल आईडी की वकालत करता है। यह सभी को एक डिजिटल आईडी देने का कार्यक्रम है। लेकिन फिर से उनका यहां एक छिपा हुआ एजेंडा है। कुछ लोगों का कहना है कि बिल गेट्स ने अनिवार्य कोवीड-19 टीकाकरण और रोगी के शरीर में माइक्रोचिप्स के आरोपण की योजना बनाई है। यह कहा जाता है, वह आपको टीका लगाने में सक्षम माइक्रोचिप के साथ वैक्सीन को पुश करने के लिए कोवीड-19 महामारी का उपयोग कर रहा है।

दिव्यम (172): - मानव माइक्रोचिप प्रत्यारोपण क्या हैं?

मैं: एक मानव माइक्रोचिप प्रत्यारोपण आमतौर पर एक चिप होता है जिसे मानव त्वचा या उप-त्वचीय क्षेत्र में प्रत्यारोपित किया जाता है। यह एक एकीकृत पहचान परिपथ उपकरण या RFID (Radio-Frequency ID) ट्रांसपोंडर है जो सिलिकेट ग्लास में संलग्न होता है और एक इंसान के शरीर में प्रत्यारोपित किया जाता है। इसे रेडियो फ्रीक्वेंसी आईडी भी कहा जाता है।

इन उपकरणों में एक विशिष्ट आईडी (ID) नंबर होता है और वह आईडी आपकी सभी व्यक्तिगत जानकारी से जुड़ा होता है और ये व्यक्तिगत जानकारी बाहरी डेटाबेस से जुड़ा होता है। आपकी सभी जानकारी जैसे व्यक्तिगत पहचान, पुलिस रिकॉर्ड, कानून प्रवर्तन, चिकित्सा इतिहास, यात्रा इतिहास, दवाएं, एलर्जी, बैंकिंग विवरण, खरीद इतिहास, फिल्म इतिहास, मित्र इतिहास, रिश्तेदारों का इतिहास, संपर्क जानकारी आदि यहां दर्ज हैं। उन्हें मालिकों द्वारा देखा जा सकता है। आपका सारा लेन-देन केवल उस आईडी के माध्यम से होगा। यह लोगों को गुलाम बनाने का एक नया तरीका है। यहां तक कि एक फिल्म-नाटक ने 2018 में इस कोरोना महामारी की भविष्यवाणी की।

दिव्यम (173): - कोरोना वायरस के प्रकोप की भविष्यवाणी किस फिल्म-नाटक से हुई?

मैं: नेटिज़न्स के अनुसार, नेटफ्लिक्स पर 2018 में एक टीवी शो में कोरोनो वायरस महामारी की भविष्यवाणी की गई थी। 2018 में जारी कोरियाई श्रृंखला 'माई सीक्रेट टेरियस' की 10 वीं कड़ी में कोरोना वायरस बीमारी का उल्लेख है जो हाल के दिनों में हो रहा है। कोवीड-19 का प्रकोप बिलकुल ऐसा ही है। यदि आप इस फिल्म 'माई सीक्रेट टेरियस' की क्लिप देखेंगे तो आप कई बार कोरोनावायरस, कोरोनावायरस, कोरोनावायरस को सुनेंगे। मैंने खुद कुछ क्लिप देखी हैं।

तो यह कई उद्देश्यों के साथ एक पूर्व नियोजित मिथ्याकृत महामारी का एक स्पष्ट मामला है। कुछ लोगों का कहना है कि रॉथ्सचाइल्ड और रॉकफेलर जैसे बड़े परिवार इस खेल में शामिल हो सकते हैं। इसकी जांच आवश्यक है।

दिव्यम (174): - यह रोथस्चाइल्ड कौन है?

मैं: रोथ्सचाइल्ड परिवार एक अमीर यहूदी परिवार है जो मूल रूप से फ्रैंकफर्ट, जर्मनी का है। वो कई तरह के व्यवसाय करता हैं। रोथ्सचाइल्ड व्यवसायों में बैंकिंग, वित्त, खनन, ऊर्जा, रियल एस्टेट और वाइन मेकिंग शामिल हैं।

कहा जाता है कि वे मूल रूप से सुनार (सुनार) थे। लोग उन्हें सुरक्षा कारणों से अपना सोना देते थे। रोथस्चिल्ड उन्हें एक रसीद देते थे। बाद में इन प्राप्तियों को बाजार में परिचालित किया गया और सोना वास्तव में रोथ्सचाइल्ड परिवार से कभी नहीं निकला। बाद में उन्होंने गणना की और पाया कि वास्तव में केवल 10% लोग हर साल अपने सोने को वापस मांगते हैं। इसलिए उसने अपने पैसे के रूप में दूसरों को बाकी बचा हुआ 90% सोना उधार देना शुरू कर दिया। और यह भी एक रसीद के रूप में भी था। तो इस तरह उन्होंने दूसरों की संपत्ति को अपनी संपत्ति के रूप में उपयोग किया और अपनी सम्पति को कई गुणा कर दिया। लेकिन वास्तविक सोना उनकी गिरफ्त में ही रहा। बाद में रोथ्सचाइल्ड

परिवार ने पांच अलग-अलग देशों में समान तरीके से अपना कारोबार शुरू किया।

दिव्यम (175): - वर्तमान मिथ्या महामारी में रॉथ्सचाइल्ड परिवार की कोई भूमिका है?

मैं: मैं बिल्कुल नहीं जानता। लेकिन कुछ लोग चर्चा कर रहे हैं कि रॉथ्सचाइल्ड जैसा बड़ा परिवार भी इस खेल में हो सकता है। कुछ लोगों का दावा है कि यह परिवार दुनिया के सोने, धन और वित्तीय संस्थानों को नियंत्रित करता है या सरकारों के बीच युद्ध को प्रोत्साहित या हतोत्साहित कर सरकारों को नियंत्रित करता है।

यहां तक कि आम लोगों में यह समझ है कि यह रॉथ्सचाइल्ड परिवार है जो हर कुछ वर्षों के बाद आर्थिक पतन चाहता हैं। यह वे इसलिए चाहते हैं ताकि महंगाई बढ़ सके और इस महंगाई से उनके सोने के पैसे का मूल्य तुरंत बढ़ जाए। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि रॉकफेलर परिवार की भी एक छिपी हुई भूमिका हो सकती है।

दिव्यम (176): - रॉकफेलर परिवार कौन है?

मैं: यह अमेरिकी औद्योगिक, राजनीतिक और बैंकिंग परिवार है जो दुनिया के कुछ सबसे धनी परिवारों में से एक है। रॉकफेलर परिवार का अमेरिकी राजनीति में उच्च प्रभाव है। रॉकफेलर

फाउंडेशन ने भविष्य के 'लॉक स्टेप' के लिए 2010 में एक दस्तावेज जारी किया। यह दस्तावेज काफी विवादास्पद है।

दिव्यम (177): - रॉकफेलर दस्तावेज़ क्या है?

मैं: 2010 में रॉकफेलर फाउंडेशन ने एक दस्तावेज जारी किया और उन्होंने भविष्य की महामारी जैसे मुद्दों के लिए 'लॉक-स्टेप' का सुझाव दिया। इस 'लॉक-स्टेप' भाग ने, वैश्विक स्वास्थ्य समस्या की भविष्यवाणी की। यह एक महामारी से जुड़े परिदृश्य की भविष्यवाणी करता है। रॉकफेलर फाउंडेशन का 2010 का दस्तावेज़ कहता है कि वैश्विक महामारी को हल करने का एकमात्र तरीका राज्य द्वारा दुनिया भर में मॉडल के रूप में 'लॉकस्टेप' लेना है। उसने 2010 में ही भविष्य के लॉक स्टेप अर्थात लॉक डाउन की घोषणा कैसे कर दी?

अब, हम 2020 में हैं; हम खुद को उसी सटीक स्थिति में पाते हैं। क्या यह सिर्फ एक संयोग हैं? उनके दस्तावेज़ के अनुसार सब कुछ हो रहा है। लॉक-स्टेप, लॉक-डाउन के समान ही तो है।

21 अप्रैल को रॉकफेलर फाउंडेशन ने हमारे कार्यस्थलों और हमारे समुदायों को फिर से खोलने के लिए 'राष्ट्रीय कोवीड-19 परीक्षण कार्य योजना व्यावहारिक कदम' नामक एक और दस्तावेज जारी किया। अब वही हो रहा है। अब वे रॉकफेलर फाउंडेशन के निर्देश के अनुसार धीरे-धीरे हमारे कार्यस्थलों को खोल रहे हैं।

कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि कुछ बड़े-बड़े बैंकिंग दिग्गज चाहते हैं कि हर कुछ वर्षों के बाद बैंक का पतन हो जाए। वे वास्तव में एक बैंक के पतन पर लाभ प्राप्त करते हैं।

दिव्यम (178): - बैंकों का पतन कैसे होता है?

मैं: बैंक की विफलता का मतलब है जब बैंक की परिसंपत्तियों का बाजार मूल्य बैंक की देनदारियों के बाजार मूल्य से कम हो जाता है। देनदार, लेनदारों और जमाकर्ताओं के लिए बैंक का दायित्व हैं।

बैंकिंग प्रणाली एक जटिल प्रणाली है। उनके पास जितना है उससे ज्यादा वे उधार दे देते हैं। हां, जितना उनके पास होता हैं उससे ज्यादा उधार दे देते हैं। मान लीजिए कि बैंक 'A' में 5,00,000 रुपए जमा हैं। अब सामान्य विचार यह है कि बैंक इसका लगभग 90% ऋण देगा। लेकिन वास्तविकता अलग है। बैंक इस पैसे का कई गुणा उधार देता है। बैंक 'A' आपको उनकी पूंजी का 10 गुना भी उधार दे सकता है यानी 50,00,000 रुपये भी।

यह संभव है क्योंकि बैंक वास्तव में आपको सारी राशि नकद में नहीं देते हैं। वे सिर्फ आपकी पासबुक में या आपके खाते में एक नंबर देते हैं। राशि का मुख्य भाग बैंकिंग प्रणाली के पास ही रहता है। यदि आप उस उधार ली गई राशि से कुछ बड़ा खरीदते हैं तो आप आमतौर पर एक चेक देते हैं। तो फिर से नकदी उसी बैंक या

अन्य बैंक में रहती है लेकिन निश्चित रूप से बैंकिंग प्रणाली में ही रहती है।

तो तब क्या होगा यदि बैंक से 'उधार' लिए गए सभी व्यक्ति अपनी नकदी लेना चाहे? तो तब क्या होगा यदि बैंक में जमा कराने वाले सभी व्यक्ति अपना कैश निकालना चाहे? एसी परिस्थिति में, बैंक एक ही दिन में गिर जाएंगे। यह सभी बैंकों के लिए है। लेकिन यह विफलता जानबूझकर कुछ लोगों द्वारा की जाती है जो चाहते थे कि बैंक ढह जाए। कुछ लोग जान-बूझकर योजना बद्ध तरीको से बैंकों को ध्वस्त करना चाहता है

दिव्यम (179): - कौन बैंकों को ध्वस्त करना चाहता है?

मैं: बैंकिंग प्रणाली ने हमारे भ्रष्ट राजनेताओं को मजबूर करके उनके पक्ष में कई कानून बनावा दिये हैं। यदि बैंक दिवालिया हो जाते हैं, तो आप अपना पैसा खो देते हैं। भारतीय रिज़र्व बैंक के नियमो द्वारा, बचत बैंक खाते के लिए बीमित राशि रु 20,000 और चालू खाता के लिए रु 1,00,000 है। इसलिए अगर आपके करंट अकाउंट में 1,00,00,000 रुपये हैं तो आपको केवल 1,00,000 रुपये वापस मिलेंगे।

यदि कोई व्यक्ति एक ही बैंक की एक या अधिक शाखाओं में एक से अधिक डिपॉजिट खोलता है तो ये सभी खाते एक ही खाते के रूप में माने जाएंगे। इसलिए इन सभी खातों में शेष राशि एकत्र

की जाती है और अधिकतम बीमा कवर केवल 1,00,000 रुपये तक उपलब्ध है।

इसलिए यदि कोई बैंक ढह जाता है तो जमाकर्ताओं का पैसा खो जाएगा, बैंको द्वारा हड़प लिया जायेगा। आप अपना अधिकांश पैसा खो देंगे। तो किसी को तो आपका पैसा मिलेगा। तो सोचिये इस दिवालियेपन का फायदा किसे होगा। जाहिर है, नुकसान आपका है लेकिन किसी को फायदा होना चाहिए। बड़े बैंकिंग दिग्गजों को वास्तव में लाभ होता हैं और उनका पैसा बढ़ता है।

बैंकिंग प्रणाली के ढहने और देश की अर्थव्यवस्था के विनाश के कारण अंततः मुद्रास्फीति होगी। महंगाई से वे हमें और लूटेंगे।

दिव्यम (180): - महंगाई से हम कैसे लुटते है?

मैं: महंगाई अर्थात मुद्रास्फीति मूल रूप से लूट है। महंगाई उस समय की सरकार द्वारा की गई लूट है। आपको इसे समझने की जरूरत है। मान लीजिए कि आपके घर में या आपके बैंक में 1,00,000 रुपये हैं। और मुद्रास्फीति 20% तक बढ़ जाती है। इसका मतलब है कि पहले आप 1,00,000 रुपये से वस्तु के 1000 यूनिट खरीद सकते थे लेकिन अब आप केवल 800 यूनिट ही खरीद पाएंगे। तो अब आपके पैसे का मूल्य कम हो गया है। दरअसल अब आपके पास केवल 80,000 रुपये हैं। लेकिन जब आप अपने पैसे की जांच करेंगे और गिनती करेंगे तो 1,00,000

रुपए पाएंगे। आपके पास 1,00,000 रुपये के नोट है। आपका बैंक पासबुक में 1,00,000 रुपये भी दिखाएगा लेकिन वास्तव में यह अब केवल 80,000 रुपये है। महंगाई से सरकार ने आपके बचत के 20,000 रुपये लूट लिए हैं।

यह एक सुपर गेम है| जनता को पता भी नहीं चलता है| एवं सरकारे उनको लूट लेती है| यही जनता की गरीबी का वास्तविक कारण भी है|

दिव्यम (181): - तो इस सुपर गेम के पीछे कौन है?

मैं: इस खेल के पीछे सुपर एलीट्स लग रहे हैं। सुपर एलीट ने अपनी योजना में कई व्यक्तियों और कई कंपनियों को शामिल किया है। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि बिल गेट्स, रॉथ्सचाइल्ड, रॉकफेलर, नील फर्ग्युसन, टेडरोस अधानोम, जो बिडेन, डॉ. फौसी भी इस गेम प्लान में दूसरों के साथ शामिल हो सकते हैं।

दिव्यम (182): - डॉ. फौसी कौन है?

मैं: डॉ. फौसी (Dr.Fauci) अमेरिका के एलर्जी और संक्रामक रोग के राष्ट्रीय संस्थान (NIAID - National Institute of Allergy and Infectious Disease) के निदेशक हैं। वह अमेरिका में सख्त लॉकडाउन प्रोटोकॉल चाहता है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प लॉकडाउन लागू नहीं करना चाहते हैं। जैसा कि आप अब जानते

हैं, कोरोना फ्लू या सामान्य जुकाम जैसी एक साधारण संक्रामक बीमारी है इसलिए आप समझ सकते हैं कि यह आदमी सख्त प्रोटोकॉल क्यों चाहता है। कोई खेल! या निहित स्वार्थ! भगवान जाने। लेकिन कुछ तो है।

यह भी सच है कि अमेरिका ने भारी लाभ कमाया है। जैसा कि आप समझ सकते हैं कि भारतीय रुपये की तुलना में अमेरिकी डॉलर में काफी वृद्धि हुई है

दिव्यम (183): - अमेरिकी डॉलर में सुधार क्यों हुआ?

मैं: अमेरिकी डॉलर ने पिछले कुछ महीनों में 10 रुपए की छलांग लगाई है। भारत के द्वारा लॉक डाउन लगाने के कुछ ही सप्ताहों में अमरीका का एक डॉलर 10 रूपया महंगा हो गया| यह भारतीय अर्थव्यवस्था की तबाही का संकेत है। भारत ने स्वयं को बर्बाद कर दिया है और दूसरी तरफ अमेरिकी अर्थव्यवस्था लॉकडाउन के खिलाफ अपने राष्ट्रपति के निरंतर प्रयासों के कारण अच्छी तरह से कायम है।

अब यहाँ आपको एक महत्वपूर्ण बात पर ध्यान देना चाहिए कि एक डॉलर के मुकाबले इस 10 रुपये की बढ़ोतरी में 10 साल का समय लगता है। इसलिए कुछ महीनों के भीतर अमेरिकी ने बड़ी मात्रा में लाभ कमाया है जो कम से कम 10 वर्षों के बराबर है।

इसलिए अमेरिका ने भारत से इस नकली महामारी से बड़ा लाभ कमाया है।

इस नकली महामारी को असली बताने के लिए कई तरह से धोखा दिया गया है| इसके इलाज में मृत्यु कारक दवाइया दी गई| मास्क पहना के आपकी इम्युनिटी कम की गई| सोसिअल डिस्टन्सिंग के नाम पे आपको एक दूसरे से अलग कर दिया गया|

दिव्यम (184): - क्या रिकवरी दर एक धोखा है?

मैं: वे हमें रिकवरी दर के नाम पर मूर्ख बनाते हैं? पहले, वसूली दर की गणना शुरुआती 14 दिनों के बाद की गई थी। तो यह कम था। निश्चित रूप से दिनों की प्रगति के रूप में आप रिकवरी दर की वृद्धि की प्रवृत्ति देखेंगे। चुकि रिकवरी दर की गिनती आप पहले 14 दिन बाद से प्रारम्भ कर रहे है, इसलिए ये आपको बढ़ी हुई प्रतीत होती है परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है, रिकवरी दर शुरू से ही एक जैसी है। इस तरह उन्होंने यह कहकर हमें मूर्ख बना दिया कि मुखौटा, सामाजिक भेद और तालाबंदी के कारण रिकवरी दर में सुधार हो रहा है।

अब वे आंशिक रूप से अपना लक्ष्य प्राप्त कर चुके हैं। अब वे कुछ और कठोर कदम उठाएंगे जैसे अनिवार्य टीकाकरण, अनिवार्य टीका प्रमाणीकरण इत्यादि।

दिव्यम (185): - क्या टीका प्रमाणीकरण अनिवार्य किया जाएगा?

मैं: हाँ, अधिक संभावना इसी की है। हाल ही में मेरे दोस्त के बेटे को एसएससी से एक साक्षात्कार कॉल आया है। वे एक कोरोना नकारात्मक प्रमाण पत्र चाहते थे। बहुत जल्द वे बैंकिंग के लिए, ट्रेन में यात्रा के लिए, हवाई यात्रा में, स्कूल में दाखिले के लिए, कॉलेज में दाखिले के लिए, सभी नौकरी के लिए, इंटरव्यू के लिए, बीपीएल लाभ के लिए, शादी के लिए, अस्पताल की प्रक्रियाओं के लिए आदि के लिए कोरोना नेगेटिव सर्टिफिकेट की मांग करेंगे।

वो यह कह सकते है की दूसर लहर आ गई है| मीडिया के माध्यम से, देश के नेताओ के माध्यम से आपको सामने एक झूठ बार-बार उछाला जायेगा की केस बढ़ गए है| मृत्यु दर बढ़ गई है| कोरोना पहले के मुकाबले 2 गुना या 3 गुना या 4 गुना ज्यादा खतरनाक हो गया है| आपको टिके के लिए प्रेरित किय जायेगा| यदि आपके पास टीकाकरण प्रमाणपत्र नहीं है तो आपको कई तरीको की सुविधाओं से वंचित कर दिया जायेगा|

ये दुबारा लॉक डाउन की घोषणा कर सकते है| जो टिका लगवायेगा उसे ही बाहर जाकर काम करने की अनुमति होगी| जिसके पास टीका प्रमाणपत्र होगा वो ही फ्लाइट में जा पायेगा| जिसके पास टीका प्रमाणपत्र होगा वो ही ट्रैन, बस में बैठ पायेगा| जिसके पास टीका प्रमाणपत्र होगा वो ही बच्चा विद्यालय में जा पायेगा| जिसके पास टीका प्रमाणपत्र होगा वो ही नौकरी पे जा सकेगा| जिसके पास टीका प्रमाणपत्र होगा वो ही ट्रैन, बस में बैठ

पायेगा| जिसके पास टीका प्रमाणपत्र होगा वो ही प्रॉपर्टी का लेन-देन कर पायेगा| जिसके पास टीका प्रमाणपत्र होगा वो ही कोर्ट जा पायेगा| जिसके पास टीका प्रमाणपत्र होगा वो किसान ही अपना माल बेच पायेगा| जिसके पास टीका प्रमाणपत्र होगा वो व्यापारी ही अपना माल बेच पायेगा| जिसके पास टीका प्रमाणपत्र होगा वो वयक्ति ही बैंक जा पायेगा| जिसके पास टीका प्रमाणपत्र होगा वो व्यक्ति ही नौकरी के लिए आवेदन कर पायेगा| जिसके पास टीका प्रमाणपत्र होगा वो व्यक्ति ही कार, ट्रक या दुपहिया चला पायेगा| जिसके पास टीका प्रमाणपत्र होगा वो ही पेट्रोल, डीज़ल खरीद पायेगा| इस प्रकार से आपको टीकाकरण के लिए मजबूर किया जायेगा|

वे टीकाकरण प्रमाणपत्र की मांग हर जगह करेंगे। यह सब आम लोगों को लूटने के लिए है। आम लोगों को विभिन्न तरीकों से लूटा जाता है। वे गैर-जरूरी किट, मशीनें, दवाएं, टीके बेच रहे हैं। हमें बड़े पैमाने पर सामूहिक प्रदर्शन की जरूरत है। यह हमें सभी देशों में करना चाहिए। हमें एक संपूर्ण क्रांति की जरूरत है।

दिव्यम (186): - यह क्रांति कैसे आएगी?

मैं: मानव जाति को बचाने के लिए इस क्रांति को होना ही चाहिए। यह क्रांति आनी ही चाहिये और यह क्रांति आएगी। और इस क्रांति को आना ही है। हमें इस क्रांति को लाना है| हमें इस क्रांति को

लाना ही होगा| और यह क्रांति जल्द ही आ रही है। यह क्रांति समय की जरूरत है। हमें इस क्रांति को लाना होगा। इस क्रांति को लाने के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। इस क्रांति को सफल बनाने के लिए सभी को योगदान देना होगा। यह मानवता को बचाने के लिए, आने वाली पीढ़ीओ को गुलामी से बचाने के लिए एक महायज्ञ है | हम सबको जिम्मेदारी निभाते हुए इसमें आहुति देनी ही होगी|

मुझे उम्मीद नहीं है कि इस क्रांति को अफ्रीका से शुरू किया जाएगा क्योंकि उन्हें सबसे कम नुकसान हुआ है। मुझे इसकी उम्मीद नहीं है कि इसे चीन से शुरू किया जाएगा क्योंकि चीनी लोगों के पास सामान्य नागरिक अधिकार नहीं हैं। मुझे उम्मीद नहीं है कि यह यूरोप से शुरू होगा क्योंकि यूरोप बहुत अधिक विभाजित है। मैं भारत से या अमेरिका से इसकी उम्मीद करता हूं।

अधिकांश भारतीय अब समझ गए हैं कि कोरोना एक साधारण फ्लू है और उन्हें मूर्ख बनाया गया था। जल्द ही आप भारत में एक बड़ी क्रांति देखेंगे।

मैं अमेरिका से इसकी अपेक्षा करता हूं। ये अधिक नागरिक अधिकारों वाले लोग हैं। अमेरिकी लोग ऐसे लोग हैं जो पूरे गेम प्लान को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। यह मत सोचो कि

अमेरिका एक विकसित राष्ट्र है इसलिए अमेरिका की आम आबादी पीड़ित नहीं है। अमेरिका के आम व्यक्ति को भी काफी नुकसान हुआ है।

मुझे अमेरिकी माताओं, बहनों और बेटीयो पर विशेष विश्वास है; चूंकि वे दो तरफ से पीड़ित हैं। वे अपने नए-नवेले और छोटे बच्चों को टीकाकरण की अन-जरूरी चुभन की समस्या का सामना कर रहे हैं और दूसरा उन्हें नौकरी से हाथ धोना पड़ रहा है।

अमेरिकी महिलाएं बहुत बोल्ड महिलाएं हैं। वे बहुत बहादुर हैं। वे अपनी स्वतंत्रता से प्यार करते हैं। बहुत जल्द अमेरिकी महिलाएं सभी शहरों में एक प्रदर्शन और देशव्यापी हड़ताल के लिए सड़कों पर आएंगी। दुनिया भर के पुरुष इसका समर्थन करेंगे। हम मिलकर इस दुनिया को सद्भाव, गरिमा और सच्चाई के साथ जीने के लिए एक बेहतर जगह बनाएंगे। हम ट्रू वर्ल्ड ऑर्डर स्थापित करेंगे।

दिव्यम (187): - ट्रू वर्ल्ड ऑर्डर क्या है?

मैं: ट्रू वर्ल्ड ऑर्डर शैतान के न्यू वर्ल्ड ऑर्डर के खिलाफ है। नई विश्व व्यवस्था एक राक्षसी सोच है जो छल और कपट के सिद्धांत पर आधारित है। ट्रू वर्ल्ड ऑर्डर में सत्य का एक सिद्धांत होगा जैसा कि इसके मूल शब्दावली में है। सच्ची विश्व व्यवस्था सभी जाति, पंथ और धर्म के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध के साथ

रहेगी। इतना ही नहीं, ट्रू वर्ल्ड ऑर्डर जानवरों के साथ, पक्षिओ के साथ, जलीय जीव-जन्तुओ के साथ भी स्नेह एवं प्यार का एक बंधन स्थापित करेगा। ट्रू वर्ल्ड ऑर्डर प्रकृति और पौधों के साम्राज्य के साथ मानव आबादी को समायोजित करने के लिए निष्ठावान रहेगा ।

दिव्यम (188): - आप उन लोगों से क्या उम्मीद करते हैं जो आपके दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं?

मैं: मुझे लगता है कि अब वे शायद पूरे खेल को समझ गए हैं। अधिकांश आम जनता अब सारा खेल समझ गई है। यदि अभी भी नहीं तो उन्हें और अधिक लेखों की खोज करनी चाहिए। मैं पाठकों से अनुरोध करता हूं कि वे इस मीडिया-डेमिक के बारे में सच्चा ज्ञान फैलाएं। इसके खिलाफ मजबूत आवाज उठाएं। विश्व को खोला जाना चाहिए ताकि लोग अपना काम शुरू कर सकें। इस अवधि के दौरान खोए गए धन, व्यवसाय और नौकरियों की भरपाई सरकार द्वारा की जानी चाहिए।

मीडिया ने एक दानव की तरह काम किया है, इसलिए दुनिया भर में मीडिया घरानों के खिलाफ प्रदर्शन होना चाहिए। हमें मीडिया दिग्गजों, दवा कंपनियों, डॉक्टरों और सरकार द्वारा किए गए अत्याचारों के खिलाफ विश्वव्यापी क्रांति की जरूरत है।

अब हम इस बातचीत को यहीं समाप्त करेंगे। मैं कोरोना अत्याचारों के खिलाफ विद्रोह की उम्मीद करता हूं। मैं कोरोना क्रूरता के खिलाफ विद्रोह की उम्मीद करता हूं। मुझे उम्मीद है कि मुखौटा, सामाजिक दूरी, कॉलर ट्यून, सैनिटाइज़र, अनलॉक और लॉक-डाउन के खिलाफ क्रांति होगी। मुझे एक बेहतर दुनिया की उम्मीद है। मुझे आशा है कि सत्य की जीत होनी चाहिए। मैं एक सच्चे विश्व व्यवस्था की उम्मीद करता हूं। मुझे उम्मीद है कि जो भी दोषी होंगे उन्हें सजा दी जाएगी। मुझे एक बड़ी क्रांति की उम्मीद है।

कोरोना महामारी महा-षड़यंत्र

:

मानवता के इतिहास का सबसे बड़ा कांड

लेखक परिचय

डॉ. तरुण कोठारी इस पुस्तक के लेखक हैं। इनके पास एमबीबीएस और एमडी की योग्यता है। ये रेडियोलॉजिस्ट है। इन्होने पिछले बीस वर्षों से एक चिकित्सक के रूप में काम किया है। इसके अलावा ये चिकित्सा-निदान क्षेत्र में विशेषज्ञ हैं। इन्होनें कई एमबीबीएस और चिकित्सा स्नातकोत्तर छात्रों को रेडियो-निदान के उन्नत स्तर की शिक्षा दी है।

इन्हे शुरू से ही लोगों को एक ईमानदार जीवन जीने के लिए प्रेरित करना पसंद हैं। ये शारीरिक स्वास्थ्य और आध्यात्मिक स्थिति के उत्थान के लिए कई प्रकार के योग, प्राणायाम और क्रियाओं का अभ्यास करते है। इन्होने यह पुस्तक इसलिए लिखी ताकि इस नकली कोरोना महामारी के बारे में आम लोगों को शिक्षित किया जा सके।

डॉ तरुण कोठारी
MBBS MD